ईसा की वंशावली में विरुद्ध अर्थात् मत्ती कुछ लिखता है और लूका कुछ लिखता है ॥

मत्ती पर्व १ में देखो		विरुद्ध लूका पर्व ३ आयत २९ से ३२ तक		
१ दाऊद	१५ यिकनिय	१ दाऊद	१६ एर	३० माट
२ सुलेमान	१६ शियल्तियल	२ नाथन	१७ इल्मोदद	३१ नगि
३ रिहबियान	१७ जिरुबाबिल	३ मतत्	१८ कोसम	३२ इसलि
४ अबिय	१८ आबिहूद	४ मेनने	१९ अद्दी	३३ नहुम
५ आसा	१९ इलियाकीम	५ मिलेया	२० मल्कि	३४ आमास
६ यिहोशाफट	२० असोर	६ इलियाकीम	२१ नेरी	३५ मतथिय
७ यिहोराम	२१ सादोक	७ योनन	२२ शल्तीयल	३६ युसफ
८ उजिय	२२ आखीम	८ युसुफ	२३ सिरुबाबल	३७ याम
९ योथम	२३ इलीहूद	९ यिहुदा	२४ रीसा	३८ मल्कि
१० आहज	२४ इलियाजर	१० शिमियोन	२५ योहाना	३९ लेवी
११ हिजकिय	२५ मतन	११ लेवि	२६ यहुदा	४० मतत
१२ मनसि	२६ याकूब	१२ मतत्	२७ युसफ	४१ एलि
१३ अमोन	२७ युसफ जो मरीयम का स्वामी था	१३ योरीम	२८ शिमिथि	४२ युसफ
१४ योशिय	२८ यीशु ख्रीष्ट	१४ इलीयेजर	२९ मतथिय	४३ यीशुख्रीष्ट
		१५ योसि		

ओ३म्

ईसाईमतपरीक्षा ।

प्रथमे नाम जु ब्रह्म को लियो मैं मन चितलाय।
ईसाइयों के धर्म का टेऊं मैं हाल सुनाय ॥

(१) मसीह की सर्वज्ञता और ईश्वरता में संदेह—इञ्जील मार्क पर्व १३ आयत ३२—"बिना पिता के कोई मनुष्य वा स्वर्ग का दूत वा पुत्र उन दिनों और उस घड़ी की बात नहीं जान सकेगा" फिर मसीह कहता है कि प्रलय के दिन को मैं नहीं जानता हूं—इञ्जील मत्ति पर्व २४ आयत ३६ 'मेरे पिता के बिना उस दिन और उस घड़ी को स्वर्ग का दूत भी कोई बताय नहीं सक्ता"—फिर मसीह का समय अंजीर खाने को पेड़ के [illegible] जाना—मार्क पर्व ११ आयत १३ मती पर्व २१ आयत १८ 'दूर से एक सपत्र अंजीर वृक्ष देख के यदि उस में कुछ फल मिले इस आशा से उस वृक्ष के निकट गया उपस्थित हो के पत्तों के बिना और कुछ न पाया" मार्ग बाट में एक गूलर का वृक्ष देख कर उस वृक्ष के निकट गया, परन्तु पत्तों के बिना उस में कुछ न पाने से उसी वृक्ष से कहा आज से तुझ में कभी फल न लगे, देखो इन आदतों से मसीह की सर्वज्ञता जाती रही ॥

खता है और लूका कुछ लिखता है

ा पर्व ३ आयत २३ से ३२ तक

१६ एर	३० माट
१७ इल्मोदद	३१ नगि
१८ कोसम	३२ इसनि
१९ अद्दी	३३ नहकुम
२० मल्कि	३४ आमान
२१ नेरी	३५ मतथिय
२२ शल्तीयल	३६ युसफ
२३ मिरुयावल	३७ याप
२४ रीसा	३८ मल्कि
२५ योहाना	३९ लेवी
२६ यहुदा	४० मतत
२७ युसफ	४१ एलि
शिमिथि	४२ युसफ
...तथिय	४३ योअसीद

भांति उन को अपनी जातियों की रक्षा के तौर पर पुकारता था और बुरे वचनों को मुंह से निकालता था और अपने शिष्यों को ताकीद करता है कि मोती उन को मत दो ; इस आयत से यह भी पाया जाता है कि मसीह आरंभ में धर्म के लिए दुख उठाने की इच्छा न रखता था—फिर मसीह मति पर्व १० आयत ५, ६ में अपने शिष्यों को मना करता है "यिशु ने उन्हीं बारहों को यह कह के भेजा, दूसरे देशों की ओर न जाना शेमिरोनियों के किसी नगर में न पैठना" देखो खाली यहूदियों को ही शिक्षा देने की आज्ञा देता है—मति पर्व १५ आयत २४ "इसरायल के घराने के भूली भेड़ों के बिना दूसरे किसी के समीप भेजा नहीं गया हूं" फिर २६ आयत "बालकों का आहार ले के (श्वानों) कुत्तों को देना उचित नहीं" देखो मसीह आरंभ में दूसरी जाति के लोगों से कैसी घृणता रखता था—यदि कहो कि उस स्त्री के ईमान जांचने के लिए कहा तो मसीह के सर्वज्ञता और ईश्वरता में फर्क पड़ता है—मार्क पर्व ७ आयत २७ "बालकों को तृप्त होने दो—अर्थात् रोटी लेकर कुत्तों के आगे फेंकनी नहीं" इन आयतों से पाया जाता है कि मसीह यहूदी मत के सुधारने वाला था और वह और जातियों को यथार्थ कुत्ते कहने में अपनी जाति का

साथ देता था और पहले यहूदियों के डर से दूसरे लोगों को धर्म उपदेश करना भी नहीं चाहता था। परन्तु जब यहूदियों ने उस की कुछ न सुनी तब तो उन से अप्रसन्न हो कर कुत्तों औ सूअरों के आगे मोती फेंकने आरंभ कर दिए और उन के फिर फाड़ने से न डरा" और चेले मूंडने आरंभ कर दिए—इन आयतों से पाया गया कि वह और लोगों के लिए नहीं आया था।

(७) यहूदा अस्करीयुती मसीह के बारहों शिष्यों में विश्वासी शिष्य था योहन पर्व १२ आयत ६ में लिखता है कि यहूदा चोर है "मैं नहीं जानता कि मसीह ने उसको फिर अपने बारहों शिष्यों में क्यों रख छोड़ा था—तिसपर यह कि मसीह का वह खजानची था—नहीं मालूम कि फिर मसीह ने उस को अपने बारह शिष्यों में क्यों रख छोड़ा था—फिर मति पर्व १८ आयत २८ में अपने १२ शिष्यों को कहता है कि "जब मैं अपने ऐश्वर्य के सिंहासन पर बैठूंगा, तब तुम भी बारह सिंहासनों पर बैठ के इसरायल के बारह वं . के लोगों का विचार करोगे" जिस समय मसीह ने ये वचन कहा था उस समय यहूदा इस्करीयुती भी बारहों शिष्यों में ही था दूसरा नहीं—इस से यह वचन उस चोर से भी कहा जब १२ शिष्यों से कहा तब मसीह यहूदाइस्करियुती की बदकारी को नहीं जानता

था कि यह मुझ को पकड़वाएगा और यह चोर है—
जानता था तो ऐसे दुष्ट से प्रश्न क्यों किया था कि
को ऐश्वर्य के सिंहासन पर बैठाऊंगा—ऐसा क्यों कह
और कहो कि वह नहीं जानता था तो फिर वह सर्वज्ञ
रहा यदि जानता था तो ऐसों को क्यों संग रखता
(८) ईसाइयों का बड़ा विश्वास है कि मनुष्य
ईश्वर ने स्वतन्त्र बनाया—और वह पाप पुण्य के करने
स्वतंत्र है—परन्तु यह इन की धर्म पुस्तक से सिद्ध न
होता—देखो—यात्रा पर्व ७ आयत ३ "और मैं
उन के मन को कठोर करूंगा" फिर यात्रा—पर्व ४
यत २१ फिर पर्व ७ आयत ३ को भी देखो—फिर या
पर्व ९ आयत १२ फिर पर्व ११ आयत १० "परमेश्वर
फरऊन के मन को कठोर किया"—देखो फरऊन बेचा
बनीइसरायल को जाने की आज्ञा देता—परन्तु जब प
मेश्वर उस के मन को कठोर कर देता तो वह बनीइ
रायल को जाने न देता था यात्रा पर्व १० आयत
से २७ जब ईश्वर ही लोगों का दिल कठोर करे तो
नुष्य क्या कर सका है—फिर मनुष्य के पाप पुण्य में स्वा
धीनता कहां रही। जो ईसाई लोग बड़े जोर शोर से कह
करते हैं—देखो पौल का पत्र रूमीयों को पर्व ९ आय
१५-१६-१८—"इस लिए जिस को अनुग्रह करने चाहत

हुं उस को अनुग्रह करता। और जिस को दया करने की इच्छा करता हूं उस को दया करता हूं। तो मनुष्य की इच्छा से क्या उद्योग होता है" फिर १८ आयत "इसलिए जिस को अनुग्रह करने को चाहता है उसी को अनुग्रह करता"—अब ईश्वर ही मनुष्य से पुण्य और पाप करवाता है तो फिर मनुष्य स्वतंत्र कहां रहा।

(८) हम इन के परमेश्वर की एक और लीला सुनाते हैं, जिस से उस का न्याय सिद्ध होता है—देखो—उत्पत्ति पर्व २५ आयत २३ परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे गर्भ में दो जाति गण हैं और तेरी कोख से दो रीति के लोग अलग होंगे और एक दूसरे लोग से बलवन्त होगा और जेठ कनिष्ट की सेवा करेगा—राम! राम!! देखिए इन के ईश्वर की पक्षपात, और अनुता पाप्रत्ता जब के वे अनाथ इसे (ऐसौया, याकूब) अभी उत्पन्न भी नहीं हुये थे कि सीष गया. फिर ईश्वर ने याकूब से प्यार किया और ऐसौ-या से बैर रक्खा—देखो मलाकी की पुस्तक पर्व १ आयत २, ३ परमेश्वर कहता है कि मैंने तुम्हें प्यार किया है तथापि तुम कहते हो कि किस बात में तूने हमें प्यार किया है ऐसौ याकूब का भाई न था परमेश्वर कहता है पर मैंने याकूब को प्यार किया, बैर रक्खा"

यत १८ से २३ तक "इस लिए जिस को अनुग्रह करने को चाहता है उसी को अनुग्रह करता जिस को निग्रह करने की इच्छा करता है उसी को निग्रह करता है ऐसे ही २३ आयत तक पढ़ जावो फिर पौल का पत्र इफिसियों का पर्व १ आयत ४-५ से ११ तक पढ़िये "फिर पौल का पत्र रूमियों को पर्व ११ आयत ८ को पढ़ो फिर यशाय की पुस्तक २९ पर्व १० आयत को देखो "कि परमेश्वर ने तुम पर भारी नींद का आत्मा उंडेला है और तुम्हारी आंखें बन्द किईं भविष्यद्वक्ताओं और तुम्हारे मध्य के दर्शियों को ढांपा—इन सब आयतों से मनुष्य का स्वतन्त्र होना सिद्ध नहीं होता ॥

अथ संक्षेप विरुद्धताई ईश्वरी पुस्तक की

समूएल दूसरा पर्व २ आयत ११ फिर पर्व ५ आयत ५ की और पहिली काल की पुस्तक पर्व ३ आयत ४ में लिखा है "और जिन दिनों में दाऊद यहूदाह के घराने पर हबरून में राजा था सो साढ़े सात बरस था—विरुद्ध पहिला काल का समाचार पर्व २९ आयत २७ और राजावली की पहिली पुस्तक पर्व २ आयत ११ "और दाऊद ने इसराएल पर चालीस बरस राज्य किया सात बर्ष हबरून में"—यहां दिशिष्ठ छः महीने भी गैब हो गये" दूसरा समूएल पर्व २४ आयत १ "परमेश्वर का क्रोध इस-

रायल पर भड़का और उस ने दाऊद को उन पर उभारा कि इसरायल को और यहूदा को गिनावें" विरुद्ध काल की पहिली पुस्तक पर्ब २१ आयत १, "शैतान इसरायल के विरुद्ध उठा और इसरायल को गिनावे के लिए दाऊद को उभारा"।

दूसरा समूएल पर्ब २४ आयत ९ "और यूअब ने लोगों की गिनती का पत्र राजा को दिया सो इसरायल में आठ लाख खड्ग धारी बीर थे और यहूदा के लोग पांच लाख"—(वि) पहिली पुस्तक काल पर्ब २१ आयत ५ और यूअब ने लोगों की गिनती दाऊद को दी और सारे इसरायल ग्यारह लाख खड्गधारी और यहूदा चार लाख सत्तर सहस्र खड्गधारी थे—इस स्थान को खूब सोचियेगा, दूसरा समूएल पर्ब २४ आयत १२, १४ ईश्वर भविष्यद्वक्ता के द्वारा दाऊद को कहला भेजता है कि तीन बात धरता हूं उन में से एक को चुन, कि मैं तुझ पर भेजूं" उन में से एक ये है "तुझ पर सात बरस का अकाल पड़" (वि) काल की पहिली पुस्तक पर्ब २१ आयत १२ अर्थात् तीन बरस का अकाल" क्या भविष्यद्वक्ता, ईश्वर के समीप ३ बरस ७ बरस में कुछ भेद नहीं है—दूसरा समूएल पर्ब २४ आयत २४ "दाऊद ने वह खलिहान और बैल पचास शेकल चांदी दे के मोल लिए" (वि) पहिला काल पर्ब २१

हन पर्व १ आयत ११) जब कि मसीह देखता है कि एलिया जो आने वाला था वो है" मती पर्व ११ आयत १४ फिर मती पर्व १७ आयत १२ किन्तु मैं तुम से कहता हूं एलिया आ चुका है" इस से भी प्रगट होता है—कि मसीह भी नहीं जानता कि एलिया आ चुका के नहीं इन आयतों मे भी मसीह की सर्वज्ञता जाती रही मति पर्व २७ आयत ४४ मार्क पर्व १५ आयत ३२ में लिखा है कि दोनों चोर मसीह पर तिरस्कार करते थे—(वि) लूका पर्व २३ आयत ३९ में लिखा है कि एक ही तिरस्कार करता था" मार्क पर्व १५ आयत २५ मसीह प्रहर दिन अर्थात् ३ घड़ी थी उन्हों ने उस को क्रुश पर चढ़ाया (वि) योहन पर्व १९ आयत १४, १५ मसीह को प्रहर से पहिले अर्थात् ६ घड़ी तक क्रूश पर चढ़ाया गया—मार्क पर्व १६ आयत ९ मसीह ने पहिले मग्दलिन मरियम को दर्श दिया-(वि) योहन पर्व २० आयत १४ मसीह दो को दिखलाई दिया-(वि) लूका पर्व २४ आयत १, ११ किसी को भी नहीं दर्शन दिया—मार्क पर्व १६ आयत १ से ४ मसीह दो दिन दो रात कबर में रहा—(वि) मती १२ पर्व आयत ४० मसीह तीन दिन तीन रात कबर में रहा—पहिली समूएल पर्व २१ आयत १९ तक इलहंनन ने सुलि

पैठने नहीं पावेंगे—जब स्वर्ग में पापी जाने नहीं पावेंगे भला फिर यह क्यों कर आ सकेगा—उस ने तो सारे संसार के पाप उठाये हैं और योहन्न जो स्वप्न की बातें कह रहा है यह कैसे स्वर्ग में आ सकेगा—क्यों कि स्वप्न की बातें तो मिथ्या होती हैं फिर इन बातों के मानने वाले कैसे स्वर्ग में जायेंगे—योहन० प्र० पर्व २२ आयत ४+५ किन्तु ईश्वर और मेघशावक का सिंहासन उस के बीच में है। और उसके सेवक उसीकी सेवा और उसका मुख दर्शन कर के रहते हैं और माथे में उस के नाम का चिन्ह धारण करते हैं—क्यों पादरी साहेब जी ईश्वर का मुख कश्मीरियों कीतरह गोरा व तैलंगकरनाटकियों की तरह काला—और यह चिन्ह कैसा है क्यों कि वह चिन्ह हम लोग तो धारण नहीं करते इसलिए संदेह होता कि वह चिन्ह कैसा है—कहीं बैरागियों को तो देख कर पादरी साहेब नहीं लिख लिया—क्यों कि वह अपने परमेश्वर का चिन्ह धारण करते हैं—

(१) योहन्ना प्रकाशित पर्व ६ आयत १०+११ उन्हों ने ऊंचे स्वर से कहा, हे पवित्र सत्यमय प्रभो, हमारे वधकारी पृथ्वी के लोगों के विचार करने को और उनका पलटा लेने को कितना बिलंब करेगा तब उन में से प्रत्येक जन को शुभ्र वस्त्र दिया गया, और उन पर यही

कही गयी, तुम्हारे भाई मारे जावेंगे जो तुम्हारे सदृश दास, और भाई इन की संख्या जो किंचित्काल संपूर्ण न होवे तब लग भहिष्णु ही रहो ::—हे प्यारे देखो ईसाई मत होना यदि हुए तो तुम भी दौरे सपुर्द किए जाओगे

(११) योहन प्रकाशित पर्व १२ आयत ७ स्वर्ग में संग्राम उपस्थित हुआ और मिखायेल और उस के दूतों का उसी नाग से युद्ध हुआ—वाह ! क्या अच्छा स्वर्ग है इन के स्वर्ग में भी लड़ाई झगड़ा ही रहता है—योहन प्रकाशित पर्व २० आयत २ ३ उस दूत ने उस नाग नामक एक बूढ़े सांप को अर्थात् अपवाद शैतान को धर के सहस्र वर्ष लग बांध रखने को अथाह कुंड में फेंक दिया और उस कुंड का मुंह बन्द किया और छाप दी उस में सहस्र वर्ष जब लग पूरे न होवें तब लग वह सब देश के लोगों को भुला न सकेगा, परन्तु पीछे कुछ काल के लिए छूटेगा—वाह ! जी वाह ! क्या इन के ईश्वर की बुद्धी है जो ऐसे दुष्ट को फिर छोड़ देगा—ऐसे को मारही देना चाहिए क्योंकि फिर यह न होता और न लोगों को बहकाता और न तुम्हारे ईश्वर का पुत्र मारा जाता और सृष्टी को उत्पन्न कर के न पछताता और न खुशामद करता कि एयूब के साथ यथा—देखो एयूब की पुस्तक पर्व २ आयत १+२+३+से सात तक ६, तब परमेश्वर ने शैतान

से कहा कि देख वह तेरे हाथ में है, केवल उस के प्राण को बचा" ॥ देखो कैसी नम्रता से शैतान को कहता है देखो इसी को ३ आयत "और तूने मुझे उसे, नाश करने को उभारा है ॥ वाह शैतान तो परमेश्वर से बड़ा बलवान हो गया कि ईश्वर को भी उभार दिया और इस से कैसी मिथ्या से बोलता है—यो॰ प्र॰ के पर्व २० आ॰ २+३ लिखा उस को कुंड में बन्द कर रक्खा है—फिर इस को कितने वर्षों से परमेश्वर ने छोड़ दिया है मसीह के होने से पहिले वा पीछे में—

स्वर्ग में ईसा का विवाह।

योहन॰ प्र॰ पर्व १९ आयत ७ "आओ हम आनन्द और उल्लास करें और उस का सम्मान करें, क्यों कि मेष शावक का विवाह उपस्थित हुआ और उस की स्त्री ने अपने तईं सजा है—अब तो मसीह बड़ा आनन्द करते होंगे क्योंकि स्वर्ग में विवाह हुआ है अब उन को हमारे पापों का क्या प्रयोजन क्योंकि उन को तो अब गृहस्थी की चिन्ता लग गई होगी योहन॰ प्र॰ पर्व २१ आयत ९ "तुझ को उस मेषशावक की विवाहिता स्त्री दिखाऊं" —क्यों जी मसीह का मामा, ससुर कौन हुआ—और निकाह किस ने करवाया और मसीह की स्त्री का क्या नाम था।

स्वर्ग जाने के लिए ईश्वर की १० आज्ञा थीं।

परन्तु ईसाई इन उत्तम आज्ञाओं पर न चल सके और अपनी मनमानी बातें बना कर चलने लगी—यहां दोनों लिखी जाती हैं।

ईश्वरी आज्ञा (१) तू मेरे सन्मुख दूसरे को ईश्वर मत जान

जब ईश्वर कहता है कि मेरे सन्मुख दूसरे को ईश्वर मत जान तो फिर आप लोगों ने ईसा को ईश्वर क्यों मान रक्खा है—हां यदि ईश्वर ही कहता कि ईसा को भी ईश्वर जानना, तो ईसा को ईश्वर मानना आवश्यक था—फिर कभी उसको ईश्वर का पुत्र और कभी ईश्वर का अवतार कहते हो यह गोल माल कुछ समझ में नहीं आता भला कहो जी मसीह कितना अवतार था—जैसे हिन्दू में श्रीरामचन्द्र जी १४ कला यो कृष्ण जी १६ कला मानते हैं आप ईसा को कितनी कला मानते हो—

(२) "तू अपने लिए किसी की मूर्ती मत बना"—जब ईश्वर ही मूर्ती बनाना मना करता है तो फिर। रोमन कथोलिक क्यों ईसा, मरीयम की मूर्तियों को पूजते हैं—क्या उनकी आप की पुस्तक में कुछ भेद है यदि भेद है तो पहिले उन को शिक्षा दो कि मूर्ती को न पूजें—फिर औरों को कहने ईसा की मूर्ती को ईसाइयों की

पुस्तकों में और गिरजा घर में और एक हिन्दुस्तानी पादरी की घड़ी की चेन में मरियम की मूर्ति को देखा यदि कहो कि हम उस का सम्मान नहीं करते तो फिर उस को व्यर्थ क्यों रख छोड़ा है।

(३) तू ईश्वर का नाम अकारथ मतले—ईश्वर का नाम तो अकारथ कोई नहीं लेता—परन्तु तुम तो ईश्वर का नामही नहीं लेते—जब नाम लेते हो तो ईसा का भजन गाते हो तो भी ईसा का॥

(४) तू विश्राम दिन को पवित्र रखने के लिए स्मरण कीजियो छः दिन में समस्त कार्य्य कीजियो, परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर का है—उस दिन न तू और न तेरा दास अर्थात् कुटुम्बी विश्राम दिन को कोई कार्य न करें—जब कोई कार्य्य करने की आज्ञा नहीं है तो फिर नहाते, खाते, फिरते, बैठते, बोलते, हंसते, सोते, जागते गाते, बजाते, क्यों हैं क्या यह कार्य्य नहीं है॥

(५) तू अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे—मसीह ने कैसी प्रतिष्ठा की है सो इञ्जील से ही प्रसिद्ध है॥

(६) तू हत्या मत कर। क्यों जी जब छिपा कर वा धोखा देकर ईसाई बना लेते है और ईसाई बना[illegible] ... पिता, स्त्री, बालक रोते मर जाते [illegible] नहीं है। और लाखों पशुओं को मार [illegible]

खा रहे हो और कहते हो कि उस में जीव नहीं है। भला आप में उस में क्या भेद है—जैसे आप खाते, पीते, भोग, विलास करते हो वैसे ही वे भी करते हैं यदि कहो कि वे ईश्वर को नहीं जानते। शायद वह जानते हों क्योंकि उन की बोली तो आप समझते ही नहीं हैं देखो गिनती पर्व २२ आयत २८ तब परमेश्वर ने गदही का मुंह खोला और उस ने बलआम से कहा कि मैंने तेरा क्या किया है कि तूने मुझे अब तीन बार मारा ॥३१॥ आयत देखो "तब परमेश्वर ने बलआम की आंखें खोलीं और उस ने परमेश्वर के दूत को मार्ग में खड़े हुए देखा" अब देखिए यदि उस में जीव न होता तो कैसे बोलती और दूसरा यह कि बलआम से तो जानवर ही अच्छे हैं कि जिनको ईश्वरी दूत दिखाई देते हैं देखो इसी की २३ आयत में लिखा है कि "गदही ने दूत को हाथ में तलवार लिए मार्ग में खड़े देखा" इस लिए आगे नहीं चलती थी परन्तु बलआम नबी को तो दूत दिखाई ही नहीं देता था जब परमेश्वर ने आंखें खोलीं तब उसे दूत दिखाई दिया—फिर इस आयत से यह भी पाया जाता है कि ईश्वरी बात को बलआम नहीं मानता था और बलआम की बात को ईश्वर—दूसरा यह कि जब तुम्हारा नबी एक जन्तु की बोली नहीं जान सका फिर तुम कैसे

जान सकते हो इस से तुम हत्या भी करते हो॥

(७) तू पर स्त्री गमन मत कर—जब स्त्री पति को वा पति स्त्री को छोड़ कर ईसाई होता है और ईसाई होने वाला दूसरा विवाह करता है तब पर स्त्री गमन कर चुका और स्त्री दूसरा पति कर चुकी॥

(८) तू चोरी मत कर। परन्तु यात्रा के ३ पर्व ११।२२ आयत देखो ईश्वर ने खुद चोरी करवाई है॥

(९) तू झूठी साक्षी मत दे। लाखों झूठी पुस्तकें बनाई। कई झूट बोलते देखे॥

(१०) तू अपने परोसी के घर की किसी वस्तु का लालच मत कर जब लालच करने को ईश्वर मना करता है तो फिर आप अपना मत बढ़ाने के लिए हमारे भाई बहिनों को ईसाई बना लिया और बना रहे हो क्या यह लालच नहीं है॥

[अपनी बनाई आज्ञा]

(१) इञ्जील को ईश्वरी पुस्तक मानना, भला जिस में विरुद्धता, और लोगों की कथा हो यह कभी ईश्वरी पुस्तक है देखो विरुद्धता को, और आदम से ले कर ईसा की कथा भी इञ्जील में है इस से ईश्वरी पुस्तक नहीं। (२) मसीह को ईश्वर का पुत्र ... में जितने प्राणी हैं यह सब ईश्वर ही

के पुत्र हैं। कुछ मसीह का ही ठेका नहीं है। (३) मसीह को ईश्वर के दाहने और बैठे हुए आकाश पर मानना Science सायंस, विज्ञान विद्या जो स्कूलों में पढ़ाई जाती है इस से तो आकाश शून्य है और हमारे शास्त्रों में भी आकाश कुछ नहीं है केवल पोल का नाम आकाश है-यदि यह बात सत्य नहीं तो झूठी विद्या को पादरी साहब स्कूल में क्यों पढ़ाते हैं—यदि यह विद्या सत्य है तो आप का आकाश मानना ही जाता रहा, फिर ईसा कहां पर रहा—और यदि हठ कर के सत्य ही मानोगे तो हिन्दुओं के इन्द्र, वरुण, यम, कुवेर, गोलोक, इत्यादि भी आप को मानना पड़ेगा। (४) मसीह हमारे पापों के बदले बलिदान हो गया-मसीह का बलिदान दूसरी बार जो ईसूपरीक्षा छपी है देखो की मसीह बलिदान हुआ है वा कोई और मनुष्य, उसके पलटे में बलिदान हुआ है—ईसू परीक्षा के देखने से आपही सब पर प्रकट हो जायगा॥

स्वर्ग जाने के लिए कौन उपाय करें।

[क्योंकि मसीह भी कर्म का फल देगा]

देखो योहन प्रकाश पर्व १४ आयत १३ और वे अपने श्रम से विश्राम पाते और उन के कर्म उन के पिछमगुये होते हैं यही आत्मा कहता है—जब हम को कर्मानुसार फल मिलेगा तब ईसा का क्या प्रयोजन- देखो यो हन० प्र० पर्व २० आयत १२-१३ और मैंने छोटे वा

बड़े सब मृतकों को ईश्वर के सम्मुख में खड़े होते देखा, और सब पुस्तक खोले गए और जीवन का एक पुस्तक खोला और पुस्तकों के लिखे वचनों से वेही सब मृतक लोग अपने २ कर्मों के अनुसार से विचारित हुए और समुद्र अपने रहने हारे मृतकों को सौंपा, मृत्यु और परलोक अपने २ रहने हारे लोगों को सौंपा और अपने २ कर्मों के अनुसार से प्रत्येक जन विचारित हुए १४ देखो इन आयतों से भी कर्मों का फल मिलना सिद्ध होता है—और देखो योहन० प्र० पर्ब २२ आयत १२ सब मनुष्यों को अपने २ कर्मों के अनुसार से देने को मेरे निकट फल है—अब पादरी साहब का विश्वास और बलिदान जाता ही रहा, हे पादरी साहबो विश्वास मत करो परन्तु कर्म अच्छे करो ॥

प्रार्थना !

हे ईश्वर तू इन हमारे ईसाई भाइयों पर दया कर कि यह अन्धकार से निकल कर तेरे पवित्र वेद की आज्ञाओं पर चलें और अंत को मुक्ति को प्राप्त करें —ओम्

भो सेवक पण्डित जगतनारायण आर्य्य
अनाथ पाठशाला दशाश्वमेध—बनारस ॥

ईसाईमतखंडन ।

प्रथम भाग ।

अर्थात्

जिस में खीष्टमतावलम्बियों के धर्म्म की
यथार्थ दशा झलकाई गई है, और जिसे
बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारत-
जीवन ने उनलोगों के हित के लिये
जो इस धर्म के पूर्णतया भेदू
नहीं हैं प्रकाश किया है ।

यह पुस्तक बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारतजीवन
के पास बनारस में मिलेगी ।

काशी ।

राजराजेश्वरी प्रेस में छापा गया ।

सन १८८४ ई० ।

भूमिका ।

—:o:—

आज हम अत्यन्त हर्षपूर्वक अपने पाठकों के प्रति इस पुस्तक को लेकर उपस्थित होते है और आशा करते हैं कि, वे लोग इस्से अवश्य लाभ उठावेंगे । यह ग्रन्थ किसी द्वेषभाव से नहीं लिखा गया है परन्तु चित्त की स्वच्छता और अपने भ्रान्त भाइयों के भ्रान्तिनिवरणार्थ इस की रचना हुई है। हम देखते हैं तो इधर कई वर्षों से हमारे भोले भाले और अज्ञान हिन्दू भाई ईसाइयों के जाल में फँसे जाते हैं, प्रायः इन में भूखे लोग बहुत है जिन्हें कहीं खाने पीने को नहीं मिलता. जिन्हें न खाने को अन्न न पहिरने को कपडा वे सीधे क्रिश्चियन हो जाते हैं बस वही मसल है "कि आरत काह न करहि कुकर्म्मू" ऐसे लोगों के लिये हमारा यह परिश्रम नहीं है, हमारा यह आयास केवल उन्हीं लोगों के लिये है जो इस मत के पूर्ण भेदू न होने के कारण इस का बाहरी आडम्बर देख कर इस में जा फँसते है और फिर पीछे ज्ञान होने पर पछताते हैं । प्राय. मिशन स्कूल के छोटे २ बालकों का कोमल हृदय इधिरही इस ओर खिंच जाता है । जब हम स्वयम् बाल्यावस्था में काशी के "जयनारायनस् कालिज" में पढ़ते थे तो बाइबिल को इस प्रकार कण्ठ किया था कि प्राय· परीक्षा में १०० के १०० ही नम्बर पाते थे, क्रमशः होते २ इस

प्रकार विश्वास जम गया कि इस खीष्ट धर्म्म के आगे अन्य धर्म तुच्छ जान पड़ने लगे, परन्तु सन् १८७९ ई० में इंट्रेंस पास करने के उपरांत जब बनारस कालिज मे पढ़ना प्रारम्भ किया और बी॰ ए॰ पर्य्यन्त पढ़ा, तथा अनेक ग्रन्थ देखने में आये, तो इस खीष्ट धर्म की यथार्थ दशा विदित होने लगी यहां लों कि जब अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान् "टामस पेन" के कई एक ग्रन्थ भली प्रकार देखे तब तो यह खीष्ट धर्म का विश्वास काई की नाईं स्वयम् फट गया। सत्य है ज्ञान रूपी सूर्य के आगे अज्ञानान्धकार कभी स्थिर नहीं रह सकता; अतएव यह विचार कर कि हमारे अन्य देशी भाई भी इस प्रकार इस में न फँस कर इस से सचेत रहें हम "टामस पेन" साहब के Age of Reason नामक ग्रन्थ का भाषानुवाद प्रकाश करते हैं। इस ग्रन्थ में अनुवाद का लालित्य निबाहने के लिये मुख्य ग्रन्थकार का अभिप्राय लेकर थोड़ेही में स्पष्ट कर दिया गया है। दूसरा भाग भी इस का यावत् सम्भव अत्यन्तही शीघ्र प्रकाश किया जायगा॥

अनुवादक रामकृष्ण वर्म्मा
सम्पादक भारतजीवन—बनारस।

ईसाईमतखण्डन ।

—○*○—

प्रथम भाग ।

वर्षों से मेरी इच्छा थी कि मैं अपने धर्म संबंधी अभिप्राय को प्रगट करूं, परन्तु ऐसे कार्य्य की अनेक कठिनाइओं को विचार कर मैं इतने दिनों तक इसे रोके हुए था, अब मैं अपने स्वच्छान्त:कर्ण और चित्त की उदारता से निज अन्तर्गत भावों को प्रगट करता हूं ॥

मैं एक ईश्वर के अतिरिक्त और किसी को नहीं मानता और इस जीवन के उपरान्त मुझे सुख की आशा है। मै सब मनुष्यों को समान मानता हूं, और मेरा यह विश्वास है कि न्याय करना, प्रेम बढाना, और मनुष्यों को यथोचित सुख देनाहीं मुख्य धर्म है ॥

परन्तु ऐसा न हो कि लोग यह विश्वास कर लें कि, मैं और भी बहुत सी बातें मानता हूं. अतएव इस ग्रन्थ में मैं उन बातों का स्पष्ट वर्णन करूंगा जिन्हें मैं नहीं मानता और उन्हें न मानने का कारण भी भली भांति दिखलाता जाऊंगा ॥

मै यहूदियों के धर्म पर विश्वास नहीं करता, रूमियों को नहीं मानता, यूनानियों को नहीं जानता, तुर्किस्तानियों की

नहीं सुनता और फ्रंगिस्तानियों को रत्ती भर विश्वास नहीं क-रता। मेरा मनहीं मेरा धर्म है॥

सब जातीय धर्म क्या यहूदी क्या ख्रस्तानी क्या मुसल्मानी मुझे मनुष्यों के बनावट जान पड़ते हैं, और केवल मनुष्यों को दास बनाने उन्हें भय दिखाने और अपने लाभ उठाने तथा प्रभुता जमाने के लिये बनाये गये हैं॥

इससे कदापि मेरा अभिप्राय नहीं है कि मैं दूसरे मतवालों को दोषी ठहराता हूं; नहीं, जैसा मुझे अपनी बात का विश्वास करने का अधिकार है वैसाही उन्हें भी है। परन्तु मनुष्य मात्र की सच्ची प्रसन्नता के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह अपने अंतःकर्ण के सामने सच्चा हो; अधार्मिकता किसी बात के विश्वास या अविश्वास करने में नहीं है परन्तु वस्तुतः अधार्मिकता वही है कि जिस बात का हम अंतःकर्ण से विश्वास नहीं करते उसे केवल लोगों के दिखाने के लिये विश्वास करते बतलावें॥

इस प्रकार के आन्तरिक झूठों से जो कुछ समाज की हानि हुई है उस का वर्णन करना असंभव जान पडता है क्योंकि जब किसी मनुष्य ने इस प्रकार अपने चित्त की पवित्रता को नाश कर डाला तो उस्से जो अपराध न बन पड़े सो थोड़ा है। वह निज लाभ के लिये दूसरों का उपदेशक बनता है और अपने इस व्यापार की वृद्धि के लिये आरंभही से झूठ

बोलने का अभ्यास करता है; छी! छी!! क्या इस्से भी ब-ढकर कोई बात बुरी हो सकती है ॥

प्रत्येक नामीय धर्म्म ने किसी व्यक्तिविशेष के द्वारा ईश्वर का वचन पाया मान कर अपनी जड़ जमाई है। यहूदी मूसा को मानते और कृश्चन ईसा मसीह तथा उस के शिष्य और दूतों को मानते हैं; और मुसल्मान महम्मद पर विश्वास रखते हैं:— मानों कि ईश्वर का मार्ग प्रत्येक मनुष्य को एकसा नहीं है ॥

ये प्रत्येक धर्म कुछ पुस्तकें ऐसी बतलाते हैं जिन्हें वे "इलहाम" अर्थात् ईश्वर का वचन कहते हैं। यहूदी लोग कहते हैं कि उन की धर्मपुस्तक को ईश्वर ने हजरत मूसा को स्वयम् दिया, कृश्चन लोग कहते हैं कि उन की धर्मपुस्तक ईश्वर के हार्दिक प्रेरणा से लिखी गई है; और मुसल्मान कहते हैं कि उन के कुरान को खुदा का फिरिश्ता आसमान से ले आया; ये सब एक दूसरे को झूठा बनाकर आप सच्चे बनते हैं परन्तु जो सच पूछिये तो ये सब झूठे से हैं ॥

सब से प्रथम मुझे "इलहाम" शब्द पर कुछ वक्तव्य है। "इलहाम" उसे कहते हैं कि जो बात सीधेही ईश्वर द्वारा मनुष्य को मिलती है ॥

इस में कोई भी संदेह नहीं और इसे कोई अविश्वास नहीं कर सकता कि सर्वशक्तिमान जगदीश्वर यदि ऐसा चाहे तो कर सक्ता है परन्तु जब कि कोई बात ईश्वर से किसी एक

मनुष्य को मालूम हुई है और दूसरों को नहीं तो यह "इल्हाम" उस व्यक्तिविशेषही के लिये ठहरा; जब यह फ़िर दूसरे पुरुष को कहता है और दूसरा तीसरे से योंही तीसरा चौथे से कहता है तो उन सब मनुष्यों के लिये यह इल्हाम नहीं होता। यह केवल पहिलेही मनुष्य के लिये इल्हाम ठहरा और दूसरों के लिये जनश्रुति (अर्थात् सुनी हुई बात) ठहरी इस लिये वे उस पर विश्वास करने को बाध्य नहीं हैं ॥

यदि कोई चीज जो दूसरों के द्वारा जबानी या लिख कर हमे मिली है इलहाम कहा जाय तो यह इस शब्द और इस अभिप्राय के विरुद्ध होता है ॥

इल्हाम उसी को कहते हैं जो प्रथम मनुष्य को ईश्वर से मिला हो इस के उपरान्त तो यह उस मनुष्य के इल्हाम मिलने का केवल वृत्तान्त मात्र ठहरा इस लिये चाहे वह प्रथम मनुष्य उस पर विश्वास करे परन्तु हम उसे उसी प्रकार विश्वास नहीं कर सकते क्योंकि वह इलहाम हमें तो हुआही नहीं, हम तो केवल इतनाहीं सुनते हैं कि उस प्रथम मनुष्य को इल्हाम हुआ।

जब मूसा ने इसरायेल के सन्तान से यह कहा कि मैंने ये दो आज्ञा की तख्तियां ईश्वर के हाथ से पाई हैं तो वे उसके बचन पर विश्वास करने को बाध्य न थे क्योंकि केवल मूसा के कहने के अतिरिक्त और कोई प्रमाण उन्हें न था;

और हमें तो दो एक इतिहासलेखकों के कहने के अतिरिक्त और कोई भी प्रमाण नहीं है । उन आज्ञाओं में स्वतः कोई ईश्वरीय प्रमाण नहीं मिलता, हां उनमें दो चार बातें अच्छी लिखी हैं परन्तु ऐसी २ बातें तो एक साधारण प्रवीण मनुष्य बिना किसी ईश्वरीय सहायता के स्वयम् बना या लिख सकता है ।'

इसी प्रकार जब हम सुनते हैं कि मरियम नामक एक कुँवारी स्त्री ने स्वयम् कहा या यों प्रसिद्ध कर दिया कि मुझे पुरुष के बिना ही गर्भ हो गया है और जब उसके बचनदत्त पति यूसफ़ ने भी कहा कि मुझे एक ईश्वरीय दूत ने ऐसा कहा है तो हमें अधिकार कि ऐसी बात का विश्वास चाहें करें या न करें, क्योंकि ऐसी भारी बात के लिये केवल उन दोनों के बचन के अतिरिक्त किसी विशेष भारी प्रमाण का होना आवश्यक है । पर जाने दीजिये यहां तो इतना भी नहीं है क्योंकि यूसफ़ और मरियम दोनों ने इस विषय में कहीं कुछ नहीं लिखा है, केवल दूसरे लोग ऐसा कहते हैं कि उन्होंने ऐसा २ कहा था; इसी को "उमची पर दुमची" कहते हैं और हम ऐसी ऐसी पोची बातों पर कभी विश्वास नहीं कर सकते ।

इस बात का पता लगाना कुछ भी कठिन नहीं है कि लोग ईसामसीह को ईश्वर का पुत्र क्यों मानने लगे । उसकी उत्पत्ति ऐसे समय में थी कि जब लोगों को अविद्या के का-

रण ऐसे २ विश्वास सहज ही में हो जाया करते थे । यह कुछ नई बात न थी; जो उस समय ज़रा चमत्कारिक बुद्धि का पुरुष होता था उसके विषय में लोग यही विचारते थे कि यह किसी देवता के अंश से उत्पन्न है । देवताओं का सांसारिक स्त्रियों पर प्रेम का विश्वास उन दिनों बहुत फैला था; उन्हीं के लेखानुसार उनके जुपिटर नामक देवता ने सहस्त्रों से उपभोग किया, अतएव इस कहानी में कोई नई या आश्चर्य की बात नहीं है । ऐसा विश्वास उस समय के पुरुषों के रुचि के अनुसारही था और केवल वेहीं ऐसी २ बातों पर विश्वास करते थे । यहूदी लोग जो सदा एक ईश्वर को मानते थे ऐसी व्यर्थ की बातों पर कभी विश्वास नहीं करते थे ।

क्या विचित्रता है कि प्राचीन माइथालोजी की बातें क्रिस्तानी धर्म में कैसे आ मिलीं । इतना मिलान तो स्पष्ट मिलता है कि उन्होंने निजधर्मप्रवर्तक को ईश्वर का पुत्र बता दिया । तब इसके उपरान्त बीस तीस सहस्त्र देवताओं को छोड़ पिता पुत्र और पवित्र आत्मा को मानने लग गये और इसी प्रकार धीरे २ बहुत सी बातें रूमियों की भी अपने अट्ट सट्ट बनावटी धर्म में मिलाकर एक नया प्रपञ्च खड़ा कर लिया। परन्तु यहां बुद्धि का काम है कि उसका निर्णय कर डाले ।

इञ्जील में जो जो बातें मसीह के बारे में लिखी हैं वे तो जो सच पूछिये तो मसीह का अत्यन्तही अपमान करती हैं ।

मसीह एक मिलनसार और धर्मिष्ट पुरुष था उसकी नीतिशिक्षा अत्यन्त प्रशंसनीय है और यद्यपि इसी प्रकार की शिक्षा पूर्व समय में कनफूसियस और केकर तथा कई यूनानी प्रसिद्ध विद्वान लोग कर गये थे परन्तु इसकी शिक्षा से किसी की भी शिक्षा बढ़ कर न थी।

मसीह ने अपनी उत्पत्ति वंश इत्यादि के विषय में कहीं कुछ भी स्वयम् नहीं लिखा है और नये नियम (अहदनामे) में तो एक अक्षर भी उसका बनाया या लिखा नहीं है। उसके विषय में जो कुछ इतिहास लिखा है वह सब दूसरों ही का बनाया है; और उसके जी उठने तथा स्वर्ग में चढ़ जाने का जो वृत्तान्त है वही उसकी जन्मकहानी की मानो पूर्ति निबाही है। क्योंकि जब उसके जीवनचरित्र के लेखकों ने उसे असाधारण रीति से संसार में उत्पन्न कराया तो उसी प्रकार यहां से भेजना भी था नहीं तो जन्मकहानी का बन्धान हवा में उड़ जाता।

परन्तु यह अन्तिम वृत्तान्त इस "हिकमत अमली" के साथ लिखा गया है कि पूर्व लेख से भी कुछ बढ़ा चढ़ा है। पहिली बात अर्थात् ईश्वरीय कृपा से गर्भ हो जाना ऐसी है कि सर्वसाधारण को विदित नहीं हो सकती थी इसलिये इस विचित्र कहानी के रचयिताओं ने यह ढङ्ग निकाला कि यदि उनका विश्वास न हो तो वे पकड़े भी न जांय और उनका

भेद किसी प्रकार न खुले । इसके प्रमाणित करने की आशा तो उनसे होही नहीं सकती थी क्योंकि वे बिचारे इसका क्या प्रमाण देते और दूसरे यह भी असम्भव था कि जिनके विषय में उन्होंने ये सब बातें कही वह स्वयम् इसे प्रमाणित करता।

अस्तु बच्चे का गर्भ में आ जाना तो कोई नहीं देख सकता था परन्तु मर के जी उठना और आकाश में से हो कर आस्मान में चले जाना तो एक ऐसी बात है कि सब लोग आंखों से देख सकते थे । माना हमने कि मसीह सचमुच जी उठा और स्वर्ग में चढ़ गया तो भला गुब्बारे के चढ़ने के नाईं या दोपहर के सूर्य्य के नाईं यदि और नहीं तो समग्र यरूसलम तो अवश्य ही देखता । जिस विषय पर आप प्रत्येक को विश्वास दिलाया चाहते हैं उसके लिये प्रमाण भी वैसाही होना चाहिये कि जिसे सब मानें । यदि चेत् यह अन्तिम वृत्तान्त सर्वसाधारण के नेत्रगोचर होने से प्रमाणित हो जाता तो पूर्वकथित विषय पर भी विश्वास होता जिसके अभाव से दोनों पर अविश्वास हो गया। अब वे पांच सात पुरुषों को समग्र संसार के लिये साक्षी बना कर चाहते हैं कि हम लोग इस पर विश्वास करें सो भला [illegible] सकता है ।

यह ऐसा विषय है कि छिपाने से कभी छिप नहीं सक्ता। असाधारण बातें इस किस्से में हैं उनका विश्वास होना . रहा उने देखते ही जान पड़ता है कि यह बिलकुल

फमाद रचा हुआ है। प्रथम तो उन ग्रन्थों के रचयिताओंही का पता नहीं है कि जिनका वे लिखा बतलाते हैं इसका सविस्तर हाल हम आगे लिखेंगे; सबसे भारी प्रमाण इस विषय का यहूदियों से मिलना है जो ठीक उन लोगों के वंश में से हैं जिनके समय में मसीह का जी उठना और स्वर्ग में जाना हुआ थाः—ये लोग कहते हैं कि यह सब मिथ्या है। आश्चर्य है कि इतने पर भी क्रिश्चियन लोग यहूदियों ही को अपना प्रमाण बनाते हैं। यह तो वही बात ठहरी कि जैसे कोई मनुष्य अपने मुक़दमे की सचाई प्रमाणित करने के लिये उन लोगों को पेश करे जो उसके मुक़दमे को झूठा बताते हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं होता कि मसीह नामक कोई पुरुष उस समय में था और वह उस काल के रीत्यनुसार फांसी भी दिया गया अर्थात् क्रूस पर चढ़ाया गया। ये सब बातें सम्भव हो सकती हैं। वह अतीवोत्तम शिक्षा करता था और सब मनुष्यों को समान बतलाता था परन्तु इसके साथही वह यहूदी पंडे और पांधो की बुराइयां और लालच का भी उद्घाटन करता था जिस कारण यहूदियों के समग्र पांधेमण्डल के हृदय में क्रोध की अग्नि बल उठी। वे सब पांधे भी बड़े चतुर थे; उन्होंने उस पर यह दोष लगाया कि यह रूमी गवर्मेण्ट का राजविद्रोही है और देश में विद्रोह फैलाता फिरता है। यह जान पड़ता है कि रोम की गवर्मेण्ट के हृदय में उस

पर सन्देह हुआ जैसा कि यहूदियों ने कहा था और इस में सन्देह भी नहीं कि मसीह यहूदियों को रूमियों के बन्धन से मुक्ति करने का उपाय चित्त में विचारता था । इन्हीं दोनों बातों के कारण इस सज्जन समाजसंशोधक का प्राण गया।

इसी स्वच्छ और ठीक बात पर क्रिश्चियनों ने इतना आ-डम्बर बांध कर का "पर का कौआ" बना लिया है कि जिन के सामने प्राचीन गप्प के किस्से कहानियां भी मात हैं।

प्राचीन मैथालोजी में लिखा है कि एक समय यहूद ने देव दानव और पिशाच मिलकर जुपिटर से लड़ने आये और उनमें से एक पर्वतों के ढेर का ढेर बरसाने लगा । जुपिटर ने वज्र खींच कर मारा और उसे इटना के पहाड़ में बन्द किया तब से जिस समय वह करवट लेता है तभी इटना के पहाड़ में से अग्नि निकलने लगती है ।

यह अत्यन्त सहज बात है कि इटना पर्वत को ज्वालामुखी देख कर यह किस्सा बना लिया गया है कि उसमें सत्यता की झलक मालुम हो ।

क्रिश्चियनों के मैथालोजी में लिखा है कि उनका शैतान एक बेर उनके सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ही से भिड़ गया ति उसे परास्त करके पर्वत में तो नहीं परन्तु एक बड़े गड़हे द किया । इसके देखने से स्पष्ट जान पड़ता है कि इस किस्से के रचयिता ने पहिले किस्से की नकल बनाई है

क्योंकि देव और जुपिटरवाला किस्सा कई सौ वर्ष पहिले का है।

इस से यह भी जान पड़ता है कि प्राचीन मैथालोजी और क्रिस्तानों की मैथालोजी में बहुत मेल पाया जाता है : परन्तु क्रिश्चियन लोग कुछ उनसे भी चढ़े बढ़े हैं । इन्हों ने ईसा मसीह के किस्से को इटना पहाड़ के किस्से से मिला दिया है और उस का उत्तम प्रबन्ध बांधने के लिये यहूदियों के किस्से भी ले लिये हैं क्योंकि क्रिश्चियनों की मैथालोजी इसी प्रकार अट्ट सट्ट बनी है ॥

अब क्रिस्तानों ने एक बेर तो अपने शैतान को गड़हे में कैद किया परन्तु अपने किस्से के बनाने के लिये उन्हे लाचार हो उस की मुक्ति वहां से करनी पड़ी तब वे उसे सर्प बनाकर एडन के बगीचे में लाये और आदम की स्त्री "हौवा" से बात चीत कराया (जिसे सर्प को बोलते सुन कर कुछ भी आश्चर्य न हुआ) । खैर अन्त को यह हुआ कि सर्प ने कह सुन कर उन्हें उस वृक्ष का फल जिसे ईश्वर ने बरजा था खिला दिया जिस के खाने से सब संसार भर के मनुष्यों को दण्ड भोगना पड़ा ।

कदाचित् पाठक लोग समझते होंगे कि इस प्रकार शैतान को संसार पर बिजयी ठहरा कर क्रिश्चियन लोग उसे कृपा पूर्वक पुनः उसी गड़हे अर्थात् नरक में छोड़ देंगे, या यदि ऐसा न करें तो उस पर एक पहाड़ही उठा कर रख दें-

गे क्योंकि वे अपने विश्वास से पर्वत को भी चला सकते हैं, या नहीं तो उसी को पहाड़ के नीचे पर दबावेंगे कि जिस से वह पुनः स्त्रियों में गुप्तचर बदमाशी या हानि न करे। परन्तु नहीं उन्होंने उसे बिना सजा किये ही छोड़ दिया और जब उससे बहुत दुखी हुए तो उसे पुनः देकर शान्त किया अर्थात् उससे यह प्रतिज्ञा की कि सब यहूदी और सब तुर्की व समग्र संसार जो ईसा पर विश्वास न करेंगे तुझे दिये जावेंगे॥ भाई वाह! क्या इतने पर भी कोई किस्तानों की उदारता पर सन्देह कर सकता है ?

इस प्रकार स्वर्ग में विद्रोह और लड़ाई लड़ी कर (जिस में न कोई मरता न घायल होता था) शैतान को नरक में डाल—फिर उसे वहां से निकाल—उसे समग्र संसार पर विजयी बना—तथा वर्जित फल खाने से मनुष्यों को नष्ट भ्रष्ट बना अन्त को किस्तानों ने दोनों किस्से को एक में मिला दिया। वे इस पवित्र मनुष्य ईसामसीह को ईश्वर और मनुष्य दोनों का पुत्र बतलाते हैं, और ईश्वर का पुत्र भी कहते हैं कि वह सूली पर चढ़ने के लिये संसार में आया क्योंकि "हौवा" ने हिर्स से वर्जित फल खा लिया था॥

जाने दीजिये इस व्यर्थ के किस्से में जो कुछ मूर्खता भरी है जिसे पढ़ने से हँसी आती है छोड़ दीजिये और केवल मुख्य२ बातोंही पर यदि ध्यान दीजिये तो बाइबिल से बड़

कर कोई भी ग्रन्थ उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की बुद्धिमत्ता और अधिकार की "शान" के विरुद्ध नहीं हो सकता ॥

अपने इस प्रपंच की जड़ बांधने के लिये इस के रचयिताओं ने अपने उस शैतान को लाचार हो कर ईश्वर के बराबर का अधिकार दिया। बड़ी कृपा की जो उसे ईश्वर से भी बढ़ कर न बना दिया !!! उन्हों ने उसे अपने तई उस गड़हे से निकालनेही का अधिकार केवल नहीं दिया बरन उस की अवनति होने पर उस अधिकार को अनन्त कर डाला। इस अवनति होने के पूर्व वे उसे औरों की नाईं एक साधारण ईश्वरीय दूत बतलाते हैं; परन्तु जब उस की अवनति हुई तब तो वह सर्वव्यापी हो गया। उसे एकही क्षण में सर्वत्र उपस्थित होने की शक्ति हो गई। भई वाह! अवनति काहे को, यह तो उन्नति ठहरी!!॥

इस प्रकार शैतान को ईश्वर के तुल्य बनाने पर भी उन की तृप्ति न हुई तब उन्हों ने यह दिखलाया कि वह अपने फसाद से ईश्वर की सब बुद्धिमत्ता और प्रताप को संसार में व्यर्थ करने लगा यहां लों कि उसने ईश्वर को इतना तंग किया कि वह लाचार होकर समग्र संसार उसके अधिकार में छोड़ दे. सो ईश्वर को उसके जीतने के लिये संसार में उतरना पड़ा और मनुष्य होकर क्रूस पर अपनी जान देनी पड़ी!!!

यदि इसके रचयिताओं ने शैतान को सर्प का रूप

बनाकर उसे ईश्वर द्वारा क्रूस पर खिंचवाया होता तो इस किस्से में इतनी विद्वत्ता न झलकती परंतु उन्हों ने अपनी बुद्धिमत्ता से शैतान को तो जिता दिया और बिचारे ईश्वर को हरा दिया ॥

हम इस बात में सन्देह नहीं करते कि अनेक प्रसिद्ध और प्राचीन लोगों ने इस धर्म पर विश्वास किया और अच्छी प्रकार जीवन निर्वाह कर गये । प्रथम कारण तो इस का यह है कि उन्हें वैसीही शिक्षा दी गई थी दूसरे वे बिचारे इस प्रकार अपने ईश्वर के प्रेम और आडम्बर में फँस गये कि उन्हों ने बाइबिल के इस विरोधी लेख पर ध्यानही न दिया और न उसके दोष बिचारे ॥

परन्तु यदि योंही आडम्बर देख कर हम मोह जावें तो क्या प्रतिक्षण हम आश्चर्य्य नहीं देखते ? क्या हम जन्मतेही एक ऐसे विलक्षण सजे सजाये संसार में नहीं आ जाते, जहां बिना पैसा कौड़ी खर्चेही सब सामान तय्यार है ?

क्या सूर्य्य का उदय करना, मेघ का बरसाना, पृथ्वी में अनाज उत्पन्न कराना हमारे हाथ में है ? चाहे हम सोते रहें चाहे जागते रहें संसार रूपी कल रात दिन चलाही करती है । ये सब चीजें ईश्वर ने मनुष्य के लिये उत्पन्न की हैं तो अब ईश्वर बिचारे की जान लिये बिना क्या उन की तृप्ति नहीं होती थी ? ॥

इस खण्डन को देख कर कितनोंहीं के कान खड़े हो जाँयगे परन्तु अब समयही ऐसा आया है कि इस का यत्न किया जाय । अब सभी देशों में क्रिस्तानी धर्म पर सन्देह होने लगा है और जो लोग विचारे भ्रान्ति के समुद्र में पड़े लहरें ले रहे थे कि किसका विश्वास करें और किसका अविश्वास, उनकी तृप्ति हो जायगी । इस लिये अब हम पुराने और नये दोनों नियमों की परीक्षा करते हैं ॥

ये पुस्तकें अर्थात् उत्पत्ति की पुस्तक से लेकर प्रकाशित वाक्य की पुस्तक पर्य्यन्त सब ईश्वर के बचन कहलाते हैं । इस लिये यह अत्यन्त आवश्यक बात है कि पहिले हम यह जान लें कि इन्हें ईश्वर का वचन कौन कहता है कि जिस में हम देखें कि उस के वाक्य पर कितना विश्वास कर सकते हैं । तो इस का पता यही लगता है कि एक दूसरे से योंही कहते चले आये हैं और लिखा सिखा कहीं कुछ भी नहीं है ॥

जब इन गिरजावालों ने अपना धर्म बनाना चाहा तो जितनी लिखी हुई पुस्तकें इन्हें मिलीं सब इकट्ठी कीं और अपनी इच्छानुसार बना लीं । इस में अत्यन्तही सन्देह जान पड़ता है कि जिसे ये पुराना और नया नियम कहते हैं आरम्भ में ऐसेहीं थे जैसे अब हैं; या उन में कुछ घटा बढ़ा कर बना लिया गया है, जो कुछ हो उन लोगों ने तब यह निश्चय किया कि इन संगृहीत पुस्तकों में से किसे ईश्वर का ब-

मान कहें और किन्हें नहीं तब आर्चबिशप अनुमति देने लगे और जिन पुस्तकों के लिये अधिक लोगों की सम्मति ठहरी उन्हें तो ईश्वर का वचन मना लिया बाकी को निकाल भी दिया, कई पुस्तकों को उन्हों ने संदिग्ध भी रक्खा जैसे "अपाक्रिफा" की पुस्तक। यदि ये लोग उस समय दूसरी कुछ अनुमति देते तो ये लोग जो अपने को क्रिश्चियन् कहते हैं वैसाही मानते; क्योंकि यहां तो एक का कहना और दूसरों का विश्वास करना ठहरा कुछ सत्यासत्य का निर्णय तो ठहराही नहीं। ये लोग, कौन थे कहीं कुछ नाम पता नहीं लिखा है परन्तु "साधारण पर्व" के नाम से प्रसिद्ध थे॥

जब इस प्रकार बाहर से कोई प्रमाण इन पुस्तकों को "ईश्वर का वचन" कहने के लिये नहीं मिलता तो अब उन्हीं पुस्तकों की परीक्षा करके देखते हैं कि स्वयम् उन में क्या है। इस ग्रन्थ के आरम्भ में हम इलहाम के बारे में कुछ कह चुके हैं अब उस की योजना इन पुस्तकों के साथ की जाती है।

"इलहाम" उन बातों या विषयों का वर्णन ईश्वर द्वारा किसी मनुष्य के प्रति है कि जिन्हें यह मनुष्य पाहिले नहीं जानता था। क्योंकि यदि हमने कोई काम स्वयम् किया है, या होते देखा है, तो उसे हमे जताने या लिखने के लिये ... इलहाम की कुछ भी आवश्यकता नहीं है इलहाम उन

बातों के लिये नहीं हो सक्ता जो पृथ्वी पर की जाती हैं और जिन का मनुष्यही स्वयम् कर्ता या साक्षी है। अतएव समग्र ऐतिहासिक या किस्से की बातें जो बाइबिल मे हैं (क्योंकि यही तो उस में हई है) इल्हाम शब्द के अर्थ के अन्तर्गत नहीं हो सकता। जब कि सामसन गाजा के फाटक कंधे पर उठा ले गया (उठाया या नहीं ईश्वर जाने) या जब वह डेलिलाइ से भेंट करने गया, या लोमड़ियों को पकड़ लाया या और भी ऐसेही काम किये तो भला सोचने की बात है कि इल्हाम और इन बातों से क्या सम्बन्ध है! यदि ये बातें सचमुच हुई थीं तो वह स्वयम् उन्हें कह या लिख सकता था या यदि उस का कोई सेक्रेटरी या मुनीम (क्लार्क) होता तो वह लिख डालता; और यदि यह सब किस्सा बनावटी है तो इल्हाम उसे सच्चा नहीं कर सकता; फिर चाहे यह सच हो या झूठ ऐसी बातों के जानने से हम कुछ अधिक बुद्धिमान या चतुर नहीं हो गये। जब हम उस सर्वशक्तिमान् जगत्पालक अखिलप्रतापशाली जगदीश्वर की शक्ति को देखते हैं कि जिस का करोड़वां हिस्सा भी अत्यन्त प्रवीण मनुष्य की बुद्धि में नहीं आ सकता तो ऐसीर तुच्छ और सारहीन बातों को "उसका बचन" कहते सुन कर अत्यन्त लज्जा होती है!!! ॥

जगत की उत्पत्ति के वृत्तान्त को जो उत्पत्ति के पुस्तक के आरम्भही में दिया है देखने से जान पड़ता है कि जैसा

विश्वास इसरायेल लोगों के चित्त में मिश्र में आने के पूर्व था वैसाही वहां से जाने के उपरान्त ज्यों का त्यों लिख दिया है। ग्रन्थारम्भ के प्रकार ही से जान पड़ता है कि यह वृत्तान्त वे एक दूसरे से जबानी सुनते आये हैं क्योंकि यह पुस्तक बी-चही में जैसे अचानचक आरम्भ हो जाती है—इसमें न तो कोई कहनेवाला है न कोई सुननेवाला है और न किसी के प्रति यह सब हाल कहा जाता है बस जैसे कोई सुनी सुनाई बात आरम्भ हो जाती है वैसाही है। यहां तो मूसा ने और स्थानों की नाईं आरम्भ भी नहीं किया जैसे कि उसने सर्वत्र लिखा है कि "और ईश्वर ने मूसा से यों कहा कि"—

यह कुछ भी समझ में नहीं आता कि इस उत्पत्ति के वृत्तान्त को मूसा का बनाया हुआ क्यों मानते हैं। यदि चेत् इसे मूसा ने बनाया होता तो वह अपना नाम रचयिता में अवश्य रखता। मूसा की शिक्षा मिस्रवालों में हुई थी कि जिन के समान उन दिनों विज्ञानशास्त्र विशेषतः ज्योतिष विद्या में कोई दूसरे देश के निवासी निपुण न थे; सो इस पुस्तक की सत्यता के अर्थ मूसा ने कहीं भी जो अपना नाम नहीं दिया या जान बूझ के बचाया तो इसी से जान पड़ता है कि न तो उसने इसे लिखा और न वह इसपर विश्वास करता था। कारण यही है कि जब संसार में सब धर्मवालों ने उत्पत्ति की रचना का बर्णन किया है तो भला इसरायेल लोग किससे कम थे कि ये भी सृष्टि के

आरम्भ का वर्णन करने में किसी से पीछे रहें; अस्तु यह वर्णन किसी प्रकार हानिकारक नहीं है बस इतनाही जानो कि बाइबिल ने बड़ी कृपा की है।

परन्तु जब हम बाइबिल में उन असभ्य कहानियों को देखते है, उन निर्लज्ज व्यभिचारों का हाल पढ़ते हैं, उन करुणाहीन हत्याओं तथा दयारहित बदला लेने का वृत्तान्त पाते हैं कि जिनसे आधी से पार बाइबिल भरी है तो यही उचित जान पड़ता है कि इसका नाम ईश्वर का बचन न कह कर शैतान का बचन कहा जाय तो योग्य हो। यह तो बुराइयों का इतिहास है जिसने मनुष्यों को पशुवत् बना दिया; यदि हम से पूछिये तो हम तो इसे उसी घृणा की दृष्टि से देखते हैं जैसे कि और दयारहित बातों पर हमारी घृणा होती है।

बाइबिल में भविष्यवक्ताओं की विलक्षण दशा है। डिबोरा और बारक भी भविष्यवक्ताओं में लिखे हैं—इन्होंने कोई भविष्य बाणी नहीं की है परन्तु हा उन्होंने अपने नाम से कुछ काव्य में वर्णन किया है। दाऊद भी भविष्यवक्ताओं में है, क्योंकि वह गाना बजाना जानता था और उसे लोग भजनों का रचयिता बताते हैं (जो बिल्कुल सरासर भूल है) परन्तु इब्राहीम, इज़हाक और याकूब का नाम भविष्यवक्ताओं में नहीं है; कारण यही है कि जितना हाल उनका दिया है, उन

में कहीं उनके गाने बजाने या कविता करने का कुछ पता नहीं मिलता ।

फिर बाइबिल में बड़े और छोटे भविष्यवक्ताओं का हाल मिलता है । (वाह ! छोटे और बड़े ईश्वर का हाल भी क्यों नहीं दिया !) यदि भविष्यवक्ता का अर्थ आनेवाली बात का कहनेवाला हो तो क्या भविष्यवाणी के कहने में भी छोटाई बड़ाई हो सकती है ! हां कविता में अलबत्ते छोटा कवि और बड़ा कवि हो सकता है अतएव बाइबिल के भविष्यवक्ता का अर्थ 'कवि ही' ठीक होता है ।

तो जब भविष्यवक्ताओं का यही अर्थ है तो जो कुछ उन्होंने लिखा है उस पर अब अनुमति देना व्यर्थ ही ठहरा-इन कवियों की कविता ऐसी भद्दी है कि साधारण कवियों की भी कविता इनसे कहीं उत्तम है ।

अब दूसरी बात यह विचारने योग्य है कि समय के फेरफार से अनेक भाषा नष्ट हो जाती हैं और दूसरी दूसरी भाषा खड़ी हो जाती हैं तो भला ईश्वर का बचन किसी लेख या मनुष्य की वाणी में जो नश्वर है कैसे रह सकता है ? क्योंकि जब वह स्वयम् नित्य है तो उसका बचन भी नित्य होना चाहिये। शब्दों के अर्थ का समयानुसार बदलना, समग्र संसार में एक भाषा के अभाव से अनुवाद की आवश्यकता का होना, अनुवाद अशुद्धता का होना, कापीनवीस तथा छापेवालों की भूल

का करना तथा और भी अनेक बातें ऐसी हैं कि जिनसे यह स्पष्ट है कि ईश्वर का बचन इन अनित्य मध्यस्थ वाहकों द्वारा नहीं हो सकता। ईश्वर का बचन तो कुछ दूसरा ही है।

भला यदि बाइबिल समग्र संसार के वर्तमान ग्रन्थों से उत्तम होती तौ भी मनमें कुछ विश्वास जमता। परन्तु जब हम रुपये में बारह आना मार काट व्यभिचार की बातें तथा महा घृणित और जघन्य कहानियों का संग्रह बाइबिल में पाते हैं तो हम इसे ईश्वर का बचन कह कर अपने उस परमात्मा सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर के नाम को कलङ्कित नहीं कर सकते।

इतना तो बाइबिल के पुराने नियम के लिये हुआ अब नये नियम का हाल सुनिये। नया नियम क्या? अर्थात् ईश्वर की नवीन इच्छा! मानों ईश्वर की भी दो प्रकार की इच्छा होती है एक नवीन और एक प्राचीन!।

यदि मसीह की इच्छा किसी नवीन धर्म को स्थापन करने की होती तो निस्सन्देह उसने अपनी जीवित अवस्था में लिखा होता या किसी दूसरे से लिखवा लिया होता। परन्तु उसके नाम से रचा हुआ कोई ग्रन्थ नहीं मिलता। नये नियम की सब पुस्तकें मसीह के मृत्यु के उपरान्त लिखी गई है। उसके माता पिता यहूदी थे और ईश्वर का पुत्र तो वह उसी प्रकार है जैसे और सब मनुष्य हैं क्योंकि ईश्वर सबका पिता अर्थात् उत्पत्तिकारक है।

प्रथम की चार पुस्तकों में जिन्हें मत्ती, मर्कुस, लूका, और युहन्ना

मुहम्मद ने तो नये धर्म चलाये परन्तु मसीह ने कोई नवीन धर्म स्थापन नहीं किया, वह लोगों को नीतिशिक्षा करता और एक ईश्वर पर विश्वास दिलाता था वह सब मनुष्यों का हित चाहनेवाला था ।

परन्तु उसकी दुर्दशा का वृत्तान्त पढ़ने से जान पड़ता है कि उस समय उसकी बहुत प्रसिद्धि न थी और यह भी मालूम होताहै कि वह अपने अनुयायियों का समाज कहीं निराले में करता था और प्रसिद्ध तौर से शिक्षा देना उसने बंद कर दिया था क्योंकि यदि ऐसा न होता तो यहूदा यस्करियत उसको चुपके से उन लोगों को क्यों बताता जो उसे पकड़ने के लिये घूमते फिरते थे । यह बात इससे और भी स्पष्ट विदित होती है कि यदि वह छिपा छिपा न फिरता तो यहूदी लोग उसके शिष्य यहूदा यस्करियत को लालच देकर उसके पकड़ने को भेदिया क्यों बनाते ? यह विचारने का स्थान है कि ईश्वरता तथा इस चोरी के छिपाव में कैसा महत् अन्तर है; और जब वह अपने एक अनुयायी के द्वारा पकड़ाया गया तो इसी से जान पड़ता है कि यह कार्य उसकी इच्छा के विरुद्ध हुआ अतएव फांसी दिये जाने अर्थात् क्रूस पर चढ़ने में उसकी इच्छा न थी ।

क्रिस्तान लोग कहते हैं कि मसीह संसार भर के पाप के लिये मरा और वह मरने ही की इच्छा से संसार में आया था।

स्थानों में तो एकही बात को उन्होंने भिन्न २ प्रकार से वर्णन किया है इन पुस्तकों से ओर इलहाम से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता है, न कि केवल इसी लिये कि उनके लेखकों का परस्पर वर्णन नहीं मिलता परन्तु इसलिये भी कि भूत वृत्तान्तों के वर्णन में या दो मनुष्यों के बात चीत के वर्णन में इलहाम का कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता । प्रेरितों की क्रिया में भी (जिस ग्रन्थ के रचयिता का पता नहीं है) ऐसे ही ऐसे वृत्तान्त भरे हैं । नये नियम का शेष भाग " प्रकाशितवाक्य " को छोड़कर केवल पत्रियों का संग्रह है और चिट्ठियों का जाल बनाना तो जगत में प्रसिद्ध बात है जिसमें सन्देह होता है कि वे वस्तुतः लेखक की पत्रियां हैं वा जाल रचा गया है, इस के अतिरिक्त और भी बहुत सी बातें ऐसी हैं जिससे नये नियम पर कुछ भी विश्वास नहीं जमता जैसे देखिये, ये लोग कहते हैं कि मसीह ने हमारे पापों के बदले जान दी अब उससे हमारी छुट्टी हो गई । विचारने का स्थान है कि सच्चे न्याय से यह बात कभी नहीं हो सकती जैसे कि हमने किसी का कर्ज देना है और हमारी सामर्थ्य नहीं है कि हम उसके कर्ज को चुका सकें अतएव महाजन हमें कारागार में भेजने को धमकाता है यदि कोई दूसरा पुरुष हमारा कर्ज अपने पास से चुका दे तो हमारी छुट्टी निस्सन्देह हो जायगी क्योंकि महाजन को केवल अपने रुपये से मतलब है परन्तु यदि हमने

ई फौजदारी का अपराध किया है तो यह बातही दूसरी गई क्योंकि यदि कोई दूसरा पुरुष हमारे बदले दण्ड भो-ा चाहे तो हमारी छुट्टी नहीं हो सकती, सच्चे न्याय से ऐसी शा करना केवल दुराशा मात्र है यदि ऐसा हो तो ऐसे न्याय सभी अन्याय कहेंगे क्योंकि यह तो अन्धेरनगरी का न्याय रा।

ज़रा विचारने से जान पड़ेगा कि पाप से इस प्रकार मो-न होने का ध्यान केवल दीवानी के कर्ज़ की नाईं समझकर न्धान बांधा गया है परन्तु रचयिता ने इतना भी न विचारा के यह बात ही दूसरी ठहरी, फिर इन्हीं के ग्रन्थों में लिखा है के पीठ पर कोड़े खाने और गिर्जाघर में पोपों को कुछ रुपया नेसे पाप की मुक्ति हो जाती है छी! छी! जान पड़ता है कि साईयों के मन में "टका धर्म टका कर्म टका सर्वस्वमुत्तमम्" योंकि जब वे टके के ज़ोर से अपनी मुक्ति पाप से करा लेते हैं तो मानों पोप जी के द्वारा ईश्वर को भी घूस देते हैं! प-रन्तु कदाचित् कोई यह पूछे कि क्या फिर कोई ईश्वर का ब-चन या इल्हाम न होना चाहिये जिसका उत्तर हम यह देते हैं कि अवश्य होना चाहिये। यह समग्र संसार जो हम देखते हैं ईश्वर का बचन है यह वह बचन है जिसे कोई मनुष्य ब-दल नहीं सकता और जिसके द्वारा मानों वह समग्र संसार से बात चीत करता है।

मनुष्यों की भाषा सदा बदलती रहती है और भिन्न २ देशों में भिन्न २ भाषा है अतएव समग्र संसार के जानने वा समझने के लिये इनके द्वारा कोई काम नहीं हो सकता; यह विश्वास कि ईश्वर ने मसीह को समग्र संसार में हर्षमय वृत्तान्त सुनाने को भेजा केवल उन्हीं लोगों को हो सकता था जो पृथ्वी के विस्तार का वृत्तान्त कुछ भी नहीं जानते थे और जो कूपमण्डूक की नाईं यही समझते थे कि जितना वे देखते हैं उतनाही समग्र संसार है ।

अब यह विचारना चाहिये कि समग्र संसार के जातियों को मसीह अपनी शिक्षा कैसे दे सकता था ? क्योंकि वह तो केवल एक इब्रानी भाषा जानता था और संसार में तो हजारों भाषा बोली जाती हैं । यह प्रायः देखने में आता है कि दो जातियां एक ही भाषा नहीं बोलतीं और परस्पर बहुत कम समझती हैं यदि अनुवाद से समझाया जाय तो भाषातत्वविचारक लोग इस बात को भली प्रकार जानते हैं कि एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने से कितनी भूलों का होना सम्भव है और प्रायः अर्थ की भ्रान्ति भी होती है; इसके अतिरिक्त मसीह के समय में छापे की कल का तो लोग नाम तक भी [illegible] जानते थे ॥

यह अत्यन्त आवश्यक है कि किसी कार्य को यथायो[illegible] करने के लिये उसके ही योग्य उपकरण होना चा-

हिये नहीं तो वह काम नहीं हो सकता । यही एक बात है कि जहां ईश्वर और मनुष्य की शक्ति व बुद्धि में भेद पाया जाता है। मनुष्य प्रायः अपने कामों में कृतकार्य्य नहीं होता जिसका कारण यही है कि वह यथायोग्य उपकरण के प्रयोग करने में असमर्थ है और यदि उपकरण भी उस के पास हों तो वह अपनी नियमित बुद्धि के कारण उनका यथोचित प्रयोग नहीं कर सकता। परन्तु सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर तो अपने कामों में सदाही कृतकार्य होता है, उसके उपकरण कार्य के योग्यही होते हैं परन्तु मानुषीय भाषा सर्वत्र एक रङ्ग अव्याप्त होने के कारण किसी निर्विकार और नित्य ज्ञान की बाहक नहीं हो सकती, अतएव ईश्वर अपने तई मनुष्यों पर प्रगट करने के लिये मानुषीय भाषा से काम नहीं लेता; केवल एक प्राकृतिक संसार ही को ईश्वर का बचन कह सकते हैं। यह प्राकृतिक संसार मानों ऐसी भाषा बोलता है जिसे जगत भर के मनुष्य समझ सकते हैं। यह सदा से है और सदा रहेगा इसमें कोई जाल नहीं कर सकता, कोई बदल नहीं सकता, कोई छिपा नहीं सकता, न यह कभी खो सकता है यह कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो मनुष्य के प्रकाश न करने पर रुकी रहे यह अपने तईं जगत भर में स्वयं प्रकाश कर देता है यह सब जातियों को और सब लोगों को शिक्षा देता है और यह ईश्वर का बचन मनुष्यों पर उन सब बातों को

प्रगट करता है जो उन्हें ईश्वर के विषय में जानने चाहियें। यदि हम उसकी शक्ति देखा चाहते हैं तो इस अपार संसार में देखें यदि हम उसकी बुद्धि देखा चाहते हैं तो इस विचित्र संसार में देख लें, यदि हम उसकी उदारता देखा चाहते हैं तो इस अखिलवस्तुभूषणाभूषित पृथ्वी में देखें, यदि हम उसकी करुणा और दया देखा चाहते हैं तो यह प्रत्यक्ष देख लें कि वह अकृतज्ञ तथा पापियों को भी अपने सूर्य चन्द्रमा तथा मेघ इत्यादि के लाभों से वञ्चित नहीं रखता; सारांश यह कि यदि तुम ईश्वर को जाना चाहते हो तो ईसाई अञ्जील में जिसे एक साधारण मनुष्य भी बना सक्ता है मत खोजते फिरो परन्तु उस अञ्जील में खोजो जिसे प्राकृतिक संसार कहते हैं जिसे ईश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं बना सकता।

ईश्वर के विषय में मनुष्य केवल यही कह सकता है और यही सोंचे सकता है कि वह आदि कारण है अर्थात् सब कारणों का कारण है, क्योंकि आदि कारण का ध्यान करना या समझना अत्यन्त कठिन व बुद्धि के बाहर है और किसी आदि कारण का न मानना उससे भी हजार गुना कठिनता से समझ में नहीं आता अतएव आदि कारण का अविश्वास करते हुये विश्वास करना पड़ता है। जैसे आकाश को अनन्त विचारना अत्यन्त कठिन है परन्तु उसका अन्त विचारना उससे भी सहस्र गुना कठिन है अथवा जैसे समय को अनन्त विचा-

रना कठिन है परन्तु यह उससे की सहस्रगुना कठिन है कि हम किसी प्रकार यह विचार सकें कि कोई ऐसा समय आवेगा जब समय न होगा। उसी प्रकार संसार के समग्र वस्तुओं के देखने से जान पड़ता है कि कोई भी अपने तईं स्वयम् उत्पन्न नहीं कर सकता । प्रत्येक मनुष्य इस बात को जानता है कि वह स्वयम् अपना कारण नहीं है और न उसके पिता पितामह या और कोई आपही अपना कारण था और न कोई वृक्ष या पशु पक्षी अपने तईं स्वयम् उत्पन्न कर सकता है अत एव इन प्रमाणों से यह आवश्यकता हुई कि हमको आदि कारण मानना पड़ा और उस आदि कारण में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो कभी नाश हो सकती हो और इसी आदि कारण का नाम ईश्वर है ।

मनुष्य केवल बुद्धि ही के बल से ईश्वर को जान सकता है यदि उसकी बुद्धि ले ली जाय तो वह कुछ भी न समझ सकेगा और ऐसी अवस्था में किसी मनुष्य या किसी घोड़े के सामने बाइबिल पढ़ना एकसां हो जायगा तो अब हम उन्हें क्या कहैं जो यह कहा कहते हैं कि धर्मसम्बन्धीय काम में बुद्धि मत लगावो ।

समग्र बाइबिल में ईश्वर को बतानेवाले अयूब के दो चार पर्व हैं और गीतों के पुस्तक का १९ वां पर्व; इनके अतिरिक्त और कोई नहीं जान पड़ता ॥ ये सत्य २ ईश्वरविषयक लेख

हैं क्योंकि वे ईश्वर का निमित्त उनके शब्दों में करते हैं इस-लिए संसार को छोड़कर और किसी दूसरी पुस्तक को ईश्वर का वचन नहीं मानते। गीतों के पुस्तक के उपदेशों का आशय जैसा ऐडिसन् नामक कवि ने लिखा है उसका अनु-वाद यहां हम प्रकाश करते हैं—

कुण्डलिया ।

ऊँचो अरु विस्तृत बड़ो यह अकाश महमन्द ।
तैसो नीलो गगनको बादर भानु प्रचन्द ॥
बादर भानु प्रचण्ड गण्ड महिमण्डल सारे ।
चन्द्रादिक उद्दण्ड और जेते नभ तारे ॥
ते सब इकसुर होय करें याहीं मनु सूचो ।
हमें रच्यो जो हस्त वही नर्गे सबसे ऊँचो ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों भानु प्रगासने अन्धकार अधिकाय ।
त्यों त्यों इन्दु कहै मनो जन्मकथा हरषाय ॥
जन्मकथा हरषाय गाय धरणी सों भाषै ।
या विधि ग्रह नच्छत्र सहित निज वितवत पारैं ॥
सो नित नित के लखें होत दृढ़ता पुनि त्यों त्यों ।
नये नये नक्षत्र विदित होवतु हैं ज्यों ज्यों ॥ २ ॥
यद्यपि सब डोलत अहैं बिन रव चारो ओर ।
पै चतुरन के श्रवन में कहत मनो कर जोर ॥
कहत मनो कर जोर तोर महिमा प्रभु न्यारी ।
रचे भानु चन्द्रादि मेरु सागर नरनारी ॥

या विधि प्रभु की प्रगट करैं महिमा को तद्यपि ।
अन्त न पावै कोऊ भटक भूले नर यद्यपि ॥ ३ * ॥

इसके अतिरिक्त कि यह सब सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर के बनाये हैं मनुष्य और क्या जाना चाहता है ? बस यदि उसे कुछ भी बुद्धि है तो इस विश्वास पर उसको इतना दृढ़ होना चाहिये जहां से उसे कोई भी डिगा न सके ॥

अयूब की पुस्तक में भी इसी प्रकार ईश्वर की ईश्वरता का वर्णन है अर्थात प्रत्यक्ष सत्यता से ईश्वर का होना प्रमाणित किया है। यद्यपि मुझे अयूब की पुस्तक का भाग ठीक स्मरण नहीं है तथापि उसकी एक विशेष बात यह स्मरण है जहां लिखा है कि "क्या तुम खोजने से ईश्वर को पा सकते हो ?" और "क्या तुम ईश्वर को पूर्ण रीति से पा सके हो" ? ॥

प्रथम प्रश्न के विषय में कि "क्या तुम ईश्वर को खोजने से पा सकते हो?" हम कहते हैंकि हां, क्योंकि प्रथम तो हम यह जानते हैं कि हम स्वयं अपने कारण नहीं है तथापि हम वर्तमान तो हैं और इसी प्रकार दूसरे वस्तुओं के भी कारण विचारने पर हम देखते हैं कि वे सब स्वयं अपने तई उत्पन्न नहीं कर सकते हैं तथापि लाखों जीव और वस्तु संसार में वर्तमान है अतएव इस विषय की खोज क-

* इन तीन ऊर्ध्वलिखित कुण्डलियों से ईश्वर का अलौकिक प्रताप झलकाया गया है ।

रने से हम यह देखते हैं कि इन सब वस्तुओं से उत्पन्न कोई शक्ति है और उसी शक्ति का नाम ईश्वर है ॥

द्वितीय प्रश्न अर्थात् "क्या हम ईश्वर को पूर्ण रीति से पा सकते हैं" के विषय में हम कह सकते हैं कि नहीं, क्योंकि नाकि केवल उसकी यह अखिल लोकरचना ही मनुष्य की बुद्धि के बाहर है परन्तु जो कुछ शक्ति उसकी हम देखते हैं यद्यपि हमारे जान बहुत कुछ है तथापि उस अखिल बुद्धि और शक्ति का करोड़वां हिस्सा भी नहीं है जिस्से असंख्य अदृश्य दूरवर्ती लोकालोक स्थापित और रक्षित हे ॥

यह स्पष्ट विदित है कि ये दोनों प्रश्न मनुष्यों की बुद्धि के प्रति किये गये है और प्रथम प्रश्न का उत्तर हां मानकर द्वितीय प्रश्न हुआ है क्योंकि यदि प्रथम प्रश्न का उत्तर नहीं हुआ तो उस से भी कठिन यह दूसरा प्रश्न करना व्यर्थ क्या मूर्खता होगी। 'इन दो प्रश्नों का भिन्न भिन्न अभिप्राय है प्रथम प्रश्न ईश्वर के अस्ति या नास्ति के विषय मे है और दूसरा प्रश्न उस के गुण के बारे में है ,बुद्धिबल से प्रथम का निर्णय होता हैं परन्तु दूसरे का निर्णय पूर्णतया करने में बुद्धि असमर्थ हो कर चकरा जाती है ॥

"प्रेरितों की क्रिया" नामक पुस्तक में हमें कोई भी ऐ वाक्य स्मरण नहीं आता कि जिस में ईश्वर का निरूपण हो, वह समग्र लेख वादाविवाद पर है और उस में जो

क्रूस पर किसी मनुष्य के मरने का वृत्तान्त लिखा है वह किसी एकान्तवासी ईसाई महन्तजी की बुद्धि का उद्गार ही जान पड़ता है । केवल एक वाक्य जो ईश्वर की बुद्धि और शक्ति के विषय में है औ मसीह द्वारा बेफ़िकरी के विषय में कहा गया है कि आकाश के पक्षियों को देखो क्योंकि वे न तो बोते हैं न लवते हैं न खत्तों में बटोरते है तिस पर भी तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है उन्हें खिलाता है............जङ्गली सोसन के फूलों को देखो वे क्योंकर बढ़ते हैं, वे परिश्रम नहीं करते और न वे सूत कातते हैं । यद्यपि यह अयूब की पुस्तक और गीतों की अपेक्षा छोटी बात कही है तथापि इसका भी अभिप्राय उन्हीं के नाईं है ॥

ईसाइयों का विश्वास तो हमें एक प्रकार से नास्तिकों का सा जान पड़ता है जो धर्म्म की टट्टी बनाकर ईश्वर के अस्तित्व में सन्देह लगाता है, ये लोग ईश्वर छोड़ कर मनुष्य पर विश्वास करते हैं और वह मनुष्य भी ईश्वरता तथा मनुष्य को मिलकर बना है; ऐसा विश्वास तो नास्तिकता के इतने समीप है जैसे सन्ध्या समय का प्रकाश अन्धकार के समीप हो ॥

इस ख्रीष्ट धर्म में मनुष्य और उसके कर्ता के बीच मसीह का प्रवेश इस प्रकार होता है जैसे सूर्यग्रहण के समय पृथ्वी और सूर्य के बीच चन्द्रमा घुस जाता है और सूर्य के प्रकाश को व्यर्थ ही रोकता है, वह विद्या जिसे विज्ञान शास्त्र * कहते हैं

* Science

रने से हम यह देखते हैं कि इन सब वस्तुओं में ..
कोई शक्ति है और उसी शक्ति का नाम ईश्वर है॥

द्वितीय प्रश्न अर्थात् "क्या हम ईश्वर को पूर्ण रीति
सकते हैं" के विषय में हम कह सकते हैं कि नहीं,
नाकि केवल उस्की यह अखिल लोकरचना ही मनुष्य की
के बाहर है परन्तु जो कुछ शक्ति उसकी हम देखते हैं
हमारे जान बहुत कुछ है तथापि-उस अखिल बुद्धि ..
क्ति का करोड़वां हिस्सा भी नहीं है जिस्से असंख्य ..
दूरवर्ती लोकालोक स्थापित और रक्षित है॥

यह स्पष्ट विदित है कि ये दोनों प्रश्न मनुष्यों की
के प्रति किये गये है और प्रथम प्रश्न का उत्तर हां ..
द्वितीय प्रश्न हुआ है क्योंकि यदि प्रथम प्रश्न का उत्तर
हुआ तो उस से भी कठिन यह दूसरा प्रश्न करना
क्या मूर्खता होगी। 'इन दो प्रश्नों का भिन्न भिन्न अभि
है प्रथम प्रश्न ईश्वर के अस्ति या नास्ति के विषय में
और दूसरा प्रश्न उस के गुण के बारे में है, बुद्धिव
प्रथम का निर्णय होता है परन्तु दूसरे का निर्णय पूर्ण
करने में बुद्धि असमर्थ हो कर चकरा जाती है॥

"मेरितों की क्रिया" नामक पुस्तक में हमैं कोई भी
वाक्य स्मरण नहीं आता कि जिस में ईश्वर का नि..
.. हो, वह समग्र लेख वादाविवाद पर है और उस में

कूस पर किसी मनुष्य के मरने का वृत्तान्त लिखा है वह किसी एकान्तवासी ईसाई महन्तजी की बुद्धि का उद्गार ही जान पड़ता है । केवल एक वाक्य जो ईश्वर की बुद्धि और शक्ति के विषय में है औ मसीह द्वारा बेफ़िकरी के विषय में कहा गया है कि आकाश के पक्षियों को देखो क्योंकि वे न तो बोते हैं न लवते है न खत्तों में बटोरते हैं तिस पर भी तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है उन्हें खिलाता है ....जङ्गली सोमन के फूलों को देखो वे क्योंकर बढ़ते हैं, वे परिश्रम नहीं करते और न वे सूत कातते हैं । यद्यपि यह अयूब की पुस्तक और गीतों की अपेक्षा छोटी बात कही है तथापि इसका भी अभिप्राय उन्हीं के नाईं है ॥

ईसाइयों का विश्वास तो हमें एक प्रकार से नास्तिकों का

औ जिसमें ज्योतिष मुख्य है ईश्वरकृत रचनाओं पर चित्त ध्यान देने से जाना गया है, उसी द्वारा ईश्वर की शक्ति और बुद्धि प्रगट होती है और यही विज्ञान शास्त्र जो सच पूछिये तो ईश्वर का वचन है । बाइबिल को ईश्वर का वचन कहना व्यर्थ है क्योंकि यह तो ईश्वरविषयक भिन्न २ मनुष्यों की बुद्धि और अनुमति का उल्लेख मात्र है उसमें ईश्वरकृत कार्यों से ईश्वर का निर्णय नहीं है परन्तु मनुष्यकृत लेखों से ईश्वर का निर्णय होता है अतएव सच्चे मार्ग से भुला कर इस भ्रान्त मार्ग पर लाने से खीष्ट धर्म्म ने संसार में बहुत कुछ हानि पहुँचाई है ॥

कृश्चियन लोगों का यह कहना कि विज्ञान शास्त्र भी तो मनुष्यों की रचना है केवल धोखा देना मात्र है क्योंकि विज्ञान शास्त्र मानुषीय रचना नहीं हो सकता किन्तु उसका अभियोग मानवी रचना है प्रत्येक विज्ञान शास्त्र की जड़ कुछ ऐसे बँधे हुये नियमों पर स्थित है जो कभी नहीं बदलते और जिनसे समग्र चराचर संसार प्रचालित होता है; ये नियम मानुषीय रचना नहीं हो सकते हां मनुष्य उन नियमों का ज्ञाता हो सकता है। ... पचाङ्ग को देखने से प्रत्येक मनुष्य कह सकता है ...क दिन अमुक समय पर ग्रहण लगेगा और वह इस बात ...भी है कि जैसा उसमें लिखा है ठीक वैसाही सदा ... है इससे यह विदित होता है कि आकाशस्थ ग्रहों

की गति के नियम से मनुष्य अभिज्ञ है परन्तु यदि कोई कहै कि ये नियम मानुषीय रचना हैं तो इससे बढ़ कर मूर्खता नहीं हो सकती; उसी प्रकार उन वैज्ञानिक नियमों को जिनके द्वारा गणित करके मनुष्य ग्रहण का समय इत्यादि बतला सकता है मानुषीय रचना कहना बड़ी भारी भूल है । किसी नित्य तथा निर्विकार वस्तु या नियम का कर्ता मनुष्य कभी नहीं हो सकता और वे वैज्ञानिक नियम जिनके द्वारा मनुष्य ऐसे काम करता है सदा नित्य और निर्विकार होने चाहिये और हैं, नहीं तो ग्रहण इत्यादि का ठीक समय कैसे बतलाया जा सकता है, ये वैज्ञानिक नियम जिनके द्वारा मनुष्य ग्रहण इत्यादि का पूर्व वृत्तान्त अथवा किसी और ग्रह की गति इत्यादि जान लेता है त्रिकोणमिति नामक विज्ञान का भाग है और यही नियम जब आकाशस्थ ग्रहों के विषय में लगाये जाते हैं तो ज्योतिषशास्त्र कहे जाते हैं अथव समुद्र विषयक प्रयोग होने से सामुद्रिक इत्यादि कहाते हैं — तात्पर्य्य यह कि ये नियम विज्ञानशास्त्र के प्राणभूत हैं और इनके प्रयोग का विस्तार पूर्णतया कोई नहीं जानता ॥

यदिचित् कोई यह कहे कि मनुष्य त्रिकोण बना या खींच सकता है अतएव त्रिकोण मानुषीय रचना है — नहीं क्योंकि त्रिकोण जब खींचा जाता है तो मानुषीय रचना हो सकता है परन्तु खींचे जाने के पूर्व भी तो त्रिकोण की स्थिति है यह

लिखित त्रिकोण मानों उस नित्य त्रिकोण की आकृति मात्र है, यह तो हृदयस्थित भाव का आकार स्पष्ट करने के लिये नेत्रों के सन्मुख खींच खांच कर बनाया गया है ॥

हम यह नहीं कह सकते कि इस खींचे हुये त्रिकोण ने नियमस्थ प्राकृतिक त्रिकोण को भी रचा है, जैसे अनुमान की जिये कि किसी अँधेरी कोठरी में बहुत सी कुर्सियां और टेबल रक्खें हैं परन्तु अन्धकार के कारण दीख नहीं पड़ते, यदि हम दीप की सहायता से उन वस्तुओं को देखें, तो यह कदापि कोई नहीं कह सकता कि उस दीपकने उन कुर्सियों और टेबलों को बना दिया है; क्योंकि ये वस्तु तो पहिले ही से वहां हैं इसी प्रकार त्रिकोण के सब गुण किसी मनुष्य के त्रिकोण खी चने या जानने के पूर्व से स्थित हैं । जिस प्रकार मनुष्य सम्बन्ध आकाशस्थ ग्रहों की रचना में नहीं है उसी प्र त्रिकोण इत्यादि के नित्य गुणों की रचना का भी वह कोई रण नहीं है, इत्यादि ।

क्रिश्चियन धर्म की प्रायः सभी बातें विज्ञान शास्त्र और बुद्धि के विरुद्ध हैं देखिये उनके ईश्वर का कैसा विलक्षण न्याय है कि अपराधियों के बदले वह निरपराधियों को दण्ड देता है। आदम के अपराध के लिये उसे स्वयम् मनुष्य स्वरूप धारण कर क्रूस पर चढ़ना पड़ा । संसार की उत्पत्ति का विचित्र ,, आदम और हव्वा की अनोखी कहानी, सर्प तथा

र्णित फल का अनूठा वृत्तान्त, ईश्वर का मनुष्य रूप धारण करना, फिर उसका मरना इत्यादि सब बातें उनके धर्म की सचाई प्रगट करती हैं ! ! तीन को एक मानना तथाच एक को तीन जानना इन्हीं के गणितविद्या में है इनके धर्म की बातें न कि केवल बुद्धि और विज्ञानशास्त्र के विरुद्ध हैं परन्तु वे सब ईश्वर की ईश्वरता में बट्टा लगानेवाली है । इस धर्म के रचयितागण इस बात को भली प्रकार जानते थे कि एक दिन ऐसा आवेगा कि जब विज्ञान की सहायता से उनके धर्म का पोल खुल जायगा अतएव वे लोग आरम्भ ही से विज्ञानशास्त्र के बैरी थे और इस शास्त्र के आविष्कर्ताओं की जान के ग्राहक बने रहते थे परन्तु इधर दो या तीन सौ बरस से उनकी दाल नहीं गलने पाती यहां लों कि १६१० ईस्वी में जब गेलिलियो नामक प्रसिद्ध विद्वान ने दूरदर्शक नामक यन्त्र का अविष्कार कर आकाशस्थ दूरवर्ती ग्रहों की गति का वृत्तान्त प्रगट किया तो ऐसे लाभकारी कार्य करने के लिये उन्होंने उसका सत्कार तो क्या करना था बरन कहने लगे कि यह सब झूठा जाल फसाद है, इसके पूर्व विजिलियस नामक विद्वान पृथ्वी को गोलाकार तथा सर्वत्र मनुष्यों के रहने के योग्य कहने के लिये जीता जला दिया गया परन्तु अब यह बात सत्य प्रतीत हुई या नहीं ? यदिचेत् न्यूटन या डेटकार्ट अबसे ५०० वर्ष पहले पैदा हुये होते और जैसी उन्हों ने विज्ञानशास्त्र की उन्नति

न सुनाते हैं क्योंकि किस्सानों का यह किस्सा कि पिता ईश्वर ने अपने पुत्र को स्वयम् मार डाला अथवा लोगों से मरवा डाला कभी इस योग्य नहीं है कि पिता अपने पुत्र से कहे और यह कहना कि ऐसा कार्य संसार की भलाई और प्रसन्नता के लिये किया गया है इस किस्से को और भी बिगाड़ना है मानो नरहत्या से किसी प्रकार संसार की उन्नति हो सकती है और तिसपर यह कहना कि ये सब भेद बुद्धि के अगम्य हैं प्रत्यक्ष बहाना उसके छिपाव का है ॥

देखिये ये बातें सच्चे ईश्वर की बातों से कितनी दूर हैं सत्य धर्म में तो केवल एक ईश्वर है उस धर्म में यही आज्ञा है कि यावत्सम्भव संसार को उत्तम शिक्षा देना और उसकी भलाई करना ॥

खीष्ट मत का यह विश्वास है कि जिस संसार में हम रहते हैं इस के अतिरिक्त और कोई दुनियां नहीं है तथाच संसार की उत्पत्ति, हौवा के वर्जित फल खाने का वृत्तान्त, और ईश्वर के पुत्र की मृत्यु का हाल सब विलक्षण बातें हैं, पर जब हम विज्ञानशास्त्र द्वारा देखते हैं कि उस परम शक्तिमान जगदीश्वर ने अनन्त संसार उत्पन्न किये हैं जिन्हें हम तारागण की नाईं आकाश में विस्तृत देखते हैं तो इस खीष्ट धर्म पर अविश्वास के साथ अत्यन्तही अश्रद्धा होती है ऐसी दो बातों का विश्वास चित्त में नहीं हो सकता और वह मनु-

प्य जो कहता है कि मै दोनों पर विश्वास करता हूं वास्तव में किसी पर भी विश्वास नहीं करता ॥

यद्यपि प्राचीनों को भी अनन्त संसार होने का विश्वास था परन्तु केवल ३ । ४ सौ बर्ष हुये कि इस पृथ्वी की लम्बाई चौड़ाई का वृत्तान्त ठीक २ विदित हुआ है अनेक विद्वान् पुरुष जहाजों पर आरूढ़ होकर समुद्र द्वारा इस समग्र पृथ्वी के चारों ओर वृत्ताकार घूम आये है । पृथ्वी का घेरा केवल ५५०२६ इङ्गिलिश माइल है और अनुमान तीन वर्ष में इस के चारो ओर हम घूम आ सकते हैं * पाहिले पाहिल तो इस हिसाबसे यह पृथ्वी हम लोगों को बहुत बड़ी जान पड़ती है परन्तु जब हम इसका मिलाप उस अनन्त आकाश के विस्तार से करते हैं कि जिस के सामने यह करोड़वें का करोड़वां हिस्सा भी नहीं है तो यह अत्यन्त छोटी जान पड़ती है उसके सामने हमारी यह पृथ्वी ठीक वैसी ही है जैसे हमारे इस समग्र पृथ्वी के सामने बालू का एक कण अथवा महासागर के सामने ओस की एक बूंद हो ॥

* यदि कोई जहाज घण्टे में ३ मील के हिसाब से चले तो वह अनुमान एक वर्ष में घूम आवे परन्तु वह ठीक वृत्ताकार में तो चलही नहीं सकता क्योंकि उसे समुद्र के काट छाट के अनुसार चलना पड़ेगा अतएव इतना विलम्ब होता है ॥

यदि हम अपने ध्यान को बहुत दूर बढ़ावें तो इस अनन्त आकाश का थोड़ा सा हाल मन में आता है । जब हम किसी कोठरी के आकार का ध्यान करते हैं तो हमारा ध्यान उस कोठरी के आकार के विषय में उस के दीवालों ही तक समाप्त हो जाता है परन्तु जब हम आंख उठा कर आकाश की ओर देखते और सोचते हैं तो किसी दीवार इत्यादि का होना मन में नहीं बैठता। 'यदिचेत् हम अपने ध्यान की समाप्ति करने के लिये ऐसी कोई दीवार मान भी लेवें तो उसी क्षण यह प्रश्न चित्त में उठता है कि उस दीवार के आगे फिर क्या है ? और इसी प्रकार उस दूसरी दीवार के आगे फिर क्या है इसी प्रकार बिचारते बिचारते बुद्धि और ज्ञान थक कर यही उत्तर देते हैं कि यह अनन्त है । अतएव उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर को कुछ जगह की कमी न थी कि उसने इस संसार को इतना ही बड़ा बनाया इसके और ही कारण हैं ॥

यदि हम अपने इस पृथ्वी को भली प्रकार देखें तो इस के मिट्टी, पानी, बायु में सर्वत्र जीव ही जीव भरे दिखाई पड़ते हैं जो बड़े से बड़े और छोटे से छोटे हैं यहां लों कि लाखों और करोड़ों जीव खुर्दबीन की सहायता से भी नहीं देखे जा सकते । प्रत्येक वृक्ष और प्रत्येक पत्ती न कि उन अनगिनित जन्तुओं का केवल निवासस्थान मात्र है परन्तु एक छो-

टी सी पत्ती हजारों ही जन्तु के जीवन पर्यन्त भोजन के लिये उपयुक्त है ॥

तो फिर जब हमारी इस छोटी सी पृथ्वी में कोई भी स्थान जीव जन्तु के निवास से खाली नहीं है तो यह कैसे मन में आ सकता है कि उस परम बुद्धिमान् ईश्वर ने यह आकाश जीव जन्तु से रहित रक्खा है, नहीं २ इस में लाखहां करोड़हां संसार पड़े हैं जो हमारी पृथ्वी से बहुत बड़े हैं और लाखों कोस की दूरी पर चक्कर लगाया करते हैं ॥

अब इतना विचार कर यदि हम थोड़ा और विचारें तो स्पष्ट जान पड़ेगा कि उस परम बुद्धिमान ईश्वर ने इस अनन्त आकाश में एक ही पृथ्वी बहुत लम्बी चौड़ी न बना कर क्यों हज़ारों पृथ्वी और ग्रह रचे हैं जिन में से हमारी पृथ्वी भी एक है परन्तु इस का उत्तर देने के पूर्व हम यहां इस समग्र चराचर प्रपंच का वर्णन करते हैं नकि केवल उन लोगों के लिये जो इसे जानते ही हैं परन्तु उन के लिये जो इस से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं ॥

इस चराचर प्रपंच के उस भाग में जिसे सूर्य-ब्रह्माण्ड (Solar System) कहते हैं (अर्थात् जिसमें हमारी पृथिवी भी है और जिस में सूर्य केन्द्र है) सूर्यके अतिरिक्त ६ और ग्रह (Planets) हैं और इन के अतिरिक्त और छोटे मोटे चन्द्रमा की नाई अनेक उपग्रह अपने २ ग्रह विशेष

के चारो ओर घूमा करते हैं जिन्हें हम दूरदर्शक यन्त्र के द्वारा जान सकते हैं। सूर्य तो केन्द्र है जिसके चारो ओर भिन्न २ दूरी पर ये छओं ग्रह वृत्ताकार घूमते हैं प्रत्येक ग्रह सूर्य के चारो ओर अपने नियत मार्ग पर घूमा करता है परन्तु उसी समय में वह अपनी कील पर भी फिरते लट्टू की नाईं कुछ झुक कर घूमता है। इसी प्रकार पृथ्वी के झुककर घूमने के कारण ऋतुओं का बदलना और रात दिन की बड़ाई छोटाई होती है यदिचेत् पृथ्वी खड़े लट्टू के नाईं घूमती तो रात दिन बराबर होते अर्थात् १२ घंटे का दिन और बारह घंटे की रात होती और सब ऋतु भी साल भर में एकसां होते। प्रत्येक ग्रह के अपनी कील पर एक बार घूमने से रात और दिन होता है और सूर्य के चारो ओर घूम जाने से एक वर्ष होता है अतएव हमारी पृथ्वी सूर्य के चारो तरफ एक बार घूमने में ३६९ बेर अपनी कील पर घूम जाती है * इन छ ग्रहों को प्राचीन तथा आधुनिक लोग भी निम्नलिखित नाम से पुकारते हैं मर्क्यूरी (बुध) वीनस (शुक्र) हमारी यह पृथ्वी, मार्स (मङ्गल), जुपिटर (बृहस्पति), और सेटर्न :(शनि)। ये और तारों से नेत्र को बड़े जान पड़ते हैं क्योंकि उन

* जो लोग यह विश्वास करते हैं कि प्रत्येक २४ घंटे में सूर्य पृथ्वी के चारो ओर घूमता है उनकी भूल उसी मल्लाह की नाईं है जो नाव को छोड़कर घाट को गून से खींचता है।

तारोंकी अपेक्षा कई लाख कोस हमारी पृथ्वी के समीप हैं शुक्र नहीं ग्रह है जिसे यमारे पाठक भली प्रकार जानते हैं जो सूर्योदय के पूर्व और सूर्यास्त के पश्चात् अधिक से अधिक तीन घण्टे तक दिखलाई पड़ता है जैसा पूर्व में कह चुके हैं कि सूर्य सब ग्रहों का केन्द्र है. जानना चाहिये कि बुध और ग्रहों की अपेक्षा सूर्य के अत्यन्त समीप है वह ३५०००००० मील सूर्य से दूर है यह सदा इतनी ही दूरी पर सूर्य के चारों ओर घूमता है दूसरा ग्रह शुक्र है यह सूर्य से ६७०००००० मील दूर है अतएव बुध के वृत्त से बड़े वृत्त में सूर्य के चारों ओर घूमता है। तीसरा ग्रह हमारी पृथ्वी है जो ९९०००००० मील सूर्य से दूर है अतएव शुक्र से भी बड़े वृत्त में सूर्य के चारों ओर घूमता है । चतुर्थ ग्रह मङ्गल है यह सूर्य से १३४०००००० मील दूर है अतएव यह पृथ्वी की अपेक्षा बड़े वृत्त में सूर्य के चारों ओर घूमता है। पांचवां ग्रह बृहस्पति है यह सूर्य से ५९७०००००० मील दूर है अतएव मङ्गल से भी बड़े वृत्त में सूर्य के चारों ओर घूमता है । छठवां ग्रह शनि है यह सूर्य से ७६३०००००० मील दूर है अतएव यह ऐसे वृत्त में घूमता है कि जिसके अन्दर सब ग्रहों के वृत्त आ जाते हैं ॥

तो अब देखना चाहिये कि केवल हमारे सूर्य ब्रह्माण्ड के लिये आकाश में कितना स्थान है शनि के वृत्त का व्यास ९५२-

१००००००० मील है इसके दृष्टान्त विद्यमान १००००००००००० मील है और इसके वृत्त का क्षेत्र फल ३१४०००००००००० × ३६०००००००००० वर्ग मील हुआ + ॥

यह सब केवल एक सूर्यब्रह्माण्ड का वृत्तान्त हुआ इस के उपरान्त आकाश में करोड़ों और अनेकों गिनती और

+ यदि कोई यह प्रश्न करे कि मनुष्य इन बातों को कैसे मानता है तो उसका यह उत्तर है कि मनुष्य गणित द्वारा ग्रहण का हाल जान लेता है और शुक्रोदय का वृत्तान्त भी जान लेता है अर्थात् अपने गणित द्वारा यह बतला सकता है कि किस साल किस मिनिट पर शुक्र हमारे और सूर्य के बीच होकर जाता हुआ बड़े मटर के दाने की नाईं सूर्य बिम्ब पर दिखाई पड़ेगा यह शुक्रवेध रूपी संयोग अनुमान १०० वर्ष में केवल दो बेर ८ वर्ष के आगे पीछे हो जाता है जिसका हाल पहले ही से गणित द्वारा मालूम हो जाता है। यह वृत्तान्त हज़ारों वर्ष पूर्व मनुष्य बतला सकता है और ठीक ज्यों का त्यों उतरता है। सो यदि मनुष्य इस सूर्यब्रह्माण्ड के वृत्तान्त तथा ग्रहों की गति से अभिज्ञ न होता तो यह बातें कैसे बतला सकता। अतएव हम जानते हैं कि मनुष्य का एतद्विषयक ज्ञान ठीक है, हां इतने लम्बे चौड़े हिसाब में दो चार

बुद्धि के आगम्य है स्थिर ग्रह पाये जाते है, ये ग्रह स्थिर इसलिये कहलाते हैं कि ये इन पूर्व कथित छ ग्रहों की नाईं सूर्य के चारो ओर नहीं घूमते। ये स्थिर ग्रह सदा एक दूसरे से नियत दूरी और एक ही स्थान पर हमारे सूर्य की नाईं स्थिर हैं। सम्भव है कि ये स्थिर ग्रह भी कोई सूर्य ही होंगे और जिस प्रकार हमारे सूर्य के चारो ओर हमारी पृथ्वी और षट् ग्रह घूमते हैं उसी प्रकार इनके चारो ओर भी अनेक ग्रह घूमते होंगे परन्तु वे इतनी दूर हैं कि हम उन्हें किसी प्रकार नहीं देख सकते।इसी प्रकार सोचने से जान पड़ता है कि इस अनन्त आकाश में पग्रहां पग्र ग्रह तारे और सूर्य पड़े है और जैसे हमारी पृथ्वी में कोई स्थान जीवजन्तु-रहित नहीं है उसी प्रकार यह अनन्त आकाश भी केवल शून्यही नहीं है। इस प्रकार इस चराचर ब्रह्माण्ड का कुछ वर्णन करके हम पूर्व-कथित विषय को वर्णन करते हैं कि क्यों उस परम बुद्धिमान् जगदीश्वर ने एकही बहुत बड़ा संसार न बनाकर अनेक संसार रचे हैं॥

यह बात सदा स्मरण रखने के योग्य है कि हमारे विज्ञानशास्त्र की जड़ केवल इन ग्रहों के घूमने और उनके सूर्य के चारो और चलने ही पर जमी है, यदिचेत् यह सब सामान कि जिससे सब भिन्न २ ग्रह और संसार बने है एक ही में मिले होते तो यह सूर्य परिक्रमारूप गति न होती तो फिर यह

विज्ञान भी कहां से होता और किस प्रकार मनुष्य का इतना आनन्द और सुख होता जिस्की जड़ केवल विज्ञानहीं है ॥

क्योंकि ईश्वर ने कोई चीज़ व्यर्थ नहीं बनाई है अतएव यह विश्वास होना चाहिये कि उसने इस चराचर ब्रह्माण्ड को इस प्रकार बनाने और स्थित करने में मनुष्य का लाभ समझा है ॥

अनेक ब्रह्माण्ड और संसार होने से केवल हमी लोगों को लाभ नहीं है परन्तु इतर ब्रह्माण्डनिवासियों को भी इसी प्रकार इस्से लाभ होता है और उन्हें भी हमारी नाईं अपने विज्ञान बुद्धि बढ़ाने का अवसर प्राप्त होता है । जैसे हम उनके ग्रह को चलते देखते है उसी प्रकार वे हमारी पृथ्वी की भी गति देखते हैं, इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह एक दूसरे को चलता देखता है सो अपने विज्ञान और बुद्धि बढ़ाने का अवसर उनके हाथ में है ॥

ज्यों २ हम इस चराचर ब्रह्माण्ड के विस्तार और रचना को विचारते है त्यों २ उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की बुद्धिमत्ता और कृपा अधिक २ पाते हैं । ऐसी अवस्था में अब कहिये हम लोग खीष्ट धर्म को क्या कहै जिसके मत में कूपमण्डूक की नाईं जमा कुल २५००० मील घेरे की केवल यही पृथ्वी है—यह पृथ्वी तो ऐसी छोटी है कि यदि कोई मनुष्य वृत्ताकार चल सकै तो ३६ मील रोज़ के हिसाब से

केवल दो वर्ष के अन्दरही समाप्त हो जाय । खेद का विषय है कि क्रिस्तानों के ईश्वर की शक्ति और बुद्धि बहुत ही थोड़ी जान पड़ती है ।

अब विचारिये कि यह कैसे सम्भव हो सकता है कि जिस जगदीश्वर के यहां पद्महां पद्म संसार एक से एक पड़े हैं वह और सभों को छोड़कर हमारे इस तुच्छ संसार में मरने के लिये आये क्योंकि किसी पुरुष और किसी स्त्री ने इन क्रिस्तानों के मतानुसार कोई वर्जित फल खा लिया था: तो क्या हम यह भी विश्वास कर लेवें कि इन पद्महा पद्म संसार के प्रत्येक पृथ्वी में एक हौवा, एक वर्जित फल, एक सर्प और एक मसीह हुआ है ? ऐसी अवस्था में तो उस विचारे मनुष्य की क्या दशा होगी जिसे ये लोग ईश्वर का पुत्र या स्वयं ईश्वर बतलाते हैं क्योंकि उसे तो एक पृथ्वी से दूसरी पृथ्वी और एक ब्रह्माण्ड से दूसरे ब्रह्माण्ड में जनमते ही मरते बीतेगा और एक क्षण भी जीवित अवस्था में न रहेगा क्योंकि इसके अतिरिक्त तो उसे दूसरा कामही न ठहरा ॥

ऐसे २ प्रत्यक्ष प्रमाणों के आंख में धूल डाल कर यह विलक्षण ख्रीष्ट धर्म उत्पन्न हो गया है जिस्की ऐसी अपूर्व रचना है कि मानो उस्की एक २ बात बुद्धि और सत्यता के पीछे लाठी लेकर खड़ी है कि जिस्में सत्यता का लेश भी उनके अलौकिक धर्म मे न छू जाय । जिन लोगों ने ख्रीष्ट धर्म की

शिक्षा पहिले पहिल आरम्भ की थे कदाचित् यह कहेंगे कि तत्समय के प्रचलित महा अन्धकार के धर्म से तो यह बहुत अच्छा था । हां यह कपटसम्बन्धी शिक्षा प्रथम शिक्षक से दूसरे शिक्षक के पास आई दूसरे से तीसरे के पास आई योंही होते होते ये लोग इस कपटशिक्षा की आदि उत्पत्ति को तो भूल गये और उसे सच मानने लग गये; यहां लों कि जिन की रोटी एतद्विषयक शिक्षा से ही चलती थी उन्होंने तो इस कपटमय शिक्षा के प्रचार में किसी प्रकार कसर न की ।

यदिचेत् ऐसा विश्वास साधारण लोगों को हो भी तो भला इस प्रश्न का वे क्या उत्तर रखते हैं कि क्यों ये लोग विज्ञान शास्त्र के उन्नतिकारकों के मार्ग में कंटक होकर पड़ते थे ! और क्यों सदा नवीन बातों के आविष्कार में बाधा दिया करते थे ! ऐसे आचरण से स्पष्ट विदित है कि वे लोग इस बात से भली प्रकार अभिज्ञ थे कि एक न एक दिन विज्ञानशास्त्र की उन्नति से उनके पोले धर्म का मर्म खुल जायगा ।

इस प्रकार चराचर ब्रह्माण्ड रूपी ईश्वर के सच्चे बचन ...र मनुष्यकल्पित किसी पुस्तकरूपि ईसाईकथित ईश्वर-...न में भेद दिखला कर हम उन मुख्य मुख्य बातों का वर्ण-...रते हैं जिसे सुना सुना कर एतत्सम्प्रदाय वाले लोगों को ... जाल में फँसाया चाहते हैं ॥

ये तीनों बातें गुप्तभेद वाक्सिद्धि † और भविष्यवाणी हैं प्रथम दोनों बातें तो सत्य धर्म में होई नहीं सकतीं तीसरी बात अत्यन्तही सन्देहपूर्ण है ।

गुप्तभेद के बारे में तो हम जो कुछ देखते सुनते हैं सभी एक प्रकार गुप्तभेद। है स्वयम् हमारा जीवन भी एक गुप्तभेद है और फूल पत्ते लता वृक्षादि भी तो गुप्तभेद ही हैं, हम नहीं जानते और नहीं कह सकते कि गुठली को पृथ्वी में बो देने से क्यों और कैसे आम का वृक्ष हो जाता है ? । हम यह भी नहीं जानते कि बोये हुये बीज किस प्रकार फल फूल कर इस भांति एक २ के सौ सौ और हज़ार हज़ार देते हैं ।

ये वृत्तान्त यदि कार्यकर्ता कारण से भिन्न समझा जाय तो कुछ भी गुप्त नहीं है क्योंकि यह तो हम देखतेही हैं। उस्के उपकरण भी हमें मालूम हैं क्योंकि यह तो बीज को उपयुक्त पृथ्वी में केवल बो देना ही ठहरा अतएव इस विषय में जितना जानना हमको आवश्यक है हम जानते हैं, और इस कार्य का वह भाग जो नहीं जानते और जिसके जानने पर भी हम कुछ नहीं कर सकते है ईश्वर ने स्वयं अपने ही हाथ में रक्खा है * और वह इतना कार्य हमारे लिये कर देता है अतएव इस गुप्तभेद को न जानना ही हमारे लिये

† Miracle.

* सत्य के बैरी झूठ, छल, कपट इत्यादि अन्धकारमय ।

अच्छा है क्योंकि यह काम भी यदि ईश्वर ने हमारे सुपुर्द किया होता तो बड़ी दिक्कत होती क्योंकि हम इसका भेद जानने पर भी इस कार्य को नहीं कर सकते ॥

यद्यपि इस अभिप्राय से सभी उद्भूत वस्तुओं में गुप्तभेद है परन्तु जैसे प्रकाश में अन्धकार की अवस्थिति नहीं हो सकती उसी प्रकार नीतिशिक्षा में भी कोई गुप्तभेद नहीं हो सकता।

जिस ईश्वर पर हम विश्वास करते हैं वह सत्यवानों का ईश्वर है कुछ गुप्तभेद और छिपाने का ईश्वर नहीं। गुप्तभेद तो एक प्रकार सत्य का शत्रु है, सत्य कभी अन्धकार में नहीं छिपता और यदिचेत् कुछ समय के लिये यह अन्धकाराच्छादित हो भी जाय तो यह अन्धकार कुछ सत्यप्रयुक्त नहीं है किन्तु सत्य के वैरी का है * अतएव धर्म का सम्बन्ध ईश्वरविषयक विश्वास और नीतिशिक्षा होने के कारण गुप्तभेद और अन्धकार से कुछ नहीं हो सकता। ईश्वर की सेवा किसी मनुष्य की सेवा की नाईं नहीं किन्तु उस्की विलक्षण सेवा है, क्योंकि जैसे हम किसी मनुष्य की सेवा प्रत्यक्ष में कर सकते हैं वैसे उस्की सेवा नहीं कर सकते, उस्की सेवा करना यही है कि हम उसके रचे हुये चराचर के सुख और उन्नति के कारण होवें। यह बात संसार परित्याग करके एकान्तवासी हो कर केवल निज उन्नत्यभिलाषी होने से कभी नहीं हो सकती, सत्य धर्म में मनुष्य के लिये कोई छिपाव होना उचित नहीं है; धर्म कोई व्यापार

नहीं कि इसमें मार पेंच काट छांट और भेद की बातें हों, अतएव प्रत्यक्ष है कि इन स्त्रीष्टधर्मरचयिताओं ने जब निज अभिप्राय की सिद्धि के लिये अनेक बुद्धि विपरीत बातें प्रचलित कीं तो उनके छिपाव के लिये एक गुप्तभेद बना रक्खा था जहाँ किसी ने शंका की और जहां कोई बात समझ में न आई गुप्तभेद रूपी महामन्त्र सुनाकर जी छुड़ाया ॥

Miracle गुप्तभेद से भी कुछ बढ़ा बढ़ा है, गुप्तभेद तो चित्त को भ्रम में डालता है परन्तु Miracle सर्व-ज्ञानेन्द्रिय और बुद्धि को भाड़ में झोंकता है ॥

परन्तु इस विषय पर लिखने के पूर्व यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि Miracle शब्द का क्या अभिप्राय है। जैसे यह गुप्तभेद है उसी प्रकार सब कुछ Miracle भी है। हाथी यद्यपि बहुत बड़ा जन्तु है परन्तु चींटी से बढ़ कर Miracle नहीं है और न पर्वत परमाणु से बढ़ कर आश्चर्यमय है, सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर के सामने हाथी या पर्वत के बनाने में चींटी या परमाणु से कुछ अधिक परिश्रम नहीं है उसी प्रकार उसके लिये एक संसार और पद्मह्रा सप संसार का बनाना बराबर है, अतएव एक प्रकार से तो सभी वस्तु Miracle हैं। और दूसरी प्रकार से Miracle कोई चीज़ नहीं है, हां हमारी समझ और शक्ति के सामने तो यह Miracle है परन्तु उस कर्त्ता के सामने यह कुछ भी नहीं है परन्तु इतना कहने से

Miracle शब्द का ठीक अभिप्राय नहीं खुलता अतएव हम इस विषय में कुछ अधिक कहेंगे ॥

मनुष्यजाति ने कुछ नियम ऐसे विचार रक्खे हैं जिनके अनुसार प्रकृति का कार्य्य होता है परन्तु Miracle इनकी कृति और प्रतिफल के विरुद्ध होता है परन्तु जब लों हम उन सब नियमों के विस्तार से भली प्रकार अभिज्ञ नहीं हैं तब लों ठीक नहीं कह सकते कि जो बात हमारे जान में पहिले अत्यन्त आश्चर्य्यमय दीख पड़ती है वह वस्तुतः उन नियमों के अन्तर्गत वहिर्गत या विरुद्ध है । किसी जीवित पुरुष का कई मील पर्य्यन्त हवा में उड़ते हुये चले जाना निस्सन्देह Miracle जान पड़ता यदि हम यह न जानते कि साधारण वायु से भी कोई वायुविशेष अत्यन्त हलकी उत्पन्न हो सकती है और उसे गुब्बारे में बन्द करने से वह गुब्बारा बहुत दूर तक ऊँचे चढ़ जाता है, इसी प्रकार मनुष्य के शरीर से चकमक पत्थर की नाईं अग्निकण का निकलना भी Miracle होता यदि हम विद्युत् और मगनातीस के गुणों से अभिज्ञ न होते । इसी प्रकार जो लोग इन बातों के भेदू नहीं हैं उनके सामने विज्ञानशास्त्र की सी बातें Miracle ही होंगी । किसी मृतवत् मनुष्य पुनर्जीवित होना भी Miracle ही जान पड़ता यदिचेत् .. विषय हम न जानते कि प्राण वायु निकलने के पूर्व कहीं रुक भी जाती है जैसे पानी के डूबे हुये बाजे २ मनुष्य यद्यपि

देखने में मरे जान पड़ते हैं तथापि कुछ काल के अनन्तर जी उठते हैं ॥

इसी प्रकार हस्तलाघव और आपस की मिलावट से ऐसी २ आश्चर्य की बातें होती है जो देखने में Miracle ही जान पड़ती हैं परन्तु मालूम होने पर वे अत्यन्त सारहीन हैं; इसके अतिरिक्त यन्त्रों द्वारा भी अनेक प्रकार नेत्रों को धोखा होता है; फ्रांस, अमेरिका, इङ्गलैण्ड भारतवर्ष इत्यादि प्रदेशों में ऐसे २ बाज़ीगर हो गये और वर्तमान भी हैं जो अपने बुद्धिमत्ता के खेलों से Miracle के भी कान काटते है । सो जब कि हम प्रकृति और मनुष्य के बुद्धिविस्तार से पूर्णतया अभिज्ञ नहीं हैं तो कभी नहीं कह सकते कि जो बात देखने में Miracle जान पड़ती है वे वस्तुत प्रकृति के गुणों के अन्तर्गत हैं या नहीं, प्रायः इन्हें देख कर मनुष्य भूल कर अचम्भे में आ जाता है।

सो जब कि नेत्रों को इस प्रकार धोखा हो सकता है कि असत्य चीजें सत्य सी प्रतीत होती हैं तो भला क्या कभी मन में आता है कि सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर किसी बात की सत्यता प्रमाणित करने के लिये इन Miracle रूपी असत्य बातों का आश्रय ग्रहण करेगा कि जिस काम के करनेवाले को लोग मदारी या धोखेबाज़ समझें और जिसके वृत्तान्त कहनेवाले को मिथ्यावादी अनुमान करें ॥

किसी बात पर, विशेषतः धर्मसम्बन्धी विषय पर विश्वास

Miracle का साक्षीभूत वर्णन करता है तो सहसा एक प्रश्न चित्त में खड़ा होता है (परन्तु इसका उत्तर भी आपही हो जाता है) कि प्रकृति का नियमोल्लंघन करना सम्भव है या उस मनुष्य का मिथ्या कहना ! विशेष हमने अपनी जीवित अवस्था में प्रकृति का नियमोल्लंघन कभी नहीं देखा है परन्तु हजारों मनुष्यों को झूठ बोलते देखा सुना है अतएव Miracle की सत्यता पर लाख में एक विस्वा भी विश्वास नहीं जमता ॥

देखो ह्वेल मछली का यूनस को निगल जाना आश्चर्य सा ज्ञान पड़ता है । यद्यपि ह्वेल ऐसे सैकड़ों यूनस को निगल जा सकती है, परन्तु यदिचेत् यूनस ह्वेल मछली को निगल गया होता तो यह अलबत्ते Miracle ज्ञान पड़ता । ऐसी अवस्था में जैसे और सब Miracle के सन्देह का उत्तर हो जाता है वैसेही इसका भी उत्तर होता है कि इस विषय का होना सत्य है या इस व्यर्थ बात का प्रचारक मिथ्यावादी सा आचरण करता है ।

यदिचेत् यूनस ने ह्वेल मछली को निगल कर और उसे अपने पेट में डाल नीनवे नगर में जाकर वहां के निवासियों को विश्वास दिलाने के लिये उतना लम्बा चौड़ा ह्वेल उगल दिया होता तो वहांवाले उसे भविष्यवक्ता समझते या साक्षात् यमराज या कोई महापिशाच ! अथवा यदि उस ह्वेलही

दिखाने के लिये Miracle का प्रमाण देना अलन्नहीं असह्य है क्योंकि प्रथम तो विश्वास दिखाने के लिये Miracle दिखाने से ही प्रतीत होता है कि जिस वस्तु पर विश्वास दिलाया जाता है वहँ स्वयं सारभूत और विश्वास योग्य नहीं है, दूसरे Miracle दिखलाना मानो सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को मदारी की नाईं तमाशा दिखलाना और अपमानित करना है कि लोग उसके खेल को देखकर आश्चर्यान्वित हों, फिर यह Miracle एक विलक्षण प्रकार का प्रमाण है क्योंकि इसकी सत्यता के दूसरों के कहने पर है जो अपने तईं उसका साक्षीभूत बतलाता है अतएव उसका सत्य वा मिथ्या होना दोनों बराबर है ॥

मानों कि यदि मैं यह कहूं कि मैंने जब यह ग्रन्थ लिखना आरम्भ किया तो वायुमण्डल में से एक हाथ ने निकल कर मेरे हाथ से लेखनी लेकर इन सब बातों को स्वयं लिख डाला, भला क्या मेरा कोई विश्वास करेगा ? कदापि नहीं। यदि यह वृत्तान्त सत्य भी होता तो क्या कभी किसी प्रकार उनको विश्वास होता ? कपापि नहीं । तो जब सत्य और झूठ Miracle की एक ही दशा है तो हम कैसे विश्वास करें कि परम बुद्धिमान् जगदीश्वर ऐसे उपकरण से काम लेवे कि जिससे उसके सत्य होने पर भी इष्टसिद्धि नहीं हो सकती ॥

तो जब Miracle की स्थिति के लिये प्रकृति को अपने नियमोल्लंघन करने पड़ते हैं और जब कोई मनुष्य अपने तईं

Miracle का साक्षीभूत वर्णन करता है तो सहसा एक प्रश्न चित्त में खड़ा होता है (परन्तु इसका उत्तर भी आपही हो जाता है) कि प्रकृति का नियमोल्लंघन करना सम्भव है या उस मनुष्य का मिथ्या कहना ! विशेष हमने अपनी जीवित अवस्था में प्रकृति का नियमोल्लंघन कभी नहीं देखा है परन्तु हजारों मनुष्यों को झूठ बोलते देखा सुना है अतएव Miracle की सत्यता पर लाख में एक विस्वा भी विश्वास नहीं जमता ॥

देखो ह्वेल मछली का यूनस को निगल जाना आश्चर्य सा जान पड़ता है । यद्यपि ह्वेल ऐसे सैकड़ों यूनस को निगल जा सकती है, परन्तु यदिचेत् यूनस ह्वेल मछली को निगल गया होता तो यह अलबत्ते Miracle जान पड़ता । ऐसी अवस्था में जैसे और सब Miracle के सन्देह का उत्तर हो जाता है वैसेही इसका भी उत्तर होता है कि इस विषय का होना सत्य है या इस व्यर्थ बात का प्रचारक मिथ्यावादी सा आचरण करता है ।

यदिचेत् यूनस ने ह्वेल मछली को निगल कर और उसे अपने पेट में डाल नीनवे नगर में जाकर वहां के निवासियों को विश्वास दिलाने के लिये उतना लम्बा चौड़ा ह्वेल उगल दिया होता तो वहांवाले उसे भविष्यवक्ता समझते या साक्षात् यमराज या कोई महापिशाच ! अथवा यदि उस ह्वेलही

ने यूनस को इस प्रकार पेट में डाल नीनवा–नगर के सन्मुख उगला होता तो क्या उस ह्वेल को नह यूनस को उस्का गण न समझते ! ।

नये नियम में एक विलक्षण Miracle का वर्णन है, यह कि एक समय शैतान मसीह को लेकर चढ़ा और ऊँचे पर्वत की चोटी पर ले गया, और वहां से फिर मन्दिर के ऊँचे शिखर पर ले जाकर उसे समग्र कर यह कहा कि यदि तू हमारी पूजा करे तो यह समग्र सार का राज्य तुझे दे दें; भला उस समय उसने अमेरिका पना क्यों नहीं पाया ? इसका उत्तर क्रिश्चियन लोग देते हैं ? ।

हम मसीह को एक नीतिज्ञाता पुरुष मानते हैं विश्वास नहीं होता कि यह विलक्षण Miracle का स्वयं उसका कहा हुआ हो, फिर यह भी कुछ समझ नहीं पड़ता कि इस किस्से से क्रिस्तानों के धर्म में कौन सा लाभ पहुँचता है; ऐसी २ व्यर्थ की बातों से तो कितने भोले को शैतान पर भी अधिक विश्वास हो जाना सम्भव है ॥

जो कुछ हो यह पूर्णतया सिद्ध है कि प्रथम तो Miracle होना असम्भव और व्यर्थ है, दूसरे उसके कहनेवाले का विश्वास नहीं करता । यदि Miracle सत्य भी होते तो

यर्थही होते क्योंकि प्राकृतिक नियमों को तोड़ कर इनकी स्थिति का होना कदापि कोई विश्वास नहीं कर सकता। एक बात यह भी है कि Miracle एक ऐसी बात है जिस्का होना किसी विशेष समय में कहा जाता है और जिसके साक्षी एकही दो या दस बीस मनुष्य उस समय हों परन्तु इसके उपरान्त तो फिर मनुष्य के कथनमात्रही पर उस Miracle के होने अथवा न होने का विश्वास रह गया, अतएव धर्मसम्बन्धी बातों में Miracle की स्थिति उस धर्म को सत्य बनाने की अपेक्षा झूठा कर देती है, इतना तो गुप्तवार्ता और Miracle के विषय में हुआ अब भविष्यबाणी का हाल सुनिये कि---

जैसे गुप्तभेद भूत तथा वर्तमान अवस्था के लिये है वैसेही भविष्यवाणी भविष्य समय के लिये झूठा प्रपञ्च है, ये कल्पित भविष्यवक्ता एक प्रकार के इतिहासवेत्ता हैं यदिचेत् अचानक उनका कथन किसी प्रकार सत्य हो कर अन्धे के हाथ बटेर लग गई तो वाह वाह नहीं तो यूनस और निनवे के वृत्तान्त के नाई यह कह दिया कि ईश्वर ने पश्चात्ताप करके अपना चित्त बदल लिया है, भई वाह ! ये खीष्ट लोग किस प्रकार अपने ईश्वर बिचारे का उपहास कराते फिरते हैं ! ! !

इस ग्रन्थ के पूर्वभाग में हम यह वर्णन कर चुके हैं कि प्राफेट (भविष्यवक्ता) शब्द से एक प्रकार के गायकों का अभिप्राय समझा जाता है, परन्तु उनके कथन प्रायः ऐसे अ-

मैमून्य होते थे कि उसे यहूदीलोग घुमा फिराकर अपनी इ
च्छानुसार अर्थ निकाल लिया करते थे यहां लों कि जो बा
बाइबिल में समझ न पड़ी या किसी सनकी का टेरा सा मा
पड़ा तो उसे भविष्यवाणी बतला दिया ! ! !

यदिचेत् भविष्यवक्ता से उस मनुष्य का अभिप्राय सम
जाय कि जिसके द्वारा होनहार बातों का हाल ईश्वर पहिले
कह देता था तो अब यह प्रश्न है कि ऐसे मनुष्य सचमुच
या नहीं ! यदि थे तो यह आवश्यक है कि जिन शब्दों
भविष्यवाणी कही गई है वे समझने के योग्य हों नकि ऐ
शब्दों में हो कि जिसका अर्थ कुछ ठीक बुद्धि में न बैठता
या जिन्हें घुमा फिरा कर इच्छानुसार अनेक अर्थ निकाल लि
जांय और चाहे जिस होनहार विषय पर यह भविष्यवा
घटा ली जाय, यदिचेत् ऐसी बातों को भविष्यवाणी समझा जा
तो यह उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर का उपहास करना
मानों वह मनुष्यों को धोखा देने के लिये उनसे ठट्ठा कर
है। खेद का विषय है कि बाइबिल की सभी बातें जो भवि
ष्यवाणी कहलाती हैं ऐसी ही हैं ॥

भविष्यवाणी की वही अवस्था है जैसे हम Miracle
की कह आये हैं अर्थात् इसके सत्य होने पर भी अभिप्राय
सिद्धि नहीं हो सकती क्योंकि जिनके प्रति यह भविष्यवाणी
कही जायगी उन्हें इस बात का सन्देह ही बना रहेगा कि

यह मनुष्य यथार्थ भविष्यवक्ता है वा असत्यवादी है अथवा यह भविष्यत् विषय उसे यथार्थ ही ईश्वर द्वारा विदित हुआ है या उसने स्वयं अपने मन से बना लिया है और यदि उसका कहा विषय सत्यही हो जैसे और अनेक बातें रात दिन हुआ ही करती हैं वैसे यह भी हो तो भी यह सन्देह बनाही रहता है कि उसने यह बात अटकल से कह दिया या उसे यथार्थ ही उसका ज्ञान था, तो ऐसी अवस्था में भविष्यवक्ता का भी होना व्यर्थ और निष्प्रयोजन ही है तात्पर्य यह कि गुप्तवार्ता चमत्कारिक घटना और भविष्यवाणी तीनों की सत्यधर्म में कुछ आवश्यकता नहीं है, जो सच पूछिये तो इन्हीं सबों ने संसार में इतने बखेड़िये उत्पन्न कर दिये और धर्म को एक व्यापार बना दिया ॥

अब हम जो कुछ पूर्व में कह चुके हैं सभों का संक्षेपतः वर्णन कर जाते हैं क्योंकि ग्रन्थ बहुत बढ़ा जाता है ।

प्रथम-ईश्वर का वचन किसी छापे या हाथ की लिखी पुस्तक द्वारा नहीं हो सकता, उसके कारण हम पूर्वही लिख चुके हैं उन कारणों में से कुछ ये हैं; समग्र संसार में एक भाषा का न होना, समयानुसार भाषा का बदलना, अनुवाद इत्यादि दोषों के कारण [illegible] होना, समय के फेरफार से ऐसे वचन का पूर्णतया [illegible], मनुष्यों द्वारा उसका कमती बढ़ती और उसमें [illegible] । दूसरे यह प्रकृतिरचना जो हम देखते हैं

ईश्वर का सत्य वचन है जिसमें हमें कोई धोखा नहीं दे सकता इससे उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की शक्ति, बुद्धि, कृपा और दयालुता प्रगट होती है ॥

मनुष्य का धर्म इसी में है कि वह ईश्वररचित संसार को देख कर उससे भलाई और दूसरों पर कृपा करना सीखे। हम नित्य ईश्वर की कृपा मनुष्यों के प्रति देखते हैं सो यही सर्वसाधारण के प्रति मानो शिक्षा है कि हमें दूसरों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये जिस्से यह स्पष्ट विदित है कि परस्पर बैर विरोध द्रोह इत्यादि करना और जन्तुओं पर निर्दयता करना उस्की नीतिशिक्षा को तोड़ना है ॥

यहां हम इस विषय पर कुछ नहीं लिखते कि इस जीवन के उपरान्त मनुष्य की क्या दशा होगी, हम इस विश्वास से सन्तुष्ट है कि जिस शक्ति ने हमको यह शरीर और जीवन दिया है वह अपनी इच्छानुसार चाहे जिस अवस्था में रख सकता है जिसमें इस शरीर का रहना आवश्यक नहीं है और [illegible] स [illegible] कि जैसे इस मानुषिक शरीर धारण करने के [illegible] स्थिति थी वैसेही इस जीवन के उपरान्त भी कोई [illegible]ति अवश्य रहेगी ॥

[illegible] निश्चित है कि संसार के समग्र जाति और सब मत- का मत इस विषय पर मिलता है कि सभी एक ईश्वर [illegible] विश्वास करते हैं; झगड़े की जगह केवल यही है जो इस

विश्वास से पीछे बनी है अतएव यदिचेत् कभी कोई धर्म या विश्वास समग्र संसार में फैलेगा तो उसमें कोई नवीन बात न होगी परन्तु इन्हीं सब व्यर्थ की बातों को काट छांट कर एक ईश्वर पर विश्वास जमेगा; अतएव सब लोगों को उचित है कि इस खीष्ट धर्म सरीखे व्यर्थ बकवाद को छोड़ कर उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर पर स्नेह और विश्वास रख कर उसी का पूजन और मान यथोचित रीति से करें ॥

इति ।

ईसाईमतखंडन।

द्वितीय भाग।

अर्थात्

जिस में ख्रीष्टमतावलम्बियों के धर्म्म की यथार्थ दशा झलकाई गई है, और जिसे बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारत-जीवन ने उनलोगों के हित के लिये जो इस धर्म के पूर्णतया भेदू नहीं हैं प्रकाश किया है।

यह पुस्तक बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारतजीवन के पास बनारस में मिलेगी।

काशी।

राजराजेश्वरी प्रेस में छापा गया।

सन् १८८४ ई०।

प्रथम बार १०००]   [मूल्य।)

दूसरा खंड ।

श्रीमङ्गलमूर्तये नमः

—•()•—

श्रीगणेशाय नमः ।

ख्रीष्टमतावलम्बी प्रायः कहा करते हैं कि बाइबिल से सब का प्रमाण हो सकता है परन्तु बाइबिल का प्रमाण तो तब माना जा सकता है कि जब पहिले बाइबिलही की सत्यता प्रमाणित हो ले; क्योंकि यदि बाइबिलही असत्य ठहरी या उसके सत्यता में सन्देह हुआ तो वह दूसरे की सत्यता प्रमाणित करने में प्रमाण नहीं मानी जा सकती ।

बाइबिल के टिप्पणीकारों तथा समग्र ख्रीष्ट पंथे पुरोहितों का यह काम है कि वे संसार में बाइबिल को सत्यता की खानि तथा ईश्वर का बचन बतलाते हैं; वे लोग बाइबिल के भिन्न २ आयतों का भिन्न २ प्रकार का अर्थ लगाकर आपस में लड़ते झगड़ते हैं, एक कहता है कि अमुक आयत का यह अर्थ है दूसरा ठीक उसके विपरीत अर्थ करता है और तीसरा कहता है कि नहीं ये दोनों भ्रान्त हैं जो मैं कहता हूं सोई सत्य है:—भई वाह इसी को बाइबिल समझना कहते हैं !!!

इस ग्रंथ के प्रथम भाग के लेख पर जितने उत्तर मैंने देखे हैं वे सब पादरियों के लिखे हुये हैं। ये पादरि लोग भी अन्य धर्म पुरुषों की नाईं परस्पर एक दूसरे को फाड़े खाते हैं, और जिन पर बाइबिल समझने का दावा करते हैं—सभी भिन्न २ अर्थ बूझते हैं, परन्तु सभी सबसे उत्तम समझते हैं; सो उनका इस छोड़ किसी में सहमत नहीं होता कि "टामसपेन" बाइबिल का अर्थ नहीं समझता ! ! !

अब इस व्यर्थ के झगड़ों में सिर दुखाने की अपेक्षा इन बिचारे पादरियों को जानना चाहिये कि सबके प्रथम यह आवश्यक है कि बाइबिल को ईश्वर का वचन कहने में कोई उचित और दृढ़ प्रमाण है या नहीं !

उस ग्रन्थ के लेखानुसार कितनेही ऐसे कार्य्य "ईश्वर की आज्ञा" से किये गये हैं जिन्हें पढ़ या सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और उन कार्य्यों पर मनुष्यता तथा दया न होने के कारण ऐसी घृणा होती है जैसे चंगेजखां, अल्लाउद्दीन, या नादिरशाह के कृत्यों पर ग्लानि होती है। जब हम उन पुस्तकों में यह पढ़ते हैं जो मूसा और यहूशूआ की लिखित प्रसिद्ध हैं कि इसरायल लोग चोरी से उन समग्र जातियों पर टूटे जिन्होंने उनका कुछ भी अपराध न किया था और "उन्होंने उन सबों को तलवार से काट डाला, न बच्चों और न बूढ़ों को छोड़ा, उन्होंने पुरुष, स्त्री और बालकों को एक दम नाश

कर डाला यहां लों कि एक भी जीवित व्यक्ति को जीवित न छोड़ाः—यही बातें अत्यन्त उद्दण्डता के साथ बार २ उस ग्रंथ में लिखी गई हैं; भला क्या हम मान लें कि ये सब बातें यथार्थ में सत्य हैं? क्या हम यह विश्वास कर लें कि उस जगदुत्पत्तिकारक दयालु ईश्वर ने ऐसे कामों के करने की आज्ञा दी थी! । और क्या हम यह विश्वास कर लें कि जिन पुस्तकों में ऐसी २ व्यर्थ बातें लिखी हैं वे ईश्वर के बचन हैं और उसकी इच्छानुसार रचे गये हैं ? कभी नहीं कभी नहीं ॥

लोगों का यह विश्वास, कि किसी किस्से की प्राचीनता उसकी सत्यता का प्रमाण है पूर्णतया भ्रम है, प्रत्युत यह तो उसका और भी मिथ्यात्व प्रतिपादक अर्थात् झूट बनानेवाला है क्योंकि जो इतिहास जितना पुराना होता है उतनी उसमें किस्से कहानी की बातें पाई जाती हैं । प्रत्येक जाति विशेषत यहूदी लोगों की उत्पत्ति किस्से कहानियों से आरम्भ है । यह बात अत्यन्त विचारणीय और शोचनीय है कि उन्होंने अपने निर्दय प्रकृतिकृत अपराध और हत्याओं को ईश्वर आज्ञाकृत बतला दिया है । बाइबिल से विदित है कि ये कृत्य स्वयम् ईश्वर की आज्ञा से किये गये ! ! ! अतएव बाइबिल की सत्यता पर विश्वास करने से हमें ईश्वर की दयालुता पर अविश्वास करना होगा क्योंकि सोचिये तो कि बिचारे अन्नदुधपीने बच्चों ने ईश्वर का क्या अपराध किया था, या वे बड़

अपराध कर सकते ! ! ! यथार्थ में कोई प्रेमी, दयालु औ
कृपालु मनुष्य बाइबिल को बिना निज रोगटें खड़े किये न
पढ़ सकता । उस ग्रन्थ में जो २ बातें दयालुता इत्यादि
विरुद्ध हैं सो तो हई हैं परन्तु इनके अतिरिक्त हम इस ग्रन्थ
ऐसे २ प्रमाण देंगे कि जिन्हें ये खीष्ट पांथे पुरोहित भी कि
प्रकार अस्वीकार नहीं कर सकते और उन्हीं प्रमाणों द्वा
यह प्रमाणित करेंगे कि यह बाइबिल ग्रन्थ कभी ईश्वर का
चन कहने योग्य नहीं है ॥

परन्तु इन प्रमाणों के लिखने के पूर्व हम यह विचार क
रते है कि दूसरे प्राचीन ग्रन्थों की सत्यता के प्रमाण तथा इ
बाइबिल की सत्यता के प्रमाणों में कितना और कैसा अन्तर
क्योंकि उत्तर में खीष्ट लोग प्रायः यही कहा करते हैं कि
जैसे और प्राचीन ग्रन्थों का प्रमाण है वैसेही बाइबिल का प्र
माण भी हो सकता है मानो यह कोई नियम ठहरा कि ए
प्राचीन ग्रन्थ की सत्यता सब प्राचीन ग्रन्थ की सत्यता क
प्रमाण होगी । मइ वाह रे बुद्धि का प्रकाश ! ! ! . .

प्राचीन ग्रन्थों में यूकलिड * रचित रेखागणित नाम

* इतिहासानुसार जानो जाता हैं कि युकलिड नाम
: ।‹ मसीह से २००० वर्ष और आर्किमिडीज़ से १०
पूर्व हुआ था । यह पुरुष मिश्र प्रदेश के अलक्जेण्डरिय
... नगर का रहनेवाला था ।

ग्रन्थही ऐसा है जिस्की सत्ता पर संसार में कोई भी बुद्धिमान पुरुष सन्देह नहीं कर सकता क्योंकि इस ग्रन्थ की सत्यता स्वयं उस ग्रन्थही से झलकती है:—इसकी सत्यता प्रमाणित करने में इस्के ग्रन्थकार का समय, स्थान या और ऐसी बातों की आवश्यकता नहीं पड़ती। उस ग्रन्थ में जो बातें लिखीं हैं वे तब भी सत्य होती और हैं यदिचेत् उस्का रचयिता दूसरा कोई होता या ग्रन्थकार ने अपना नाम न लिखा होता अथवा ग्रन्थकार का नाम हमें आज पर्य्यन्त न मालूम होता क्योंकि ग्रन्थकार के निर्णय होने पर कुछ उस ग्रन्थ के विषय की सत्यता का निर्भर नहीं है। परन्तु मूसा, यशुआ या सामुयेल लिखित पुस्तकों की बातही दूसरी है, क्योंकि ये साक्षी की पुस्तकें हैं और ऐसी २ बातें लिखते हैं जिन पर स्वाभाविक अविश्वास होता है अतएव इन पुस्तकों को प्रमाणित मानने में हमारा समग्र विश्वास प्रथम तो इसी पर निर्भर है कि वे यथार्थ में उन्हीं लोगों की लिखी पुस्तकें हैं जिनके नाम से वे प्रसिद्ध हैं या दूसरों ने लिख दी हैं! दूसरे इसपर, कि हम उनके बचन को कहां लों विश्वास कर सकते हैं। फिर हम यह निर्णय करने पर भी कि अमुक २ मनुष्यों ने इस ग्रन्थ को लिखा है उनके लेख पर विश्वास नहीं कर सकते, ठीक उसी प्रकार जैसे हम किसी मनुष्य की साक्षी देने पर भी उसकी साक्षी पर सन्देह कर सकते हैं परन्तु यदि यह प्रमाणित हो जाय कि जो २

ग्रन्थ मूसा, यहोशुआ और सामुएल की लिखे कहलाते हैं वे
वास्तव में उनके लिखे नहीं हैं तो इन दूसरों की सर्व साक्ष्य
हवा में उड़ जाय क्योंकि यह तो फिर बनावटी साक्षी ठहरें
और साक्षी भी उन बातों की जिनका स्वभावतः विश्वास नहीं
जमता; जैसे ईश्वर से प्रत्यक्ष में बात चीत करना, या सूर्य
चन्द्रमा का मनुष्य की आज्ञा से ठहर जाना, प्रायः बहुत से
प्राचीन ग्रन्थों में केवल बुद्धिविलास की चमत्कारिता है जैसे
होमर, प्लेटो, अरिष्टाटल, डिमास्थिनीज़ या सिसिरो प्रभृति के
रचित ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों के विश्वास या अविश्वास में अन्वेषण
की कुछ आवश्यकता नहीं है क्योंकि जब वे बुद्धिविलासही के
ग्रन्थ ठहरे तो उनकी योग्यता उतनीही है चाहे ग्रन्थकार के नाम
का पता हमें मालूम हो या नहीं । जैसे ट्रोजन वार या अकि
फलैला के किस्से पर कोई भी विश्वास नहीं करता परन्तु
उसके कवि होमर की सभी प्रशंसा करते हैं, कारण यह है कि
यद्यपि वह किस्सा झूठ हो तथापि कवि के काव्य की प्रशंसा
की जाती है । परन्तु यदि होमर के लेख की नाईं हम बाइबिल
के रचयिता मूसा इत्यादि का भी अविश्वास करें तो मूसा की
गिनती जालरचयिताओं के अतिरिक्त दूसरों में नहीं होती
प्राचीन इतिहासलेखकों का हेरोडेटस से टासिटस पर्य्यन्त हम
वहांहीं लों विश्वास करते हैं कि जहां लों वे स्वाभाविक अवि
श्वसनीय बातों का वर्णन नहीं करते, क्योंकि यदि हम स

वीश्वास करें तो हमें टासिटस के उस लेख का भी विश्वास करना होगा जहां वह दिखाता है कि वेसपेशियन ने अपनी आज्ञा से एक लँगड़े और एक अन्धे को आरोग्य कर दिया:— यह लेख ठीक वैसाही है जैसा मसीह के इतिहासलेखक उसके विषय में लिखते हैं । ऐसी अवस्था में तो हमे "रेड सी" के किस्से की नाईं प्यम्फिलिया के समुद्र और सिकन्दर के किस्से का भी विश्वास करना होगा कि समुद्र बीच में से फट गया और सिकन्दर बादशाह की फौज सूखे में चली गई । बाइबिल की आश्चर्य्यघटनाओं की नाईं इन घटनाओं का भी प्रमाण मिलता है परन्तु इन्हें तो कोई भी विश्वास नहीं करता अतएव अस्वाभाविक बातों का विश्वास स्वाभाविक बातों की अपेक्षा मन में नहीं जमता चाहे उनका वर्णन बाइबिल में हो या अन्यत्र । अतएव बाइबिल के पक्षपाती यह नहीं कह सकते कि हमें प्राचीन ग्रन्थों के कुछ विश्वास करने से बाइबिल का भी विश्वास करना होगा—कारण यह है कि प्राचीन ग्रंथों में भी सम्भव और विश्वासयोग्य बातोंही का तो विश्वास करते हैं या यूक्लिड सरीखे स्वत.सिद्ध बातों का प्रमाण मानते हैं।

अब हम बाइबिल की सत्यता के निर्णय पर विशेष ध्यान दे कर पहिले उन पांच ग्रन्थों की परीक्षा करते हैं जो मूसा के लिखे कहलाते है जिनके नाम ये हैं (१) उत्पत्ति की पुस्तक (२) यात्रा की पुस्तक (३) लेवी की पुस्तक

(४) गिनती की पुस्तक और (५) निवाद की पुस्तक। हम यह प्र
माणित करते हैं कि ये पुस्तकें इस ग्रन्थकार की लिखी नह
हैं अर्थात् मूसा इनका रचयिता नहीं है तिस पर विशेषता य
है कि ये मूसा की जीवित अवस्था क्या उसके मृत्यु के क
सौ वर्ष उपरान्त लिखी गई हैं—हम इस ग्रन्थ में यह भली प्र
कार प्रमाणित करेंगे कि ये पुस्तकें किसी महामूर्ख और अ
की लिखी हैं जिसने मूसा की मृत्यु के कई सौ वर्ष उपरान्त उ
सका जीवनचरित्र लिखने का उद्योग किया है और उसके जी
वित अवस्था तथा च उसके जन्म के पूर्व का वृत्तान्त लिखने
की इच्छा की है; इस कार्य्य में उस लेखक की वही दशा हुई
है जैसे कोई पुरुष आजकल कई हज़ार वर्ष पूर्व के इतिहास
लिखने का उद्योग वे जड़ बुनियाद पर करें ॥

इस विषय में हम जो २ प्रमाण देंगे वे सब इन्हीं ग्रन्थों
से दिये जायँगे और केवल इन्हीं शाक्षियों पर हम निर्भर करेंगे।
हमारी यही इच्छा है कि हम ऐसे विपक्षियों से उन्हीं की
रणभूमि पर उन्हीं के बाइबिल नामक शस्त्र से सामना करें ॥

प्रथम तो इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि मूसा को
इन ग्रन्थों का रचयिता कौन कहता है न जाने लोगों ने यह
, कहां से, कैसे और क्यों उड़ा दी हैं। इन ग्रन्थों की लि
१८ और ढङ्ग से विश्वास होना तो दूर रहा यह भी किसी
९ मन में नहीं आता कि मूसा ने इन्हें लिखा हो क्योंकि

उसकी लिखावट और उक्ति का ढङ्ग ठीक वैसाही है जैसे कोई दूसरा मनुष्य मूसा के विषय में लिखता हो ॥

उत्पत्ति की पुस्तक का तो सभी वृत्तान्त मूसा के समय से पूर्व का है उस पुस्तक में तो मूसा का नामोल्लेख तक भी नहीं है; रहीं यात्रा, लेवी और विवाद की पुस्तकें, इनका समग्र लेख प्रथम पुरुष (Third Person) में है जैसे "ईश्वर ने मूसा से यों कहा" "या मूसा ने ईश्वर से यों कहा" अथवा "मूसा ने लोगों से यों कहा" या "लोगों ने मूसा से यों कहा" अब विचारने का स्थान है कि यह उक्ति का ढङ्ग उन इतिहासलेखकों का सा है जो किसी व्यक्तिविशेष के जीवनचरित्र या कार्यों का वर्णन करते हैं यदि यह मान लिया जाय कि वक्ता या लेखक भी अपने तईं प्रथम पुरुष में लिख सकता है अतएव मूसा ने भी ऐसाही किया तो मान लेना कोई प्रमाण नहीं है, सो यदि खीष्ट लोगों के पास मान लेने के अतिरिक्त और कोई प्रमाण इस विषय का नहीं है तो वे इसके उत्तर देने की अपेक्षा चुप कर रहें तो उत्तम होगा ॥

अस्तु मूसा का इस प्रकार प्रथम पुरुष में बोलने का अधिकार हमने माना क्योंकि कोई भी मनुष्य प्रथम पुरुष में बोल सकता है तो इन पुस्तकों के विषय में मूसा को अत्यन्त हास्यास्पद और अज्ञ बनाये विना हम यह नहीं मान सकते कि इनका लेखक मूसाही था जैसे गिनती के १२ वें पर्व की

६ आयत देखिये जहां यों लिखा है "अब यह मूसा नामक पुरुष पृथ्वी तल के सब मनुष्यों से सुशील वा गम्भीर (Meek) था" यदि मूसा ने अपने विषय में यह कहा है तो सुशील वा गम्भीर होने की अपेक्षा उसकी गिनती संसार भर के भारी घमण्डी और आत्मश्लाघियों में होती है सो अब ऐसी अवस्था में खीष्ट लोगों को दोनों पक्ष खुले हैं चाहे जिस पक्ष को स्वीकार कर लें यदि इन ग्रन्थों का रचयिता मूसा नहीं है तो इन ग्रन्थों का क्या प्रमाण ठहरा, यदि है तो ऐसे ग्रन्थकार का क्या विश्वास ? क्योंकि अपनी सुशीलता, गम्भीरता वा सुजनता का स्वयं अहङ्कार करना इन सद्गुणों के बाहर है और एक प्रकार की असत्यता है ॥

इन चारो पुस्तकों की अपेक्षा विवाद की पुस्तक में तो सब से दृढ़ प्रमाण इस बात का मिलता है कि मूसा उसका लेखक नहीं है इस ग्रन्थ का ढङ्ग नाटक का सा है; इसके लेखक ने थोड़ी भूमिका बांधने के उपरान्त मूसा का प्रवेश बोलते हुये कराया है और जब वह मूसा की लम्बी चौड़ी वक्तृता समाप्त करा चुका तो उसने पुनः अपनी वक्तृता आरम्भ की है। इसके उपरान्त उसने पुनः मूसा का प्रवेश कराया है और अन्त में उसकी मृत्यु अन्तिम क्रिया और स्वभाव का वर्णन करके अपनी वक्तृता समाप्त की है ॥ इस प्रकार इस ग्रन्थ में ४ बेर वक्ताओं का अदल बदल हुआ है, पहिले पर्वकी पहिली आयत

से लेकर ५ वीं आयत के अन्त लों तो ग्रन्थकार की उक्ति है यहां से मूसा की वक्तृता आरम्भ है जो चौथे पर्व की ४० वीं आयत के अन्त में समाप्त होती है। यहां लेखक ने मूसा को छोड़ दिया और इस बात का इतिहास आरम्भ किया कि जो कुछ मूसा अपनी जीवित अवस्था में कह गया था उसके उपलक्ष में क्या २ किया गया॥

ग्रन्थकार इस विषय को पुनः ५ वें पर्व की पहिली आयत से आरम्भ करता है यद्यपि यहां उसने केवल यह कहा है कि मूसा ने इसरायल के लोगों को बुलाकर इकट्ठा किया तब उसने मूसा का पुनः प्रवेश कराया और २६ वें पर्व की समाप्ति पर्यन्त वक्तृता कराई है इसी प्रकार उसने २७ वें पर्व के आरम्भ में भी किया है और मूसा से २८ वें पर्व की समाप्ति पर्यन्त वक्तृता दिलाई है॥ २९ वें पर्व में पुनः लेखक ने पहिली और दूसरी आयत में अपनी उक्ति देकर मूसा का अन्तिम प्रवेश कराया है और उससे ३३ वें पर्व की समाप्ति पर्यन्त मवक्तृता समाप्त कराई है॥

इस प्रकार ग्रन्थकार मूसा की वक्तृता समाप्त करा स्वयं प्रवेश करता है और अन्तिम पर्व में समग्र अपनीही वक्तृता करता है यहां वह अपने पाठकों से यों आरम्भ करता है कि मूसा पिसगाह पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया वहां से उसने उस प्रदेश को देखा जिसके लिये ईश्वर ने इब्राहाम, इस्हाक और

गाड़ दिया था; मूसा मुआब के प्रदेश में मरा और आज लों (अर्थात् ग्रन्थकार के समय तक) किसी ने उसके कब्र का पता न पाया ॥

तब ग्रन्थकार लिखता है कि मूसा ११० वर्ष की अ में मरा। न उसकी आंखों की जोति मन्द हुई थी और न उ स्वाभाविक शक्ति घटी थी; अन्त में यह अज्ञात लेखक लि है कि आज पर्य्यन्त इसराएल के सन्तान में दूसरा कोई दे भविष्यवक्ता न हुआ जो मूसा की नाईं ईश्वर से मुंहा मुंह चीत करता ॥

इस प्रकार व्याकरण से यह प्रमाणित करके कि इ इन ग्रन्थों का लेखक नहीं है हम उन्हीं ग्रन्थों के ऐतिहासि और सामयिक प्रमाणों से यह सिद्ध करते हैं कि मूसा ग्रन्थों का रचयिता न था न हो सकता है अतएव अत्यन्त निर्द प्रकार से पुरुष स्त्री और बालकों के हत्याओं का वृत्तान्त इन ग्रन्थों में दिया है कभी ईश्वर की आज्ञा से नहीं हो सकता

यह प्रत्येक सच्चे आस्तिक का कृत्य है कि वह अपने दयालु और न्याई ईश्वर के प्रति बाइबिल के लगाये हुये झूठे अ वादों का अवश्य प्रतिकार करे और अपना कृत्य निबाहे।

वास्तव में विवाद की पुस्तक के रचयिता का पताही नहीं है कि वह कौन था—अस्तु जो हो परन्तु उसके मूसा-विष यक लेख परस्पर विरोधी हैं।

वह लिखता है कि "जब मूसा पिसगाह पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया (उतरने का हाल कहीं नहीं मिलता) तो उसकी वहां मोआब के देश में मृत्यु हुई और उसने उसे मोआब प्रदेश की तराई में गाड़ा" यह गाड़नेवाला कौन था कहीं कुछ पता नहीं लगता। यदि ग्रन्थकार का यह अभिप्राय है कि उसने (अर्थात् ईश्वर ने) उसे गाड़ा तो उसने (अर्थात् ग्रन्थकार ने) यह कैसे जाना और हम (अर्थात् पाठक लोग) उसे कैसे विश्वास करें क्योंकि यह तो हम जानतेही नहीं कि यह ग्रन्थकार कौन है और यह तो स्पष्टही है कि मूसा अपने गाड़ेजाने का वृत्तान्त स्वयं किसी प्रकार नहीं कह सकता॥

ग्रन्थकार का लेख है कि आजतक मूसा की कब्र का पता कोई नहीं जानता, आजतक से यह अभिप्राय है कि ग्रन्थकार के समय तक; तो भला उस ग्रन्थकारही ने कैसे जाना कि मूसा की कब्र मोआब की तराई में है क्योंकि इस आजतक शब्दही से झलकता है कि ग्रन्थकार मूसा की मृत्यु के बहुत दिनों उपरान्त हुआ है अतएव वह मूसा के गाड़ेजाने के समय उपस्थित नहीं था। फिर दूसरी बात यह है कि मूसा का स्वयं यह कहना कि मेरी कब्र का पता आजतक कोई नहीं जानता प्रत्यक्ष असम्भव है। यदि मूसाही को ग्रन्थकार माना जाय तो यह किस्सा उसी मूर्ख बालक की नाईं होगा जो किसी

कोने में छिपकर यों पुकारता है कि मुझे कोई नहीं खोज स-
कता—सो मूसा को भी कोई नहीं खोज सकता ॥

ग्रन्थकार ने यह कहीं नहीं लिखा है कि जो २ वक्तृता
उसने मूसा के मुख से कराई हैं वह उसने कहां से पाई थीं
अतएव हम यह अनुमान कर सकते हैं कि या तो यह सब
उस्की कपोलकल्पना * थी या उस्ने किसी से सुनके लिखा
था। इन दो बातों में से एक का सत्य होना सम्भव है क्योंकि
'विवाद की पुस्तक' के ५ वें पर्व में जो आज्ञापत्र लिखा है उ-
सकी चौथी आज्ञा तथा च 'यात्रा की पुस्तक के' २० वें पर्व
की चौथी आज्ञा में भेद है। यात्रा की पुस्तक में विश्राम दिन
के मानने का कारण यह लिखा है "तूं सातवें दिन विश्राम
कर............क्योंकि परमेश्वर ने ६ दिन में स्वर्ग और पृथ्वी
और सब कुछ जो उनमें है बनाया और सातवें दिन विश्राम
किया" इत्यादि—परन्तु 'विवाद की पुस्तक' में इस्के पवित्र मानने
का कारण यों लिखा है कि "यह वह दिन है कि जब इसरायल
के सन्तान मिश्र के बाहर आये अतएव तेरा प्रभू ईश्वर यह
आज्ञा देता है कि तू विश्राम के दिन को मान"। इसमें कहीं
भी कुछ उत्पत्ति का हाल नहीं है और न उसमें कहीं मिश्र
से आने का हवाला है। और भी बहुत सी बातें मूसा की
आज्ञा के नाम से इस ग्रन्थ में दी हैं वे दूसरे ग्रन्थों में नहीं

* मन की बनावटी बातें।

पाई जाती और उन्ही आज्ञाओं में यह निर्दय करुणाहीन आज्ञा २१ वें पर्व की १८।१९।२० औ २१ वीं आयत में दी है कि माता पिता अपने ढीठ और मगरे पुत्र को आज्ञोल्लंघन के कारण पकड़ कर पत्थरों की मार से मरवा डालें । परन्तु पांधे पुरोहित लोग 'विवाद की पुस्तक' का सदा उपदेश किया करते हैं क्योंकि उसमें पांधों को दशमांश कर देने की आज्ञा है और इसी पुस्तक के २५ वें पर्व की चौथी आयत के इस लेख को उन्होंने कर के विषय में बना दिया है कि तूं दावने के समय बैल का मुँह मत बांध । और यद्यपि यह अत्यन्त छोटी बात है तथापि लोगों का विशेष ध्यान दिलाने के लिये उन्होंने उस पर्व के आरम्भ की सूची में इसका नाम दे दिया है। अरे वाह रे खीष्ट! पांधों अपने मतलब के लिये तुमने बैल की भी उपमा स्वीकार करली। यद्यपि इस विवाद की पुस्तक के रचयिता का ठीक २ पता नहीं लगता तथापि यह स्पष्ट जान पड़ता है कि वह यहूदी पांधों या पुरोहितों में था और हम यह भी इस ग्रन्थ में प्रमाणित करेंगे कि वह कम से कम ३६० वर्ष मूसा के मरने के उपरान्त हुआ था ॥

अब हम ऐतिहासिक और सामयिक प्रमाणों को आरम्भ करते हैं, सामयिक प्रमाण जो कुछ होगा वह बाइबिलही से होगा क्योंकि हमारा अभिप्राय बाइबिल के अतिरिक्त दूसरे जगहों से प्रमाण देने का नहीं है परन्तु यही इच्छा है कि स्वतः बाइबिल

केहीः ऐतिहासिक और सामयिक प्रमाणों से यह सिद्ध है कि मूसा उन ग्रन्थों का रचयिता नहीं है जिनका लेखक वह कहलाता है; अतएव उचित है कि पहिले हम उन पाठकों के लिये जो कदाचित् इस विषय को न जानते होंगे यह सूचित कर दें कि प्रायः बड़ी २ बाइबिलों में पत्रों के चारो ओर कोने २ पर ऐतिहासिक विषयों का मसीह के पूर्व का सन् लिखा रहता है। हम "उत्पत्ति की पुस्तक" से आरम्भ करते हैं। इस पुस्तक के १४ वें पर्व में लिखा है कि जब ४ राजे मिल कर ५ राजाओं से लड़े तो उसमें लूत नामक एक पुरुष पकड़ा गया और उसे वे लोग धर ले गये और जब लूत के धरे जाने का समाचार इब्रहाम तक पहुँचा तब वह अपने भाई बन्धुओं को हथियार सजा लूत को छुड़ाने के लिये उनके पीछे पड़ा और उन्हें दान नामक प्रदेश तक पछियाये चला गया (१४ वीं आयत) ॥

यहां दान तक पछियाने के विषय में जो वक्तव्य है उसे हम पहिले एक उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं । भारतवर्ष के इतिहास से विदित है कि मुहम्मद तुगलक ने सन् १३३८ई० में अपने पागलपन के कारण देवगढ़ को दौलताबाद के नाम से बसाना चाहा और यत्किञ्चित् बसा भी दिया । यदि कोई ग्रन्थ विना सन् सम्वत् का ऐसा मिले जिसमें दौलताबाद का नाम पाया जाय तो यह स्पष्ट विदित है कि यह ग्रन्थ

सन् १३३८ ई० के पूर्व नहीं लिखा गया है। अतएव जब देवगढ़ का नाम दौलताबाद हुआ है तब ई० १३३८ के उपरान्त या उस सन् में वह ग्रन्थ लिखा गया है।

बस इसी प्रकार इस उदाहरण को यहां लगाते हैं और यह दिखलाते हैं कि मूसा की मृत्यु के कई सौ वर्ष उपरान्त दान नामक प्रदेश हुआ है अतएव मूसा उत्पत्ति की पुस्तक का रचयिता नहीं हो सकता, जहां यह "दान" तक पछियनिका वृत्तान्त दिया है।

बाइबिल में जिस स्थान का नाम दान लिखा है वह पहिले जेण्टाइल लोगों का स्थान था और "लैश" नाम से विख्यात था सो जब दान के वंशवालों ने इस प्रदेश को जीता तो उसे इब्राहाम के पड़पोते दान के नाम से प्रसिद्ध किया।

इसे प्रमाणित करने के लिये उत्पत्ति की पुस्तक से लेकर न्यायियों की पुस्तक के १८ वें पर्व तक देखना चाहिये जहां (सत्ताइसवीं आयत में) लिखा है कि वे (अर्थात् दानवाले) लैश के निवासियों पर टूटे जो सीधे और सज्जन थे, उन्होंने उनको तलवार की धार से काट डाला (बाइबिल में मारही काट तो भरा है) और नगर को अग्नि से जला दिया। उन्होंने वहां एक नगर बनाया (२८ वीं आयत) और रहे, और उस नगर का नाम अपने पिता के नामानुसार दान रक्खा परन्तु पहिले उस नगर का नाम लैश था॥

दान के वंशवालों का इस प्रकार लैश को लेने और उसका नाम दान रखने का वृत्तान्त न्यायियों की पुस्तक में सामसन के मरने के उपरान्तही दिया है। बाइबिल के अनुसार सामसन की मृत्यु मसीह से ११२० वर्ष पूर्व और मूसा की मृत्यु मसीह से १४५१ वर्ष पूर्व हुई है अतएव इन ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार मूसा की मृत्यु के ३३१ वर्ष बीतने के पूर्व उस स्थान का नाम दान नहीं रक्खा गया था॥

न्यायियों के ग्रन्थ के ऐतिहासिक और सामयिक क्रम में बड़ाही गड़बड़ है। सामयिक प्रमाण से तो लैश का लिया जाना और उसका नाम दान पड़ना मूसा के स्थानापन्न जोशुआ की मृत्यु के २० वर्ष उपरान्त ठहरता है और ऐतिहासिक क्रम से जैसा उस गून्थ में लिखा है यह वृत्तान्त जोशुआ की मृत्यु के ३०६ वर्ष औ मूसा की मृत्यु के ३३१ वर्ष उपरान्त पाया जाता है परन्तु दोनोही प्रकार से मूसा उत्पत्ति की पुस्तक का रचयिता नहीं ठहर सकता क्योंकि उसके समय में तो दान नामक कोई प्रदेश थाही नहीं; अतएव उत्पत्ति की पुस्तक का लेखक (जो कोई हो) उस समय में था कि जब लैश नगर का नाम दान पड़ चुका था; परन्तु यह कौन पुरुष था कोई भी नहीं जानता अतएव उत्पत्ति की पुस्तक के लेखक । कुछ पता नहीं है तो फिर उसका क्या विश्वास ?

अब हम पहिले की नाई एक ऐतिहासिक और सामयिक

प्रमाण दे कर यह सिद्ध करते हैं कि मूसा उत्पत्ति की पुस्तक का रचयिता नहीं था।

उत्पत्ति की पुस्तक के ३६ वें पर्व में एसौ के पुत्र और वंशवालों का विवरण दिया है, जो अदूमवाले कहलाते थे; और अदूम के राजाओं के नाम का एक सूचीपत्र भी दिया है जिसकी गिनती में यों लिखा है कि (३१ वीं आयत) "और वे इसराएलियों के सन्तान पर किसी राजा के राज्य करने से पाहिले अदूम के देश में राज्य कर गये हैं"।

अब यदि कोई लेख बिना सम्वत् का पाया जाय जिसमें ग्रन्थकार किसी व्यतीत वृत्तान्त का हाल लिखते समय यों लिखे कि ये बातें गदर वा अफ़ग़ानयुद्ध के पूर्व हो चुकी हैं तो यह स्वयं विदित है कि वह लेख किसी प्रकार गदर वा अफ़ग़ान युद्ध के पूर्व का नहीं है किन्तु इन घटनाओं के पश्चात् ही का है अतएव वह लेख किसी ऐसे व्यक्ति का नहीं है और न हो सकता है जिसकी मृत्यु गदर वा अफ़ग़ानयुद्ध के पूर्व हो चुकी हो।

प्रायः इतिहासों में बोलचाल की नाईं किसी वृत्तान्त का सम्वत् न कह कर किसी दूसरे भूत वृत्तान्त से उसका सम्बन्ध कह दिया जाता है इससे दोहरा लाभ है प्रथम तो यह कि सन् सम्वत् की अपेक्षा कोई भूत पूर्व वृत्तान्त अधिक स्मरण रहता है दूसरे यह कि ऐसा कहने से सन् या सम्वत् उसके

न्तर्गत रहता है तो इससे "एक पन्थ दो कान" होता है।

यदि कोई पुरुष किसी वृत्तान्त का हाल कहती समय यों कहे कि यह बात मेरे विवाह के पूर्व अथवा मेरे पुत्र के जन्म के पूर्व या मेरे काश्मीर अथवा चीन जाने के पूर्व हो चुकी है तो इससे यह स्पष्ट विदित है और होना चाहिये कि उस पुरुष का विवाह अथवा उसके पुत्र का जन्म हो चुका है या वह काश्मीर अथवा चीन प्रदेश देख चुका है । भाषा के नियमानुसार इस प्रकार के भाषण का कोई दूसरा अर्थ नहीं हो सकता अतएव जहां कहीं इस प्रकार का लेख पाया जाय वहां उसका यही अर्थ समझा जायगा क्योंकि इसी अभिप्राय से तो वह लिखाही गया है ।

अतएव जो आयत हम पूर्व में लिख चुके हैं अर्थात् "ये वे राजे हैं जो इसरायलियों के सन्तान पर किसी राजा के राज्य करने से पहिले अदूम के देश में राज्य कर गये हैं" उसका उल्लेख तभी सम्भव है जब कम से कम एक राजा इसरायल के सन्तान का ग्रन्थकार के समय में या उसके इससे भी पूर्व हो चुका हो—अतएव उत्पत्ति की पुस्तक का मूसा के समय में लिखा जाना तो दूर रहा इस प्रमाण से तो साऊल (इसरायलों का प्रथम राजा) के समय से पूर्व किसी प्रकार सिद्ध नहीं होता यदि यह लेख किसी ऐसे ग्रन्थ में लिखा होता जो इसरायल के राजाओं के उपरान्त अपना लिखित होना

स्वतः प्रतीत कराना तो इसमे किसी प्रकार का वक्तव्य न था—सो यह लेख ज्यों का त्यों "काल के समाचार की पुस्तक" में पाया जाता है जिसमें इसरायल तथा यहूदाह के राजाओं का ऐतिहासिक हाल दिया है। यह आयत और इसके उपरान्त समग्र ३६ वां पर्व्व (उत्पत्ति की पुस्तक का) एक एक शब्द पर्य्यन्त काल के समाचार की पुस्तक के पहिले पर्व्व से मिलता है। पाठकगण ४३ वीं आयत से देखना आरम्भ करें तो सब भेद खुल जायगा।

"काल के समाचार" के लेखक का यह लिखना कि "ये वे राजा हैं जो इसराएलियों के सन्तान पर किसी राजा के राज्य करने से पहिले अदूम में राज्य कर गये है" यथार्थ और उचित है क्योंकि उसे उन राजाओं का नाम लिखना था और उसने लिखा भी है जिन्होंने इसराएलियों के सन्तान पर राज्य किया:—परन्तु यह प्रत्यक्ष असम्भव है कि येही शब्द उस समय के पूर्व मूसा भी लिख जाता—बस तो इससे यह प्रमाणित होता है कि काल के समाचार की नकल ज्यों की त्यों उत्पत्ति की पुस्तक में लिखी गयी है—अब पाठकगण देखें कि उत्पत्ति की पुस्तक की प्राचीनता सब हवा में उड़ गई या कुछ बाकी रही !

जब इस प्रकार उत्पत्ति की पुस्तक से यह विश्वास कि मूसा उसका रचयिता है उठ गया जिस विचित्र विश्वास पर

यह ईश्वर का वचन माना जाता है तो इस पुस्तक का इ-नाही शेष रहा कि प्रथम तो इसके रचयिता का पता नहीं, दूसरे इसमें किस्से कहानियां, गप्प सप्प, दुनियां भर की सुनी सुनाई बकवादें भरी हैं। हौवा और सर्प का किस्सा, नूह और उसके जहाज की कपोलकल्पना अलिफ़लैला के किस्से के समान है; समान क्या इससे भी गये बीते हैं क्योंकि उनमें तो कुछ लालित्य और मनबहलाव भी है इसमें तो वह भी नहीं।

उसके अतिरिक्त मूसा के आचरण जो बाइबिल में लिखे हैं महाभ्रष्ट और घृणोत्पादक हैं जिन्हें सुनकर कभी तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं और कभी अत्यन्त घृणा होती है। यदि वे वृत्तान्त सत्य हैं तो मूसा वह अनर्थकारी था जिसने पहिले पहल धर्म के बहाने से बीसों युद्ध किये और कराये और इसी टट्टी की आड़ में हजारों ऐसे अत्याचार और अनर्थ कराये जो आज लों कदाचित् किसी जाति के ऐतिहासिक वृत्तान्त में नहीं पाये जाते और जिनके आगे चङ्गेज़खां तथा नादिरशाह सरीखे अत्याचारियों के अन्धेर और अत्याचार भी पसङ्गे में हो जायँ, उदाहरण में हम एक वृत्तान्त प्रकाश करते हैं।

जब यहूदियों की सेना एकबेर लूट मार करके लौटी तो उसका वृत्तांत गिन्ती की पुस्तक के ३१ वें पर्वकी १३ वीं आयत में यों लिखा है "तब मूसा और इलिअज़र याजक और मण्डली के समस्त

प्रधान उन्हें आगे से मिलने के लिये छावनी में से बाहर गये और मूसा सेना के प्रधानों से और सहस्त्रों के पतिन से और सैकड़ों के पतिन से जो लड़ाई से आये क्रुद्ध हुआ। और मूसा ने उनसे पूछा कि क्या तुमने सब स्त्रियों को जीती रक्खा! देखो इन्होंने बलआम की मन्त्रणा से इसराएल के बंश को फ़गूर के विषय में परमेश्वर के विरोध में अपराध करवाया सो परमेश्वर की मण्डली में मरी पड़ी। सो अब लड़कों में से हर एक बेटे को और हर एक स्त्री को जो पुरुष से संयुक्त हुई हो मार डालो। परन्तु उन बेटियों को जो पुरुष से संयुक्त न हुई हों अपने लिये जीती रक्खो"।

यदि यह वृत्तान्त सत्य है तो मूसा से बढ़ संसार भर में कभी कोई दूसरा महानीच प्रकृति का पुरुष मिलना असम्भव है जिसने मनुष्यता के नाम पर कलङ्क इस प्रकार लगाया है—देखिये यहां स्पष्ट रीति से बच्चों के मारने, माताओं के हलाल करने और पुत्रियों से व्यभिचार करने की आज्ञा है।

अब यदि कोई माता अपने तईं ऐसी अवस्था में विचारे तो उसकी क्या दशा होगी; उसका एक बच्चा तो पहिले मारा गया दूसरा उसकी आंखों के साम्हने मारा जाता है और स्वयम् भी बिचारी कस्साइयों के साथ में पड़ी टुकुर २ मुंह ताकती है!!! हा! क्या दशा बिचारी उस कन्या की होगी जिसके मा और भाई उसके सन्मुख ही बध किये गये और

उस बिचारी को भी मानम् उन्हीं हत्यारों के हाथ से अपने सतीत्व (कन्यापन) के नष्ट होने का भय हो रहा है !!! हाय ! हाय !! जहां ऐसी २ बाते हैं क्या वह सत्यवचन है !!!

इस घृणित आज्ञा के अनन्तर लूट और उसके विभाग का वृत्तान्त दिया है—यहां पापों की लालन और बालबच्चे सब अपराधों से बढ़कर है जैसे ३७वीं आयत में देखिये "और परमेश्वर के कर में ६७५ भेड़ बकरियां थीं, और गाय बैल छत्तीस सहस्र थे जिनमें से ७२ परमेश्वर के कर में थे, और और गदहों में से जो तीस सहस्र पांच सौ थे परमेश्वर के कर में एकसठ थे। और मनुष्यों में से जो १६००० थे परमेश्वर के कर में ३२ जन हुये"—थोड़े में तात्पर्य्य यह है कि इस पर्व्व तथा और भी बाइबिल में कई जगहों पर ऐसे २ वृत्तान्त दिये है जो मनुष्यता या सभ्यता से बाहर हैं; क्योंकि इस पर्व्व की ३९ वीं आयत से विदित है कि मूसा की आज्ञानुसार जो कारी लड़कियां व्यभिचारिणी हुईं उनकी गिनती ३२ सहस्र थी।

प्रायः लोग यह नहीं जानते हैं कि इस बाइबिल नामक कल्पित ईश्वर के बचन में क्या २ बुराईयां भरी हैं । वे इसे सत्य और भली पुस्तक इस लिये मानते हैं क्योंकि आरम्भही से उनको ऐसी शिक्षा दी गई है—वे लोग सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की कृपा को उस पुस्तक पर ले जाते हैं जिसे वे विश्वास करते हैं कि वह ईश्वर की आज्ञा से लिखी गई है। हे ईश्वर! हे

जगदीश ! ! यहां तो बातही दूसरी है ! यह तो झूठ, कपट और कुफ़ की पुस्तक है क्योंकि इस्से बढ़कर कुफ़ और क्या होगा कि मनुष्य की की हुई बुराईयां सर्वशक्तिमान् ईश्वर की आज्ञा से हुई बता देना और अपना दोष बिचारे ईश्वर के सिर लगाना ! ! !

परन्तु हां, अब हम पुनः इसी विषय पर विचार करते हैं कि मूसा उन पुस्तकों का लेखक नहीं है जो उसके नाम से प्रसिद्ध हैं और बाइबिल केवल कपोलकल्पित गाथा है। जो दो प्रमाण हम पहिले दे चुके हैं बस वेही बाइबिल की सत्यता प्रगट करने लिये बहुत है क्योंकि यह सामर्थ्य इसी गृन्थ की है कि तीन चार सौ वर्ष के भविष्य वृत्तान्त को भूत वृत्तान्त लिख जाय—भला इतने उदाहरणों में क्या किसी प्रकार भविष्यवाणी का बहाना लग सकता है? वे वाक्य (Pluperfect Tense) प्रत्यक्षविपयागमन किया में लिखे हैं जिनमें कभी भविष्यवाणी की चालाकी नहीं लग सकती । और भी ऐसीही बहुत सी आयतें उन पुस्तकों में पाई जाती हैं जिनसे यह बात और भी दृढ़ होती है जैसे यात्रा की पुस्तक के १६ वें पर्व की ३४ वी आयत में देखिये (यह पुस्तक भी मूसालिखित कहलाती है) और इसराएल के सन्तान चालीस बरस लों जब लों कि वे बस्ती में न आये मन्न खाते रहे, जब लों कि वे कनआन की भूमि के सिवाने में न आये मन्न खाते रहे ।

अब इसराएल के सन्तानों ने मन्न खाया या नहीं य
यह मन्न क्या वस्तु थी यह कोई फल विशेष अथवा अन्न वि
शेष था जो कुछ हो इन बातों पर हमको वक्तव्य नहीं है ह
मारा तात्पर्य केवल यही दिखाने से है कि इस वृत्तान्त का
लिखनेवाला मूसा नहीं हो सकता क्योंकि यह बात तो मूसा
की मृत्यु के बाद हुई है मूसा तो बाइबिल के अनुसार (जि
समें विरुद्ध और झूठी बातें भरी हैं और चित्त में शङ्का होती है
कि किसे विश्वास करें और किसे न करें) जङ्गलही में मरा
था और कनान की भूमि की सीमा तक तो पहुंचाही नहीं तो
फिर वह कैसे कह सकता था कि इसराएल की सन्तान ने क्या
किया और वहां पहुँचने तक क्या खाया पिया । यह मन्न
खाने का वृत्तान्त जिसे ये लोग मूसा का लिखा बतलाते हैं
मूसा के स्थानापन्न जोशुआ के समय तक चला गया है जैसा
जोशुआ की पुस्तक से विदित है जबकि इसराएल के सन्तान
यर्दन नदी के पार होकर कनआन भूमि की सीमा पर पहुँचे
(जोशुआ की पुस्तक की ५ वें पर्व की १२ वीं
आयत देखो) और जब उन्होंने उस देश के पुराने अन्न खाये
उसी दिन से मन्न बरसना थम गया और इसराएल की स-
न्तानों के लिये मन्न था और उन्होंने उसी बरस कनआन देश
के उपजे हुये अन्न खाये ।

किन्तु विवाद की पुस्तक में इससे भी बढ़कर एक वृत्तान्त मिलता है जिससे मूसा का उन पुस्तकों का ग्रन्थकार प्रमाणित न ठहरने के अतिरिक्त यह भी विदित होता है कि उस समय में देवदानवों का कैसा विलक्षण विश्वास फैला था। विवाद की पुस्तक के ३ रे पर्व में मूसा के विजय वृत्तान्त में बशान के राजा ऊज़ के घेरे जाने का वृत्तान्त है ११ वीं आयत देखो "क्योंकि केवल बसान का राजा ऊज़ रह गया जो दानव के बंश में था देखो उसकी खाट लोहे की थी क्या वह अम्मून की सन्तान राबाथ में नहीं है मनुष्य के हाथों से उस खाट की लम्बाई ९ हाथ और चौड़ाई ४ हाथ की थी" इतना तो उस दैत्य के खाट का बर्णन हुआ अब ऐतिहासिक वृत्तान्त देखिये यद्यपि पूर्वलिखित प्रमाणों की नाईं यह प्रमाण उतना सीधा और प्रत्यक्ष नहीं है तो भी बाइबिल की सत्यता प्रगट करने के लिये भारी प्रमाण है।

लेखक महाशय ने इस दैत्य की सत्यता प्रमाणित करने के लिये उसके खाट के वृत्तान्त को लिखा है और उसे पुरानी बची हुई चीज़ लिख कर यों पूछा है कि क्या यह अमून के सन्तान राबाथ (राबाह) में नहीं है ? अर्थात् है, क्योंकि प्रायः यही रीति बाइबिल में पाई जाती है। परन्तु यह बचन मूसा का नहीं हो सकता क्योंकि मूसा न तो राबाह में था और न उसके विषय में कुछ जान सकता था। राबाह नगर इस दा-

नव का न था और न यह उन नगरों में था जिन्हें मूसा ने विजय किया था। अतएव इस खाट का रावाह में रहने का ज्ञान और उसके लम्बाई चौड़ाई का विस्तार तभी हो सकता है जब रावाह लिया जाय (अर्थात् उसका विजय हो) परन्तु मूसा की मृत्यु के चारसौ वर्ष बीतने से पहिले इसका विजय नहीं हुआ था जैसे द्वितीय सामुएल के बारहवें पर्व की २६ वीं आयत देखो "और यूअब (दाऊ का जेनरल) अमून के सन्तान के रब्बः से लड़ा और राजनगर ले लिया"।

हमारी कुछ यह इच्छा नहीं कि हम बाइबिल के सर्व स्थानिक और सामयिक विरुद्धताओं को प्रकाश करें जिनसे यह स्पष्टही विदित होता है कि मूसा उन गून्थों का लेखक नहीं हो सकता था और न वे पुस्तकें मूसा के समय में लिखी गई थीं—सो अब हम जोशुआ के पुस्तक की परीक्षा करते हैं और यह प्रमाणित करते है कि जोशुआ भी उन गून्थोंका लेखक नहीं है जो उसके नाम से प्रसिद्ध हैं सो उन गून्थों का भी कुछ विश्वास नहीं है। इसके लिये भी हम बाइबिलही में से प्रमाण देंगे क्योंकि झूठों को उन्हीं के मुंह से झूठा बनाना ठीक होता है।

जोशुआ की पुस्तक के प्रथम पर्व्व के अनुसार यह पाया जाता है कि मूसा की मृत्यु के उपरान्तही जोशुआ उसका स्थानापन्न हुआ; मूसा तो सैनिक पुरुष न था परन्तु जोशुआ था.

मूसा की मृत्यु से २५ वर्ष लों इसराएल की सन्तान पर सर्दार बना रहा मूसा की मृत्यु १४५१ वर्ष मसीह से पूर्व हुई है; सो जोशुआ ने मसीह के पूर्व १४२६ के साल तक सर्दारी की और उसी साल में उसकी मृत्यु हुई। सो यदि इस ग्रन्थ में भी जो जोशुआ-लिखित कहलाता है ऐसे वृत्तान्त पाये जांय जो जोशुआ की मृत्यु के उपरान्त हुये हैं तो स्पष्ट है कि यह जोशुआ कभी इस ग्रन्थ का रचयिता नहीं हो सकता और इससे यह भी प्रत्यक्ष है कि जो जो वृत्तान्त उस पुस्तक में लिखे हैं उनके अन्तिम वृत्तान्त के होने के समय तक के पूर्व यह ग्रन्थ नहीं लिखा जा सकता। वह ग्रन्थ भी स्वतः मार काट लूट पाट के वृत्तान्तों से भरा है और किसी प्रकार मूसा की निर्दयता से कम जोशुआ की निर्दयता नहीं प्रतिपादित होती।

प्रथम बात तो यह है कि मूसा की पुस्तकों की नाईं जोशुआ की पुस्तक भी प्रथम पुरुष में लिखी है:—वास्तव में यह जोशुआ के इतिहासलेखक की उक्ति है क्योंकि यदि जोशुआही की उक्ति मानी जाय, तो ६ वें पर्व की अन्तिम आयत का उसका यह लेख कि उसकी कीर्ति समग्र देश में फैल गई मूर्खता के अतिरिक्त अपने मुह मियांमिट्ठू की मसल हो जायगी—अस्तु इसे समाप्त करके हम दूसरे प्रमाणों को शीघ्र आरम्भ करते हैं।

२४ वें पर्व्व की ३१ वीं आयत में यों लिखा है कि

"इसराएल लोग जोशुआ के जीवन भर प्रभु की सेवा क
रहे और उन प्रधानों के जीवन पर्यन्त भी जो जोशुआ की मृ
के उपरान्त हुये हैं" । अब साधारण बुद्धि से विचारिये
कि क्या यह कभी सम्भव है कि जोशुआ स्वयम् अपनी मृ
के उपरान्त का हाल लिखे ? इसी को साधारण बुद्धि के
पर छूरी फेरना कहते हैं, यह उस इतिहासलेखक की उ
है जो जोशुआ के उपरान्त तो क्या प्रधानों के भी उपरा
हुआ है ।

और भी बहुत सी आयतैं इस पुस्तक में ऐसीही हैं जि
जोशुआ की मृत्यु के कई बरस उपरान्त का हाल मिलत
यद्यपि ठीक समय का निर्णय सन् सम्बत् से नहीं पाया ज
तथापि उनके लेखों से स्पष्ट विदित होता है कि वे जोशु
की मृत्यु के बहुत वर्ष उपरान्त की बातें लिखते हैं जैसे
वें पर्व में देखो जहां यों लिखा है कि जोशुआ की आज्ञ
सूर्य गिबियन पर्वत पर ठहर गया और चन्द्रमा अ
की तराई में स्थिर हो गया भई वाह ! क्या लड़कों के
लाने की कहानी लिखी है ! ! अस्तु १४ वीं आयत में
है कि "न तो इसके पूर्व और न इसके पश्चात् कोई दिन
हुआ कि जब ईश्वर ने किसी मनुष्य के बचन को इस प्र
सुना हो" ।

अब देखिये की सूर्य का गीबिनय पहाड़ पर ठ

और चन्द्रमा का अजेल्न की तराई में स्थिर हो जाना यह किस्सा है जिसका पोल स्वयम् इस किस्सेही से खुल जाता है यह ऐसी बात है कि यदि सत्य होती तो इसकी प्रसिद्धि समग्र संसार में भये बिना न रह सकती। आधे संसार में तो इस बात का आश्चर्य होता कि आज सूर्योदय क्यों नहीं होता और आधे संसारवाले इस आश्चर्य में रहते कि आज सूर्यास्त क्यों नहीं होता और यह बात समग्र संसार में फैल जाती; सो समग्र संसार तो दूर रहा किसी जाति में भी ऐसी भारी बात का रत्ती भर प्रमाण या पता नहीं मिलता परन्तु विचारिये तो चन्द्रमा के स्थिर होने की क्या आवश्यकता थी? सूर्य के प्रकाश के सामने विशेषतः दिन के समय विचारे चन्द्रमा की चांदनी विना क्या हानि थी? बस जान पड़ता है जो कुछ मुंह में आया विना बूझे विचारे बक दिया टीकहीं तो है "वचनेपि दरिद्रता!" हमारे जान तो यदि जोशुआ सूर्य चन्द्रमा दोनों को पकड़कर एक को अपने दहिने और दूसरे को बायें जेब में रख लेता और समय तथा इच्छानुसार निकाल २ कर रेल्वे ष्टेशन मास्टर कि नाईं उनसे प्रकाश करा लिया करता तो बहुत सुभीता होता!!!

उतना उपहास वा खेद इस ऊपर कहे हुये किस्से पर नहीं होता जितना इस ग्रन्थकार की मूर्खता पर होता है क्योंकि उसने अपनी अल्पज्ञता के कारण बिचारे जोशुआ को सूर्य

चन्द्रमा के स्थिर करने से मूर्ख बनवा दिया:—यदि उसने पृथ्वी को स्थिर किया होता तो इतनी भारी मूर्खता न होकर कुछ कम मूर्खता होती क्योंकि रात और दिन पृथ्वी के घूमने से होते हैं न कि सूर्य की गति से ।

हां, उस पूर्वकथित आयत में जो शब्द "न तो उसके पीछे" लिखा है उससे तथा समग्र पूर्वभूत समय के मिलान करने से बहुत काल का ज्ञान होता है नहीं तो उस आयत का गौरव ही नष्ट हो जायगा यदि इस पीछे के समय की अवधि एक दिन या एक सप्ताह अथवा एक मास या एक वर्ष मानी जाय तो अत्यन्त हास्यास्पद हो जायगा अत-एव उस आयत को सार्थ तथा समग्र पूर्वभूत काल की अपेक्षा इसके अद्भुत वर्णन को गौरवसंयुक्त करने के लिये कई सै वर्ष का समय मानना होगा एक सौ वर्ष से कम तो अत्यन्तही तुच्छ होगा और २०० वर्ष भी किसी विशेष गिनती में नहीं है, हां ३।४ सौ वर्ष मान लिया जाय तो किसी २ प्रकार वह आयत सार्थ होती है ।

इस पुस्तक के ८ वें पर्व से भी विदित है कि यह पुस्तक जोशुआ की मृत्यु के बहुत दिनों उपरान्त लिखी गई है जहां अई नगर के विजय के उपरान्त २८ वीं आयत में यों लिखा है "और जोशुआ ने अई को जला के उसे सदा के लिये ढेर ८ दिया सो वह आज लों उजाड़ है" । फिर अई के राजा

को जोशुआ ने जब फांसी दे दिया और नगर के फाटकही पर फेंक दिया तो २९ वीं आयत में लिखा है कि "उसने वहां पत्थरों का एक ढेर लगवा दिया जो आजलों वर्तमान है"; आज लों अर्थात् जोशुआ की पुस्तक के रचयिता के समय पर्यन्त लों। फिर १० वें पर्व में जब जोशुआ पांच राजाओं को पांच वृक्ष पर फांसी देकर एक कन्दरा में फेंक चुका यों लिखा है कि, "उसने बड़े २ पत्थर उस कन्दरा के मुंह पर खड़े कर दिये जो आज के दिन लों वर्तमान हैं"।

जोशुआ और उसके पक्षवालों की वीरताप्रदर्शन के गिनती के समय तथाच उनके विजय वर्णन में यों लिखा है (१९ वें पर्व की ६३ वीं आयत देखो) कि "परन्तु यबूसी जो थे यरूसलम में रहते थे सो उन्हें यहूदाह के सन्तान दूर न कर सके परन्तु यबूसी यहूदाह के सन्तान के साथ आज के दिन लों यरूसलम में रहते हैं"। इस आयत पर यह प्रश्न है कि यबूसी किस समय यहूदाह के सन्तान के साथ यरूसलम में रहते थे? क्योंकि यह बात पुनः न्यायियों की पुस्तक के प्रथम पर्व में पाई जाती है अतएव जब तक हम उस स्थान तक न पहुँचे तब तक हम इसकी समालोचना रोके रहेंगे॥

इस प्रकार बिना किसी दूसरी सहायता के केवल जोशुआही की पुस्तक से यह प्रमाणित करके कि जोशुआ इसका लेखक नहीं था अतएव उसका कोई प्रमाण नहीं है, हम न्या-

यियों की पुस्तक की परीक्षा आरम्भ करते हैं जिसका मन्द
किये जा चुके हैं ॥

न्यायियों की पुस्तक के देखतेही विदित होता है कि
इसके ग्रंथकार का पता नहीं है अतएव इस ईश्वर का वच-
नादि में पहचाना भी नहीं हो सकता:—इस ग्रंथ के लिखने-
(अर्थात् रचयिताही का) पता नहीं है।

यह पुस्तक भी जोशुआही के पुस्तक की नाईं आरम्भ
होती है जोशुआ का आरम्भ (प्रथम पर्व प्रथम आयत) यों
हैं कि "अब मूसा की मृत्यु के उपरान्त" इत्यादि—और न्या-
यियों की पुस्तक का आरम्भ यों है कि "अब जोशुआ की
मृत्यु के उपरान्त" इत्यादि—उस आयत तथा और भी लि-
खावट की समानता से जो इन दोनों ग्रंथों में मिलती है यह
प्रतीत होता है कि दोनों का रचयिता एकही पुरुष है परन्तु
यह कौन पुरुष था कुछ पता नहीं लगता; हां इतना तो उन
पुस्तकों से प्रमाणित होता है कि यह ग्रन्थकार जोशुआ की
मृत्यु के बहुत उपरान्त हुआ है; यद्यपि इसका ऐतिहासिक
वृत्तान्त जोशुआ की मृत्यु के उपरान्तही से आरम्भ होता है
परन्तु इस के पूरे पर्व्व में समग्र पुस्तक का संक्षेप वृत्तान्त दि-
या है जिस में बाइबिल के सामयिक प्रमाणानुसार ६०६ वर्ष
का हवाला दिया है अर्थात् जोशुआ की मृत्यु से लेकर साम-
. की मृत्यु पर्यन्त अर्थात् मसीह के १४२६ वर्ष पूर्व से

लेकर ११२० वर्ष पूर्व तक का हाल पाया जाता है अर्थात् साऊल के अपने पिता के गदहे खोजने और राजा होने के २९ वर्ष पूर्व तक का वृत्तान्त मिलता है—परन्तु यहां लों भी पता लगता है कि यह ग्रंथ कम से कम दाऊद के समय तक लिखा गया है और यही हाल जोशुआ की पुस्तक का भी है॥

न्यायियों की पुस्तक के प्रथम पर्व्व में ग्रन्थकार जोशुआ की मृत्यु का हाल लिखकर यह वृत्तान्त लिखता है कि यहूदाह की सन्तान और कनान के निवासियों में कैसा वर्ताव रहा और क्या क्या हुआ। इस कथन में लेखक ने अचानचक ७ वीं आयत में यरूसलम का नामोल्लेख करके ८ वीं आयत में स्पष्ट करने के लिये यों लिखा है कि "अब यहूदाह की संतान यरूसलम से लड़ चुके थे और उसे ले चुके थे", अतएव यह ग्रन्थ यरूसलम के लिये जाने के पूर्व नहीं लिखा जा सकता। पाठकों को स्मरण होगा कि हम अभी जोशुआ की पुस्तक के १९ वें पर्व्व की ६३ वीं आयत का हवाला दे चुके हैं जहां लिखा है कि "यबूसी यहूदाह की सन्तान के साथ आज के दिन लों रहते हैं" अर्थात् उस समय तक कि जब जोशुआ की पुस्तक लिखी गई थी॥

जो २ प्रमाण हमने इस बात के दिये हैं कि ये सब पूर्व लिखित ग्रंथ उन २ लोगों के लिखे नहीं हैं जिनके नाम से वे प्रसिद्ध हैं वे इतने हैं कि इस आयत पर हम विशेष दृढ़ता

नहीं करते, क्योंकि यदि बाइबिल का इतिहासरूपेण विश्वास किया जाय तो यरूसलम नगर का विजय दाऊद के पूर्व तक नहीं हुआ है अतएव जोशुआ और न्यायियों की पुस्तक दाऊद के राज्यारम्भ अर्थात् जोशुआ की मृत्यु के ३७० वर्षोपरान्त के पूर्व नहीं लिखी गई है।

जिस नगर का नाम पीछे यरूसलम रह गया इसका नाम पहिले यबूस या यबूसी था और यह नगरी यबूसी लोगों की राजधानी थी।

दाऊद का इस नगर के विजय करने का वृत्तान्त, सामुएल की दूसरी पुस्तक के ९ वें पर्व्व की चौथी इत्यादि आयतों में लिखा है और काल के समाचार की पहिली पुस्तक के १४ वें पर्व्व की चौथी इत्यादि आयतों में भी दिया है। इस के अतिरिक्त बाइबिल भर में कहीं भी इसका पूर्व विजय नहीं लिखा है और न कोई इस पक्ष का हाल पाया जाता है। सामुएल अथवा काल के समाचार की पुस्तक में यह कहीं नहीं लिखा है कि उन्हों ने "स्त्री पुरुष और बालकों को पूर्णतया नाश कर डाला और एक भी जीवित व्यक्ति को न छोड़ा" जैसे कि उनकी दूसरी विजयों में कहा है; यहां मार काट पर मौनावलम्बन करने से जान पड़ता है कि यहांवालों ने स्वतन्त्रार मान ली और वहां के निवासी यबूसी लोग उस नगर में ... वहीं पर वास करते थे"। अतएव जोशुआ की

स्तक का यह वृत्तान्त कि यबूमी लोग यहूदाह के सन्तान के साथ आज लों यरूसलम में रहते हैं उसी समय से मेल खाता है कि जब दाऊद ने उस नगर को विजय किया।

इस प्रकार यह प्रमाणित करके कि उत्पत्ति की पुस्तक से न्यायियों की पुस्तक पर्यन्त सभी अप्रमाणिक हैं हम रूत की पुस्तक की परीक्षा करते हैं जिसमें महा अश्लील और भ्रष्ट रीति से, न जाने किसने एक दरिद्री विधवा की कहानी लिखी है जो रात्रि के समय अपने एक बोआज नामक सम्बधी के पलङ्ग पर जो उसे बेटी २ कह २ पुकारता था जा लेटी और उससे व्यभिचार किया। छि! छि!! ऐसे भ्रष्ट किस्से को भी ईश्वर का बचन कहा है!!! इतने पर भी हम यह कहते हैं कि यह बाइबिल भर में सब से उत्तम पुस्तक है क्योंकि इसमें मार काट और हत्या इत्यादि का वर्णन नहीं है!!

अब हम सामुयेल की दोनों पुस्तकों की परीक्षा करते हैं और यह दिखाते हैं कि वे दोनों ग्रंथ सामुयेल के लिखे नहीं हैं वे तो *सामुयेल की मृत्यु के अनेक दिनोपरान्त लिखे गये हैं* और पूर्व पुस्तकों की नाईं इनके भी ग्रंथकार का पता नहीं है अतएव उनका भी कुछ विश्वास नहीं।

इस पुस्तक में ग्रन्थकार ने जो २ हाल लिखा है उसके पढ़नेही से जान पड़ता है कि ये पुस्तकें सामुयेल की मृत्यु के बहुत दिनोपरान्त लिखी गई हैं अतएव सामुयेल उनका रच-

यिता नहीं हो सकता—तनिक उस वृत्तान्त को पढ़िये जहां साऊल अपने पिता के खोये हुये गदहों की खोज में गया है और जहां उसको सामुयेल से भेंट हुई है जिसके पास वह उन खोये हुये गदहों का पता पूछने गया था, जैसे वाने २ मूर्ख आज कल खोई हुई वस्तु का पता लगाने के लिये दर्शनियों और ओझों के पास जाया करते हैं।

ग्रंथकार इस किस्से को इस प्रकार वर्णन नहीं करता जैसे कोई टटकी बात हो किन्तु उसके उल्लेख का ढंग ऐसा है कि जैसे वह अपने जीवित समय में किसी प्राचीन किस्से को लिखता हो क्योंकि उसके शब्द ऐसे हैं जैसे सामुयेल के समय के शब्द थे अतएव वह पीछे से उन्हे ऐसे शब्दों में लिखता और स्पष्ट करता है कि जिसमें उसके समय के पाठक लोग समझ सकें।

सामुयेल की पहिली पुस्तक के ९ वें पर्व में सामुयेल का नाम "दर्शनिया" लिखा है और इसी नाम से साऊल उनसे खोजता और लोगों से पूंछता फिरता था, ११ वीं आयत देखो जब वे * उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते थे तब उन्हें कई कन्यायें मिलीं जो पानी भरने जाती थीं और उन्हों ने उन से पूछा कि क्या दर्शी यहां है? तब साऊल इन कन्याओं के पता बताने के अनुसार गया और उससे सामुयेल से भेंट

* साऊल और उसके नौकर।

हुई परन्तु साऊल ने उसे न पहचाना और यह पूछा (१८ वीं आयत देखो) कि कृपा करके हमें यह बताइये कि दर्शी का घर कहां है। तब सामुएल ने साऊल को उत्तर दिया कि दर्शी मैंहीं हूं॥

क्योंकि सामुएल की पुस्तक के रचयिता ने इन प्रश्नोत्तरों को उस बोलचाल और ढंग में लिखा है जो सामुएल के समय में बोली जाती थी अतएव उसे स्पष्ट करने के लिये इन प्रश्नोत्तरों को पुनः उस समय की बोलचाल में झलकाना पड़ा जो ग्रन्थकार के समय में बोली जाती थी जो उसने ९ वीं आयत में यों लिखा है अगले समय में जब मनुष्य परमेश्वर से प्रश्न करने जाता था तब यह कहता था कि आओ दर्शी पास जावें क्योंकि आगमज्ञानी आगे दर्शी कहता था। इस से प्रमाणित होता है (जैसे हम पहले कह चुके हैं) कि यह साऊल, सामुएल और गदहे का वृत्तान्त ग्रन्थकार के समय में प्राचीन किस्सा था अतएव सामुयेल का लिखा नहीं हो सकता सो इस ग्रन्थ का भी कोई विश्वास न ठहरा।

परन्तु यदि हम इन ग्रन्थों में खूब डूब कर देखें तो इस में भी बढ़कर प्रमाण मिलते हैं कि सामुयेल इनका लेखक न था क्योंकि उन में ऐसे वृत्तान्तों का लेख पाया जाता है जो सामुयेल की मृत्यु के अनेक वर्ष उपरान्त हुये हैं। सामुएल की मृत्यु साऊल के पूर्व हुई थी क्योंकि सामुएल की पहली पु-

स्तक के २८ वें पर्व से विदित है कि साऊल ने एक मुर्दा स्त्री की सहायता से सामुयेल की मृत्यु के उपरान्त उसकी आत्मा को उठाया इस से निश्चित है कि सामुएल मर चुका था, तो फिर उसने साऊल का समग्र जीवनवृत्तान्त तथा दाऊद के राज्य का भी कुछ हाल कैसे लिखा!। इस ग्रन्थ के २५ वें पर्व में जो सामुएल की मृत्यु और गाड़े जाने का वृत्तान्त दिया है उसका लेखक सामुएल कैसे हो सकता है। बाइबिल के सामयिक प्रमाणानुसार सामुएल की मृत्यु मसीह से १०६० वर्ष पूर्व हुई है इस पर भी उसके पहलेही ग्रन्थ में मसीह से १०५६ वर्ष पूर्व अर्थात् साऊल की मृत्यु तक का हाल दिया है अब यह प्रश्न है कि सामुएल ने अपने ग्रन्थ में साऊल के मृत्यु का हाल कैसे लिखा!

सामुएल की दूसरी पुस्तक में दाऊद * के राज्यारम्भ से लेख चला है और दाऊद के राज्य के समाप्ति तक का हाल दिया है जो सामुएल के मृत्यु के ४३ वर्षोपरान्त ठहरता है अतएव इस ग्रन्थ के विषय में हम क्या लिखें पाठक लोग स्वयम् विचार लें।

अब हम बाइबिल के प्रथम भाग के उन सब पुस्तकों की परीक्षा कर चुके जिनके नाम में ग्रन्थकारों का नाम जब-

* साऊल की मृत्यु के उपरान्त दाऊद इसरायलों का राजा हुआ था।

देखी विस मारा है, और जिन्हें खीष्ट लोग संसार में यह प्रसिद्ध किये हुये है कि वे मूसा जोशुआ और सामुएल द्वारा लिखी गई हैं परन्तु हम उनकी असत्यता भी भली प्रकार प्रमाणित कर चुके है। अब कहिये ऐ कृपानिधान ! बुद्धिसागर ! खीष्ट महाशयो ! इस विषय में आप लोगों को क्या वक्तव्य है ! क्या फिर भी ऐसे २ प्रत्यक्ष प्रमाणों के आंख में धूल झोंक कर तुम नहीं २ आप लोग हमारे गली बाजारों में या अपने गिर्जाद्वार पर खड़े होकर विचारे भोले भालों को बहकाने का साहस करोगे ! और उन्हें यह उपदेश दोगे कि यह ईश्वर का बचन है ! जब तुम यही प्रमाणित नहीं कर सकते कि जिन्हें तुम इन पुस्तकों का ग्रन्थकार बताते हो वे वस्तुतः उनके रचयिता हैं। अब कहिये जो २ अपराध उनमें उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर को लगाये हैं उसका क्या प्रायश्चित करते हैं ! क्या इस कपोलकल्पित असत्य और अप्रमाणिक इल्हाम को प्रमाणित ठहराने के लिये कोई और प्रमाण तुम्हारे पास है ! यदिचेत् उन निर्दय हत्याओं की आज्ञा का पोषण जिससे प्रायः समग्र बाइबिल भरी है वा उन अगणित नरहत्या स्त्रीघात और बालहत्या के करने का अपराध तुम्हारे किसी ऐसे मित्र को लगाया जाना जिसे तुम अत्यन्त सत्कार करते हो तो क्या तुम अन्तःकरण से जल भुनकर ऐसे मनुष्य को दण्ड देने और उसे झूठा प्रमाणित करने का उद्यो-

ग न करते ! और अपने उस निर्दोषी मित्र के सत् चरित्र को इस वृथा कलङ्क से उज्ज्वल करने का परिश्रम न उठाते! इस में हम तुझारा दोष नहीं समझते क्योंकि तुमको जन्मही से ऐसी शिक्षा होरही है जो तुझारे हृदय ऐसे कठोर और निर्दय हो गये हैं कि तुझें बाइबिल के ऐसे करुणाहीन और असत्य लेखों पर घृणा या शङ्का नहीं होती!

अथवा तुझें अपने ईश्वर के मानापमान का कुछ भी विचार नहीं है; नहीं तो तुम हम इस प्रकार अपने आंखों के सामने उस करुणावरुणालय दयासागर असंख्यसद्गुणसम्पन्न ईश्वर का इस प्रकार तिरस्कार करना पुनः इस प्रकार तिरस्कार अपने आंखों के सामने होना सहन न करते । यद्यपि इन पूर्वलिखित और उन प्रमाणों से जो हम आगे इस ग्रन्थ में लिखेंगे तुझारे पोल का उद्घाटन होगा तथापि उन विचारे लाखों प्राणियों की शंका समाधान हो जायगी जो तुझारे इस प्रपंच के जाल में फँसकर इधर उधर उन सहायरहित पक्षियों की नाईं देखते हैं जिन्हें निर्दई बहेलिये अपने छल कपट से अपने जाल में बझा लेते हैं; उन असहायों के लिये यह पुस्तक कैंची रूप होकर उस जाल के काटने में सहायता करेगी ॥

अब हम राजाओं की दोनों पुस्तकों तथा काल के समाचार की दोनों पुस्तकों की समालोचना करते हैं । ये पुस्तकें

समस्त ऐतिहासिक हैं और इन में यहूदाह के राजाओं के जीवन तथा कार्य्यों का विशेषतः वर्णन है इन सब राजे के समाज को एक दुष्ट मण्डलही कहना चाहिये। परन्तु ये ऐसी बातें हैं कि इन से हमारा उतनाही सम्बन्ध है जैसे रूम की लड़ाई या अलिफलैलै के किस्से से हो । इसके अतिरिक्त जब इन के रचयिताओं का नामही नहीं मालूम है और न उनका कुछ पता लगता है तो हम उनके लेख पर कैसे और क्या विश्वास करें ! दूसरे प्राचीन इतिहासों की नाई इन में भी कहीं किस्से कहीं कहानियां, कहीं सम्भव, कहीं असम्भव वृत्तान्तों का झमेल भरा है जो अब समय और स्थान की प्रबलता से पूर्णतया भद्दे और अरुचिकारक हो गये हैं ।

इन पुस्तकों से हम केवल इतनाही काम लेते हैं कि उनका परस्पर तथा बाइबिल के भिन्न २ भागों से मिलान करके यह दिखलाते हैं कि इन कपोलकल्पित ईश्वर के बचनों में परस्पर विरोध निर्दयता तथा गड़बड़ की बातें भरी हैं ॥

राजाओं की पहिली पुस्तक सुलेमान के राज्य आरम्भ से आरम्भ होती है जो बाइबिल के सामयिक प्रमाणानुसार १०१५ वर्ष मसीह से पूर्व हुआ है, और दूसरी पुस्तक मसीह के ५८८ वर्ष पूर्व में समाप्त हुई है अर्थात् यदूकियाह के राज्य समाप्ति के थोड़ेही दिनोपरान्त तक, जिसे नबूकदनज़र राजा यहूदियों के विजय करने और यरूसलम के लेने के उ-

परान्त पकड़ कर बाबिलन में बँधुआ बना कर ले गया था इन दोनों पुस्तकों में ४२७ वर्ष का हाल दिया है।

काल के समाचार की दोनों पुस्तकों में इसी समय औ प्रायः इन्ही सब राजाओं का हाल किसी दूसरे ग्रंथकार ने लिखा है क्योंकि एकही ग्रंथकार एकही इतिहास को दो बेर लिखे यह विचारना महामूर्खता होगी। काल के समाचार कै पहिली पुस्तक के प्रथम नौ पर्व्वों में आदम से लेकर साऊल तक वंशावली दी है और फिर दाऊद के राज्य से आरम्भ किया है और दूसरी पुस्तक की समाप्ति में यहूकियाह के राज्य पर्यन्त अर्थात् मसीह के ५८८ वर्ष पूर्व तक का हाल दिया है। अन्तिम पर्व की अन्तिम दो आयतों से ५२ वर्ष क हाल और मिलता है अर्थात् मसीह से ५३६ वर्ष पूर्व तक का वृत्तान्त पाया जाता है; परन्तु वे आयतें इस ग्रंथ की नही हैं जिसे हम इज़रा की पुस्तक का हाल लिखते समय प्रमाणित करेंगे ॥

राजाओं की दोनों पुस्तकों में साऊल दाऊद और सुलेमान (जिन्होंने समग्र इसरायेल पर राज्य किया) के इतिहास के अतिरिक्त १७ और राजाओं तथा एक रानी का संक्षेप वृत्तान्त दिया है जो यहूदाह के राजा कहलाते थे और १९ उन राजाओं का हाल दिया है जो इसराएल के राजा कहलाते थे; इन दो दलों का कारण यह है कि सुलेमान की मृत्यु

के उपरान्तही यहूदी लोग दो दल में विभिन्न होकर अपने लिये भिन्न २ राजा ठहरा एक दूसरे से महाभयङ्कर युद्ध करते थे ॥

इन दोनों पुस्तकों में इतिहास तो क्या केवल मार काट छल कपट और जय पराजय का वृत्तान्त दिया है। जिन यहूदी लोगों को कनानियों पर अत्याचार का अभ्यास हो रहा था वे अब परस्पर आपसही में एक दूसरे के गले पर छूरी फेरने लगे; उन्के राजाओं में से आधे भी अपनी स्वाभाविक मृत्यु से नहीं मरे औ कईयों के तो कुल के कुल नाश करके दूसरा राजा उसकी गद्दी पर बैठ गया जो स्वयं भी पांच सात दस महीनों के उपरान्त उसी प्रकार मारा गया। राजाओं की दूसरी पुस्तक के १९ वें पर्व में लिखा है कि नगर के द्वार पर दो टोकरों में ७० लड़कों के सिर काट कर धरे थे; ये लड़के आहब राजा के पुत्र थे जो जेहू राजा की आज्ञा से मारे गये थे जिसे इलाइशा नामक नौवें भविष्यवक्ताने इसी लिये राज्यपद पर बैठाया था कि वह आहब के बंशवालों को इस प्रकार नाश करे। मनाहम के राज्यवृत्तान्त में भी जो शाल्म नामक राजा को मार चुका था जिसने केवल एकही महीने राज्य किया था यों लिखा है (राजाओं की दूसरी पुस्तक के १९ वें पर्व की १६ वीं आयत देखिये) कि मनाहम ने तियसह के नगर पर आक्रमण किया परन्तु जब नगर निवा-

सियों ने नगर का द्वार न खोला तो उसने उन्हें जीतने के उपरान्त उनकी उन सब गर्भिणी स्त्रीयों का जो वहां थीं, पेट फाड़ डाला ॥

यदि हम किसी प्रकार यह मान भी लें कि सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ने किसी जाति विशेष को "अपने चुने हुये लोगों" के नाम से स्थिर किया है तो यह अवश्य होना चाहिये कि वे लोग समग्र संसार के लिये मनुष्यता और सच्चरित्रता के उदाहरण हों और न कि अगले समय के यहूदियों की नांई डांकू लुटेरे और गरकट्टे हों; ये तो ऐसे लोग थे जिन्होंने मूसा हारून, जोशुआ, सामुएल और दाऊद सरीखे अत्याचारियों के उदाहरण सीख कर स्वयं ऐसे २ भ्रष्ट कर्म किये हैं जो संसार भर के सब जातियों से असभ्यता और दुष्कर्म में बढ़ गये। यदि हम जान बूझकर अपनी आंखें न बन्द कर लें और अपने कोमल हृदयों को पत्थर न बना लेवें तो यह कभी सम्भव नहीं है कि हम बाइबिल के इस केवल कर्ण-मधुर शब्द के झूठ अभिप्राय को न समझें "ईश्वर के चुने हुये लोग" !!! इस में नीरे झूठ के अतिरिक्त कुछ नहीं है जो यहूदियों के पांधे प्रोहित और सरदारों ने अपने नीचपन के छिपाने के लिये कपोलकल्पना की है और जिस पर वे खीष्ट लोग विश्वास करते हैं जो उन से किसी प्रकार निर्दयता में कम नहीं हैं ॥

काल की समाचार की दोनों पुस्तकों में इन्हीं अपराधों का पुनः उल्लेख है परन्तु इनके ग्रन्थकार ने कई राजाओं का वृत्तान्त छोड दिया है अतएव उनका इतिहास कई स्थानों में खण्डित है; इनमें और राजाओं की पुस्तक में भी कई जगह यहूदाह से इसराएल और इसराएल से यहूदाह का हेर फेर दिया है कि समग्र वृत्तान्त गड़बड़ हो जाता है। एकही ग्रन्थ में ऐतिहासिक विरोध पाया जाता है जैसे राजाओं की दूसरी पुस्तक के पहले पर्व की ८ वीं आयत में यद्यपि स्पष्ट रीति से लिखा है कि इसराएल के राजा अहाविआ की मृत्यु के उपरान्त आहब के वंश के जेहोरम या जोरम ने उसके स्थान में यहूदाह के बादशाह जेहोशफट के पुत्र जेहोरम या जोरम के दूसरे वर्ष में राज्य करना आरम्भ किया, और उसी पुस्तक के ८ वें पर्व की १६ वी आयत में लिखा है कि इसराएल के राजा आहब के पुत्र जोरम के राज्य के ९ वें वर्ष में जोहोशुफट ने जो यहूदाह का राजा था राज्य आरम्भ किया; अर्थात् एक पर्व कहता है कि यहूदाह वंश के जोरम राजा ने इसराएल वंश के जोरम राजा के दूसरे वर्ष में राज्यारम्भ किया और दूसरा पर्व कहता है कि इसराएल वंश के जोरम राजा ने यहूदाह वंश के जोरम राजा के ९ वें वर्ष में राज्यारम्भ किया।

एक इतिहास में जो अत्यन्त भारी बात किसी राजा के समय में दी है सो दूसरे इतिहास के उसी राजा के वृत्तान्त

में नहीं पाई जाती जैसे सुलेमान की मृत्यु के उपरान्त जो दो विरोधी राजा हुये हैं उनके नाम रेहोबोआम और जेरोबोआम हैं—अब राजाओं की पहली पुस्तक के १२ वें और १६ वें पर्व में यह हाल दिया है कि जब जेरोबोआम राजा वेदी पर बलिदान चढ़ा और धूप जला रहा था तो एक मनुष्य (जिसे वहां ईश्वर का मनुष्य कहा है) वेदी के विरुद्ध में पुकार के यों बोला * "कि हे वेदि २ परमेश्वर यों कहता है कि देख यूसियाह नामक एक बालक दाऊद के घराने में उत्पन्न होगा और वह ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझपर धूप जलाते हैं तुझी पर चढ़ावेगा और मनुष्यों के हाड़ तुझ पर जलाये जावेंगे" "और ऐसा हुआ कि जब जेरोबोआम राजा ने ईश्वर के जन का कहना सुना जिसने बैतएल की बेदी के विरुद्ध पुकारा था तो उसने बेदी पर से अपना हाथ बढ़ा के कहा कि उसे पकड़ लेओ सो उस का हाथ जो उसने उस पर बढ़ाया था झुरा गया ऐसा कि वह उसे फिर सकोड़ न सका"।

इस में कोई भी सन्देह नहीं कि ऐसा भारी वृत्तान्त जो इसराइलियों के दो विभाग होतेही एक दल के सरदार पर दण्ड-रूपेण हुआ यदि सत्य होता तो दोनों इतिहासों में पाया जाता; यद्यपि आजकल के समय में क्रिश्चियन लोग अपने भविष्यवक्ताओं के सब लेखों का विश्वास करते हैं परन्तु

* १६ वें पर्व की दूसरी आयत देखो।

यह स्पष्ट जान पड़ता है कि वे भविष्यवक्ता और इतिहास लेखक एक दूसरे का विश्वास नहीं करते ... रण यही है कि वे परस्पर एक दूसरे के प्रपञ्च से भली प्रकार भेद थे।

राजाओं की पुस्तक में इलियाह नामक भविष्यवक्ता का बहुत लम्बा चौड़ा हाल दिया है। यह वृत्तान्त कई पर्वों में है और अन्त को राजाओं की दूसरी पुस्तक के दूसरे पर्व के ११ वीं आयत में यों समाप्त किया है "और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वे दोनों * टहलते हुए बातै करते चले जाते थे तो देखो कि एक आग का रथ और आग के घोड़े आये और उन दोनों को अलग किया और इलियाह बवण्डर में होके स्वर्ग में चला गया"। वाह ! वाह !! इस आश्चर्यमय किस्से का वृत्तान्त काल के समाचार का लेखक कहीं भी कुछ नहीं लिखता यद्यपि इलियाह का नाम तो उसने अवश्य लिखा है और न कहीं वह उस किस्से का वृत्तान्त लिखता है जो उसी ग्रन्थ के २ रे पर्व की २४ वीं आयत में लिखा है अर्थात् जब इलीशा मार्ग में चला जाता था "तो देखो कि नगर के लड़के निकले और उसे चिढ़ा २ कहने लगे कि "चढ़ जा वे सिरमुंड चढ़ जा सिरमुंडे"। तब इस ईश्वर के मनुष्य ने पीछे फिर के उन्हें देखा और परमेश्वर का नाम लेके उन्हें स्नाप दिया तब वन में से दो भालू निकले और उन में से ४२ लड़कों को फाड़ डाला"। इस लेखक ने उस किस्से पर भी मौन धारण किया है जो राजाओं की दूसरी पुस्तक के १३ वें पर्व में दिया है, जहां लिखा है कि जब वे लोग एक मृतक को गाड़

* दोनों अर्थात् इलियाह और इलीशा।

रहे थे जहां इलीशा गाड़ा गया था तो अनानयक उसका
रीर इलीशा की हड्डियों से छू गया और वह मृतक मनु
जी उठा और अपने पैरों के बल खड़ा हो गया (२१ वीं आ
यत देखो) उस किस्से में यह नहीं लिखा है कि उन्होंने उ
मनुष्य को जी उठने पर निकाल कर छोड़ दिया या पुनः
सी जगह जीतेही गाड़ दिया। इन सब व्यर्थ की बातों
काल के समाचार के लेखक ने उसी प्रकार मौनावलम्बन कि
है जैसे इन दिनों कोई इतिहासलेखक स्वयं झूठे बनने
भय से ऐसी २ व्यर्थ कपोलकल्पित बातें न लिखेगा—

अस्तु इन दोनों इतिहासलेखकों का परस्पर जो कुछ
तभेद और विरोध है परन्तु ये दोनों के दोनोंही उन लोग
के विषय में कुछ भी नहीं लिखते जो बाइबिल में भविष्यवक्ता
कहलाते हैं और जिनके लेख से बाइबिल का अन्तिम भाग भ
रा है। हां, हिंजिकियाह के समय में जो "यसयियाह" हु
आ है उसका साधारण उल्लेखमात्र इन दोनों इतिहासलेखक
ने हिज़िकियाह के राज्यवर्णन के समय केवल एक या दो बे
किया है परन्तु शेष जो बचे हैं उनका नामोल्लेख तो दूर रह
कहीं "इशारा" मात्र भी नहीं है यद्यपि बाइबिल के सामयि
क प्रमाणानुसार वे सब उसी समय में और उससे पूर्व में हुये
हैं कि जिसका वृत्तान्त इन इतिहासों में दिया है। यदि वे
लोग जिन्हें ये भविष्यवक्ता कहते हैं उस समय प्रसिद्ध और
लेखनीय गिनती में होते जैसा कि ये बाइबिल के संग्रहकर्ता
गण बताते हैं तो यह कैसे हो सकता है कि इन दोनों इतिहासों में से
एक में भी उनका नाम निशान तक भी नहीं पाया जाता।

हम पहलेही लिख चुके हैं कि राजाओं और काल के
समाचार की पुस्तकों में मसीह के ९८८ वर्ष पूर्व तक का

डाल दिया है अतएव हम यह परीक्षा करते हैं कि इस समय के पूर्व तक कौन २ भविष्यवक्ता हो चुके हैं।

नीचे हम एक सूचीपत्र उन भविष्यवक्ताओं का प्रकाश ते हैं जो सामयिक प्रमाणानुसार मसीह के ९८८ वर्ष पूर्व हो चुके हैं, और हम यह भी प्रकाश करते हैं कि वे ा राजाओं तथा काल के समाचार की पुस्तकों के लिखे जा- के कितने वर्ष पूर्व हो चुके हैं।

नाम	मसीह के पूर्व का गत	राजाओं और काल के समाचार के पूर्व का गत	उल्लेख
ायियाह	७६०	१७२	इसका नाम लिखा है
मियाह	६२९	४१	नोट देखो*
़कियल	५९५	७	इसका नाम नहीं है
़नेयल	६०७	१९	,,
़ोआ	७८५	९७	,,
़ल	८००	२१२	,,
़ास	७८९	१९९	,,
़ादिया	७८९	१९९	,,
़नाह	८६२	२७४	,,
़ाह	७५०	१६२	,,
़म	७१३	१२५	,,
़ाकूक	६२०	३८	,,
़ानियाह	६३०	४२	,,
़ी, ज़- ़याह ़की } ५८८ के पीछे			

यह उर्द्धलिखित सूचीपत्र या तो फिर बाइबिल के इ-
तिहासलेखकों के विपक्ष में ठहरा और या बाइबिल के भ
प्यवक्ताओं के विपक्ष में हुआ——सो अब हम इस बात को
न्हीं पांधो और टीकाकारों के विचार पर छोड़ देते हैं
छोटी २ बातों पर अपनी बड़ी बुद्धिमता दिखाते हैं कि वे ह
ग स्वयं निर्णय कर लें कि जिन्हें ये भविष्यवक्ता बताते
और जिन्हें हम प्रथम भाग में कवि प्रमाणित कर चुके
उन्हें इन इतिहासलेखकों ने "कतवारू अथवा पनारु कह
की नाई अपने इतिहास में क्यों छोड़ दिया है"।

काल के समाचार की पुस्तकों पर हम को एक बात अं
वक्तव्य है जिसके उपरान्त हम बाइबिल के शेष पुस्तकों व
परीक्षा आरम्भ करेंगे।

उत्पत्ति के पुस्तक की समालोचना करते समय हम
३६ वें पर्व की ३१ वीं आयत का उल्लेख देकर यह दिख
लाया था कि इससे स्पष्ट उस समय का अभिप्राय पाया जात
है कि जब इसरायेल के सन्तान पर राजा लोग राज्य करन
आरम्भ कर चुके थे——हम यह भी दिखला चुके हैं कि यह
आयत और ३९ वें पर्व का शेष भाग काल के समाचार वे
पहिले पर्व्व के ४३ वीं आयत से * ज्यों की त्यों एक २
शब्द पर्यन्त नकल कर लिया गया है अतएव यद्यपि उत्प-

* जहां सब इतिहास सिलसिलेवार लिखा है।

ति की पुस्तक बाइबिल में सब से पूर्व रक्खी गई है और मूसा की लिखी कहलाती है परन्तु अब यह स्पष्ट जान पड़ता है कि इस पुस्तक के रचयिता का पता नहीं है और यह काल के समाचार की पुस्तक के उपरान्त लिखी गई है अतएव इसकी रचना मूसा के समय से कम से कम ८६० वर्ष उपरान्त ठहरती है। अब हम एज़रा के पुस्तक की परीक्षा आरम्भ करते हैं।

इस कपोलकल्पित बाइबिल का जैसा गड़बड़ क्रम है उसे देखने के लिये ज़रा एजरा के पुस्तक की प्रथम तीन आयतें और काल के समाचार की अंतिम दो आयतों का मिलान करना चाहिये कि कैसे काट छांट कर दो का तीन या तीन का दो कर डाला है। या तो ग्रंथकारों को स्वयं अपने ग्रंथों का हाल नहीं मालूम है या उनके संग्रहकर्ताओं को ग्रंथकारों का हाल न मालूम था।

काल के समाचार की अंतिम दो आयतें।

आयत २२ वीं—अब फारस के राजा सायरस के पहिले वर्ष जिस मे यरमियाह के द्वारा परमेश्वर का बचन पूरा होवे परमेश्वर ने फारस के राजा सायरस के मन को उभारा कि उसने अपने सारे राज्य में सर्वत्र प्रचार करवाया और यह कहके लिखवाया भी॥

आयत २३ वीं—कि फारस का राजा सायरस कहता है कि स्वर्ग के ईश्वर परमेश्वर ने पृथिवी के सारे राज्य मुझे दिये

हैं और उसने अपने लिये यहूदाह के देश के यरूशलम में घर बनवाने को मुझे आज्ञा दी है सो जो उसके सारे लोगों में तुम्हें है उसका ईश्वर परमेश्वर उसके साथ हो और वह चढ़ जावे ॥

एज़रा के पुस्तक की पहिली तीन आयतें।

आयत १—और जिसतें परमेश्वर का बचन यरमियाह के द्वारा से पूरा होवे परमेश्वर ने फारस के राजा सायरस के मन को उभाड़ा कि फारस के राजा सायरस के राज्य के पहिले बरस में उसने अपने सारे राज्य में प्रचार करवाया और यह कह के लिखवाया भी ॥

आयत २—कि फारस का राजा सायरस यों कहता है कि परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर ने पृथ्वी का सारा राज्य मुझे दिया है और यहूदाह के यरूसलम में अपने लिये एक मन्दिर बनाने को मुझे आज्ञा की है ॥

आयत ३—उसके सारे लोगों में से तुम लोगों में कौन है उसका ईश्वर उसके संग होवे और वह यहूदाह के यरूसलम को चढ़ जावे और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का मन्दिर बनावे (वही ईश्वर है) जो यरूसलम में है ॥

काल के समाचार की अन्तिम आयत अचानचक बीचही में टूट जाती है क्योंकि शब्द चढ़ जाये से कुछ पता नहीं लगता कि कहां चढ़ जाये—इस अचानचक टूट तथा पुस्तकान्तरों में उसकी पूर्ति देखने से विदित होगा कि कैसी गड़

बड़ता और अज्ञता के साथ बाइबिल की रचना हुई है और उसके संग्रहकर्ताओं ने जैसा मन में आया संग्रह कर दिया अतएव हम कैसे इन बातों का विश्वास कर सकते हैं *

* बहुतसी टूटी फूटी और अर्थरहित आयतें बाइबिल में हमने ऐसी पाई हैं जिन्को हम ग्रन्थ भागमें न लिख कर टिप्पणी में दो उदाहरण दिखलाते हैं जैसे सामुएल की पहली पुस्तक के १३ वें पर्व की पहली आयत से देखो जहां यों लिखा है कि "साऊल ने एक बरस राज्य किया और जब वह इसराएल पर दो बरस राज्य कर चुका तब साऊल ने इसराएल में से तीन सहस्र अपने लिये चुने" इत्यादि—इस आयत का प्रथम भाग अर्थात् साऊल ने एक वर्ष राज्य किया एक प्रकार व्यर्थ है क्योंकि इस से यह विदित नहीं होता कि उसने क्या २ किया और साल भर के उपरान्त फिर क्या हुआः—फिर यह कैसी भारी बुद्धिमत्ता है कि अभी तो कहते हैं कि एक वर्ष राज्य किया और फिर साथही कहते हैं कि दो वर्ष राज्य किया:—जब उसने दो वर्ष राज्य किया तो उसका एक वर्ष राज्य करना असम्भव है:—

दूसरा अर्थरहित और अभिप्रायशून्य वृत्तान्त जोशुआ के ९ वें पर्व में मिलता है जहां लेखक ने एक ईश्वरीय दूत की कहानी लिखी है कि वह जोशुआ को दिखलाई पड़ा—

निश्चयता की तो केवल यही बात एजरा के पुस्तक में पाई जाती है कि यह किस समय लिखी गई है अर्थात् इसकी रचना मसीह से ५३६ वर्ष पूर्व जब यहूदी लोग बाबिलन की कैद से लौटे

बस बीचही में यह किस्सा भी बिना किसी फल के टूट जाता है.—यह किस्सा यों है कि—

१३ वीं आयतः—और ऐसा हुआ कि जब यहूशूअ यरीहो के पास था तो उसने अपनी आंख ऊपर की ओर उठाई और देखा कि उसके सामने एक मनुष्य तल्वार हाथ में लिये हुये खड़ा है तब यहूशूअ उसके पास गया और उस से पूछा कि तू हमारी ओर है अथवा शत्रुओं की ओर ! १४ वीं आयत—और वह बोला नहीं परन्तु मैं अभी परमेश्वर की सेना का अध्यक्ष हो के आया हूं तब यहूशूअ भूमि पर औंधा हुआ और दण्डवत की और उसे कहा कि मेरा प्रभु अपने सेवक को क्या आज्ञा करता है । १५ वीं आयत—तब परमेश्वर की सेना के अध्यक्ष ने यहूशूअ से कहा कि अपने पांव से अपना जूता उतार क्योंकि यह स्थान जहां तू खड़ा है पवित्र है और यहूशूअ ने ऐसाही किया—फिर आगे क्या ! कुछ नहीं क्योंकि यहीं 'ऐसाही किया' पर पर्व समाप्त है।

या तो यह किस्सा बीचही में टूट गया है या कि किसी ठठोल यहूदी ने जोशुआ पर अपने तईं ईश्वर का प्रेरित मानने के ... दिल्लगी उड़ाई है, परन्तु बाइबिल के संग्रहकर्ताओं ने

के अतिरिक्त दूसरों से क्या सम्बन्ध है क्योंकि यह उन्हीं के जाति का इतिहास है, हम लोगों का अथवा किसी दूसरे का इससे कोई सम्बन्ध नही है, और इसमें ईश्वर का वचन तो उसी प्रकार है जैसे काश्मीर, नैपाल, चीन या और किसी देश के इतिहास में है---ऐसा ईश्वर का वचन तो अलिफलैला हातमताई और चारदरवेश में भी है।

परन्तु ऐतिहासिक वृत्तान्तों में भी इन दोंनो लेखकों का कोई विश्वास और भरोसा नहीं है—एज़रा के दूसरे पर्व में, लेखक ने एक सूचीपत्र दिया है जिसमें उस ने उन जाति और घराना का नाम और पुरुषों की गिनती लिखी है जो बाइबिल से लौट कर यरूसलम को आये थे—यह जान पड़ता है कि इस ग्रन्थ के लिखने का मुख्य अभिप्राय इन गिनतियों ही के लिखने का है परन्तु इसमें ऐसी भारी भूल है कि सभी अभिप्राय नष्ट हो गया है।

इसके लेखक ने इस प्रकार गिनती आरम्भ की है कि दूसरे पर्व की ३ री आयत पेरास की सन्तान २१७४; चौथी आयत से फातिया के सन्तान ६७२ इसी प्रकार सब घरानों की गिनती लिखी हैं अन्त को ६४ वीं आयत में ग्रन्थकार ने इन सभों का कुल जोड़ ४२३६० लिखा है॥

परन्तु यदि कोई मनुष्य थोड़ा भी परिश्रम करके इन सब गिनतियों को लिखकर जोड़ डाले तो सब का जोड़ २९८१८

वैगा अर्थात् जिस्में १२५४२ की भूल है * तो अब कहि-
बाइबिल के किस लेख पर क्या विश्वास किया जाय ?

* इज़रा के दूसरे पर्व के अनुसार लौटे हुये मनुष्यों की सख्या ।

दूसरी आयत.			पहले का जोड़		१५९११
पर्व ३	,,	२१७२	पर्व २४	,,	४२
४	,,	३७२	२५	,,	७४३
५	,,	७७५	२६	,,	६२१
६	,,	२८१२	२७	,,	१२२
७	,,	१२५४	२८	,,	२२३
८	,,	९४५	२९	,,	५२
९	,,	७६०	३०	,,	१५६
१०	,,	६४२	३१	,,	१२५४
११	,,	६२३	३२	,,	३२०
१२	,,	१२२२	३३	,,	७२५
१३	,,	६६६	३४	,,	३४५
१४	,,	२०५६	३५	,,	३६३०
१५	,,	४५४	३६	,,	९७३
१६	,,	९८	३७	,,	१०५२
१७	,,	३२३	३८	,,	१२४७
१८	,,	११२	३९	,,	१०१७
१९	,,	२२३	४०	,,	७४
२०	,,	९५	४१	,,	१२८
२१	,,	१२३	४२	,,	१३९
२२	,,	५६	५८	,,	३९२
२३	,,	१२८	६०	,,	६५२
इधर ले गये		१५९११	कुल जोड़		२९८१८

नहूमिया ने भी इसी प्रकार एक सूचीपत्र लौटते हुये घरानों और पुरुषों के गिनती का दिया है उसने भी इज़रा की नाईं ७ वें पर्व की ८ वीं आयत से यों आरम्भ किया है कि पेरास की सन्तान २३७२ इत्यादि योंही सब घरानों का हाल दिया है---इसमें और एजरा के सूचीपत्र में कई बातों का भेद है ६६ वें आयत में नहूमिया ने भी इज़रा के नाईं कुल जोड़ ४२३६० दिया है परन्तु उसके फुटकर गिन्तियों के जोड़ने से ३१०८९ होता है अर्थात् इसमें भी ११२७१ की भूल है---बाइबिल सरीखे पुस्तक बनाने में ये ग्रंथकार बहुत अच्छे हैं परन्तु जहां सत्यता और यथार्थता का कार्य्य है वहां इन से काम नहीं चल सकता। अब इसके आगे अस्तर की पुस्तक है—यदि बीबी अस्तर अपने को शेरशाह की सुरैतिन बनने में इज्जत समझती हैं और रानी वशाती * की सौत बनने में अपना बडप्पन मानती हैं तो अस्तर और उसके पिता

---

* एक बेर राजा शेरशाह (Ahasuerus) ने अपने प्रधानों से शराब पी कर कहा कि हमारी रानी वशती से राजमुकुट पहिरा कर हमारे आगे लाओ जिसमें लोगों और अध्यक्षों को उसकी सुन्दरता दिखाई जावे क्योंकि वह बड़ी रूपवती थी परन्तु रानी वशती ने भरे दरबार में जहां लोग सात दिन से शराब पीकर मस्त हो रहे थे अपना स्वांग बनाना अनुचित समझ कर आना अस्वीकार किया।

लोग तो विज्ञानशास्त्र के पूर्णतया अनभिज्ञ थे। ज्योतिष के नाम लियाडिज्, ओरियन, अरक्तूरस इत्यादि सब यूनानी भाषा के नाम हैं न कि इब्रानी; और बाइबिल से कहीं विदित नहीं होता कि यहूदी लोग ज्योतिषविद्या जानते थे अतएव उन्होंने अनुवाद करने में यूनानी भाषा के नामों को ज्यों का त्यों अपनी इब्रानी भाषा में रख लिया।

जान पड़ता है कि बाइबिल बनानेवाले बिचारे बड़े सोच बिचार में पड़े थे कि वे इस अयूब की पुस्तक को क्या करें और बाइबिल में किस जगह स्थान दें क्योंकि इसमें कोई ऐतिहासिक वृत्तान्त वा आगे पीछे का सम्बन्ध तो है ही नहीं जो बाइबिल में इसका ठीक ठिकाना लगता। परन्तु यदि वे लोग अपनी मूर्खता सबको विदित किये होते तो कैसे काम चलता अतएव उन्होंने मसीह के पूर्व १५२० का सन् इसके लिये निर्धारित किया अर्थात् इस्का वह समय ठहराया जब इसराएल लोग मिश्र में बँधुये थे यदि हम इसे इससे भी हजार वर्ष पूर्व का कहें तो उन बिचारों के पास कोई ऐसा प्रमाण नहीं है कि अपने कहे हुये सन की दृढ़ता प्रमाणित कर सकें। अतः यह पुस्तक बाइबिल में सबसे पुरानी है और केवल यही एक ऐसी पुस्तक बाइबिल भर में है कि जिसे मनुष्य बिना घृणा और मानसिक खेद के पढ़ सकता है।

अब गीतों की पुस्तक पर बहुत समालोचना की आव

तिरिक्त कई एक दृष्टान्तों की रचना (जो सुलेमान की लिखी कहलाती हैं) सुलेमान की मृत्यु के २९० वर्ष उपरान्त हुई है जैसे २९ वें पर्व की पहली आयत में लिखा है कि "ये भी सुलेमान के दृष्टान्त हैं जिन्हें यहूदाह के राजा हिजकियाह के लोगों ने नकल किया"। हिजकियाह राजा सुलेमान के २९७ वर्ष उपरान्त हुआ है ॥ प्रायः ऐसी चलन हो गई है कि जो मनुष्य बहुत प्रसिद्ध और नामी हो जाता है उसके नाम से लोग अनेक चीजें बना लेते हैं और यही हाल सुलेमान का भी है। उन दिनों दृष्टान्त बनाने की परिपाटी पड़ गई थी जैसे आज कल बहुत से लोग दिल्लगी के किस्से कहानियां बना कर अकबर बादशाह और बीरबर मंत्री का नाम रख देते हैं। उपदेशकों की पुस्तक का भी रचयिता सुलेमानही कहलाता है यद्यपि यह सत्य तो नहीं है परन्तु इस में बुद्धिमता पाई जाती है यह किसी सुलेमान सरीखे विषयों में वृद्ध का ही बुद्धि विचार जान पड़ता है जो भली प्रकार संसार का भोग करके पीछे कहता है कि सब वृथा है। यह तो वही मसल है "नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हजको चली" बाइबिल से सुलेमान की जितनी चालचलन झलकती है उस से जान पड़ता है कि वह चतुर वैभवोन्मत्त और अन्त में उदास प्रकृति का मनुष्य था। उसने संसार में आकर बहुत व्रत किये और अन्त को ९८ वर्ष की अवस्था में विरक्त होकर संसार को त्याग कर गया।

और सन लेखक दोनों की भूल हुई है क्योंकि उत्तम तभी होता और उनकी बात भी तभी जमती जब या तो वे समय न लिखते या सुलेमान की वृद्धावस्था में इस की रचना बता देते क्योंकि उस समय तो सुलेमान एक सहस्र मुग्धा, नवोढ़ा, मध्या और प्रौढ़ा के प्रथम समागम रूपी शृंगाररस में लीन था ।

बाइबिल के संग्रहकर्ताओं ने अपना कार्य्य अधूराही किया है क्योंकि जब उन्हों ने हमारे लिये गीतें लिख दी हैं तो उनके गाने के राग भी लिख देते तो पूरा होता ।

बाइबिल के शेष भाग में भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों की भरती है। ये यसयियाह से लेकर मलाकी पर्य्यन्त १६ भविष्यवक्ता हैं जिनका सूचीपत्र हम पहिले लिख चुके है । अन्तिम तीन को छोड़ कर ये सब उस समय में हुये हैं कि जब राजाओं और काल के समाचार की पुस्तक लिखी गई हैं; परन्तु इन इतिहासों में केवल दो अर्थात् यसयियाह और यरमियाह का नामोल्लेख है । हम इन्हीं दोनों से आरम्भ करते है और भविष्यवक्ता मात्र पर अपनी समालोचना चौथे भाग में प्रकाश करेंगे ।

यदि कोई मनुष्य एक बेर भी इस ग्रंथ को पढ़े जिसका रचयिता यसयिआह कहलाता है तो उसे विदित हो जायगा कि इस की रचना और संग्रह बड़ेही भद्दे तौर से तथा वे लि-

में मिस्र का बोझ पांचवें में समुद्र के अरण्य का बोझ दर्शन की तराई का बोझ २ इत्यादि न जाने इन से क्या अभिप्राय है।

हम पहले दिखला चुके हैं कि काल के समाचार की पुस्तक की अन्तिम दो आयतें इज़रा के प्रथम तीन आयतों से मिलती हैं इस से विदित होता है कि बाइबिल के संग्रह, कर्ताओं ने भिन्न २ ग्रन्थ रचयिताओं के लेखों को अज्ञानता के कारण एक दूसरे में मिला लिया है केवल इस से भी बाइबिल की सत्यता में बड़ा भारी बट्टा लगता है इस से भी भारी एक उदाहरण यसयिआह की पुस्तक में पाया जाता है जिस में ४४ वें पर्व का अन्तिम और ४५ वें पर्व का प्रथम भाग यसयिआह का लिखा नहीं हो सकता परन्तु वह किसी ऐसे व्यक्ति का लिखा है जो यसयिआह की मृत्यु के १५० वर्ष उपरान्त हुआ है।

ये पर्व साइरस राजा के धन्यवाद में लिखे गए हैं जिस ने यहूदियों को बाबिलोनियन की कैद से यरूसलम को लौट जाने और उस नगर तथा मंदिर बनाने की आज्ञा दी है ४४ वें पर्व की अन्तिम और ४५ वें पर्व की आरम्भ की आयतें यों है "और सायरस के विषय कहता है कि वह मेरा चरवाहा। है और वह मेरे समस्त अभिलाषा को पूरा करेगा हां यरूसलम से यह कहते हुये कि तू बनाई जावेगी और मन्दिर से यह कि तेरी नेव डाली जायगी । परमेश्वर अपने अभिषिक्त सायरस से जिसका दहिना हाथ मैंने पकड़ा है जिससे उसके

लोग कहते हैं कि यह लक्ष मसीह और उसकी माता मरीयम पर है यह बात अनुमान १६०० वर्ष से समग्र खीष्ट प्रदेश में फैली और मानी जाती है और यहां लों इस बात पर विश्वास उन लोगों का है कि विरलाही कोई प्रदेश बचा होगा जहां ऐसे विश्वास के कारण सिरकटौवल न भई हो । हमारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं है अतएव हम इसी विषय पर प्रमाण देंगे कि बाइबिल विश्वसनीय नहीं है तथापि हम यह दिखलाते हैं कि इस आयत का इस प्रकार लक्ष निकालना कदापि सङ्गत नहीं है ।

एसैयाह इस आयत से आहज़ राजा को भुलावे में डालता था या नहीं पीछे देखा जायगा हमारा यह अभिप्राय है कि इस आयत का लक्ष जैसे हम पर नहीं है इसी प्रकार मसीह पर भी नहीं हो सकता ।

हम पहिले कह चुके हैं कि यहूदी लोग दो भाग में विभक्त हो गये थे एक इसराएल और दूसरे यहूदाह;—यहूदाह के राजाओं की राजधानी यरूसलम नगरी थी । एक समय सिरिया प्रदेश के राजा और इसराएल के राजा ने मिलकर यहूदाह के राजा आहज़ पर चढ़ाई की और यरूसलम पर आक्रमण किया तब आहज़ और उस्के लोग डर गये जैसा कि दूसरी आयत में लिखा है कि "उनके हृदय कांप उठे जैसे आंधी में जङ्गल के वृक्ष कांपने लगते हैं" ।

के लोगों से कुछ अधिक विश्वासपात्र थे;—अस्तु जो कुछ हो आठवें पर्व की दूसरी आयत में लिखा है "मैं अपनी साक्षी के लिये विश्वस्त साक्षियों को लूंगा अर्थात् ऊरियाह याजक और यबरकियाह के बेटे ज़करियाह को और मैंने आगमज्ञानी से समीपता किई और वह गर्भिणी हुई और बेटा जनी" बस यही लड़के और कुँआरी का मूर्खतामय किस्सा है और इसी किस्से को उलट कर मत्ती के पुस्तक तथा पांचो ने इंजील की रचना की है और इस किस्से का लक्ष मसीह को किया है जिसे वे कहते हैं कि वह पवित्र आत्मा द्वारा कुआरी कन्या से उत्पन्न हुआ अर्थात् इस व्यर्थ के किस्से के कहे जाने के ७०० वर्ष उपरान्त इस्का लक्ष बताते हैं, यह बात उतनीहीं झूठ है जैसे ईश्वर सत्य है॥

परन्तु अब आगे का वृत्तान्त पढ़िये तो इस यसैयाह नामक सच्चे भविष्यवक्ता की और भी सचाई प्रगट होती है जिस का वृत्तान्त यद्यपि यसैयाह के पुस्तक में तो नहीं दिया है तथापि कालके समाचार की दूसरी पुस्तक के २८ वें पर्व में लिखा है कि यसैयाह ने जो बचन ईश्वर के नाम पर यहूदाह के राजा आहज़ को दिया था कि ये दोनों राजा जो तुझ से लड़ते हैं पराजित होंगे सो बिल्कुल झूठ निकला क्योंकि अन्त में वही दोनों जीते और आहज़ हार गया और उस के १२०००० मनुष्य मारे गये; यरूसलम का नगर लूटा गया

"और जब कभी मैं किसी जातिगणके अथवा राज्यके बनाने और लगाने के विषय में कहूं और वह वही करे जो मेरी दृष्टि में बुराई है जिस से मेरे शब्द को न माने तो जो भलाई मैंने उसके निमित्त करने को कहा था उस से मैं पछताऊंगा' यह दूसरे पक्षके लिये है और इस प्रकार की भविष्यवाणी कौन नहीं कर सकता? यहतो ईश्वर का सादृश्य मनुष्यसे देना ठहरा, क्योंकि ईश्वरको कभी पछतानेकी आवश्यकता नहीं पड़ती सो ऐसी २ मूर्खताकी बातें बाइबिलके अतिरिक्त दूसरी पुस्तकों में जल्दी न मिलेंगी ॥

अब ग्रन्थ के ग्रन्थकर्ता के विषयमें तो इस पुस्तकके पढ़ने ही से जान पड़ेगा। यद्यपि इसकी कोई २ आयतें यरमियाह की कही हुई हों परन्तु वह इस ग्रन्थका रचयिता नहीं था इसके ऐतिहासिक भाग (जिन्हें ऐतिहासिक कहनेही में सन्देह है) अत्यन्तही गड़बड़ है। एक ही वृत्तान्त कई बेर भिन्न २ प्रकारों से और कभी ठीक विरुद्ध प्रकारसे लिखा है और यह गड़बड़ अन्त के पर्वलों चला गया है जहां यह इतिहास नये रीतिसे आरम्भ होकर अचानचक समाप्त होजाता है। इस पुस्तक में उस समयके मनुष्यों और चीजों का अत्यन्त ही गड़बड़ और असम्बद्ध वृत्तान्त दिया है जैसे कि आजकल बाजे बाजे समाचारपत्रों में बेसिर पैर की बातें बिन सन् सम्वत की लिखी रहती हैं, हम इस प्रकार के दो तीन उदाहरण देते हैं॥

मियाह को पकड़ा कि तू कल्दियों के पास भागता है। तब यरमियाह ने कहा कि यह झूठ है मैं कल्दियों के पास नहीं जाता"। जब यरमियाह इस प्रकार दोष लगाकर रोका गया तो उसकी परीक्षा की गई सो वह विश्वासघाती के सन्देह में कारागार को भेजा गया जैसा कि इस पर्व के अन्तिम आयत में लिखा है, परन्तु दूसरे पर्व में यरमियाह के पकड़े जाने और कैद होने का हाल लिखा है, जिस का सम्बन्ध इस वृत्तान्त से कुछ भी नहीं मिलता परन्तु उसके कारागारनिवासी होने का कारण दूसराही दिया है जिस के लिये २१ वें पर्व में देखो वहां पहली आयत में लिखा है कि "सिदकियाह ने मलकियाह के बेटे पाशूर और मसियाह याजक के बेटे सफनियाह को यरमियाह के पास यह पूछने को भेजा कि परमेश्वर के आगे हमारे लिये बिनती कर क्योंकि बाबुल का राजा नबूखुदनज़र हम से संग्राम करता है" तब यरमियाह ने उन से कहा (८वीं आयत) कि "और इस जाति से कहियो कि परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं तुह्मारे आगे जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग धरता हूं जो इस नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से और मरी से मरेगा परन्तु जो बाहर जायगा और अपने को कसदियों को सौंपेगा जो तुह्में चारो ओर घेरे हैं वही जीयेगा और अपने प्राण को लूट में पावेगा"। यह सम्भाषण २१ वें पर्व की दसवीं आयत में अचानचक टूट जाता है

फिर ऐसी गड़बड़ यह पुस्तक है कि इस सम्भाषण का सम्बन्ध ११ वें पर्व के उपरान्त जाकर मिलता है अर्थात् ३८ वें पर्व के आरम्भ में पाया जाता है।

३८ वें पर्व के आरम्भ में यों लिखा है कि "तब मतान के बेटे सफ़तियाह ने फसिहूर के बेटे गिदलयाह ने और सलमियाह के बेटे यूहल ने और मलकियाह के बेटे पाशुर ने (२१ वें पर्व की अपेक्षा यहां दो मनुष्यों का नाम अधिक दिया है) यरमियाह की वे बातें सुनीं जो वह यह कह के सारे लोगों से कहा करता था, "परमेश्वर यों कहता है कि जो कोई इस नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से और मरी से मरेगा परन्तु जो कोई कसदियों के पास जायगा सो जीता रहेगा और उसका प्राण उसके लिये लूट के समान होगा और वह जीयेगा।

तब अध्यक्षों ने राजा से कहा कि हम आपकी बिनती करते हैं कि यह जन घात किया जाय क्योंकि वह योद्धाओं के हाथों को जो इस नगर में रहते हैं और सारे लोगों के हाथों को जो ऐसे २ बचन कह करके दुर्बल करता है निश्चय यह जन इन लोगों का भला नहीं चाहता किन्तु बुरा। और छठवीं आयत में लिखा है कि "तब उन्होंने यरमियाह को लिया और उसे मलकियाह के कैदखाने में कैद किया"।

ये दोनों वृत्तान्त भिन्न और परस्पर विरोधी हैं। एक लिखता है, कि यह नगर से बाहर भागने के उद्योग के कारण कारागार भेजा गया दूसरा लिखता है कि इसका कारण यह है कि यह नगर में भविष्यद्वाणी करता था। एक लिखता है कि वह नगर के फाटक पर द्वारपाल के द्वारा पकड़ा गया। दूसरा लिखता कि वह जड़कियाह राजा के सामने दोषी ठहराया गया *॥

२९ वें पर्व में जो वृत्तान्त दिया है उसके पढ़ने से और भी इस पुस्तक का व्यतिक्रम प्रतीत होता है क्योंकि यद्यपि पूर्व के कई पर्वों में विशेषतः २७ वें और २८ वें में नबूकदनज़र कि चढ़ाई का वृत्तान्त दियाही है तौ भी ३९ वें पर्व में यों आरम्भ किया है मानो इस विषय पर एक शब्द भी पहले नहीं कहा गया या जैसे पाठकों को इस विषय का प्रत्येक वृत्तान्त नये सिर से विदित करना चाहिये। उसके पहिली आयत में लिखा है "और यों हुआ कि जब यरमियाह सारे लोगों को परमेश्वर उनके ईश्वर के सारे बचन जिनसे परमेश्वर उनके ईश्वर ने उसे उनके पास कहला भेजा था" इत्यादि २—

परन्तु अन्तिम अर्थात् ५२ वें पर्व में जो वृत्तान्त लिखा है वह सब से बढ़कर है; क्योंकि यद्यपि यह कहानी बार २

* इसी प्रकार सामुयेल की पुस्तक के १६ वें औ १७ वें पर्व में दाऊद और साऊल के परिचय के दो भिन्न वृत्तान्त दिये हैं जिसे पाठक लोग स्वयं देख लेवें।

लिखी गई है तथापि इस पर्व का लेखक यही समझता है कि पाठक लोग इस विषय में कुछ नहीं जानते। इसकी पहली आयत यों है "सेडकियाह एकीस वर्ष का था जब राज्य करने लगा और उसने यरूसलम में ग्यारह वर्ष राज्य किया और उसकी माता का नाम हमूतल जो लिबनाही यरमियाह की बेटी थी" और उसने यहूयकीम की सारी क्रिया के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई की क्योंकि यरूसलम और यहूदाह के विरोध में परमेश्वर के कोप के कारण ऐसा हुआ था कि उसने उन्हें अपनी दृष्टि से दूर किया। सिदक़याह राजा बाबुल के राजा के विरुद्ध फिर गया और उसके राज्य के नवें वर्ष की दसवें मास की दसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल का राजा नबूकदनजर वह और उसकी सारी सेना यरूसलम के विरुद्ध आई और उसके सामने छावनी की और उसके विरुद्ध चारों ओर गढ़ बनाये।

यह सम्भव नहीं है कि कोई एक मनुष्य और विशेषतः यरमियाह इस ग्रन्थ का लेखक हो इसकी भूलें ऐसी हैं कि कोई मनुष्य जब ग्रन्थ लिखने के उद्योग से लेखनी उठाता है कभी नहीं कर सकता। यदि हमने अथवा और किसी मनुष्य ने इस प्रकार असम्बद्ध या गड़बड़ लेख लिखा होता तो कोई भी उसे न पढ़ता लोग यही समझते कि इसका लेखक पागल था अतएव ऐसे असम्बद्ध लेख का यही पता लगता है कि

ये दोनों वृत्तान्त भिन्न और परस्पर
खता है,कि वह नगर से बाहर भागने के
भेजा गया दूसरा लिखता है कि इस
वह नगर में भविष्यवाणी करता था
नगर के फाटक पर द्वारपाल के द्वारा
कि वह लड़कियाह राजा के साम

२९ वें पर्व में जो वृत्तान्त दि
इस पुस्तक का व्यतिक्रम प्रतीत
के कई पर्वों में विशेषतः ३७

उससे मूँहो मुंह बात करे, और कुशल से मरे और जैसे उस के पुरखाओं के लिये किया गया वैसे उसके लिये भी सुगन्ध जलाया जावे ठीक इस का उल्टा हुआ, यथा ५२ वें पर्व १० वीं आयत में देखो "और बाबुल के राजा ने जेडकिय की आंखों के आगे उसके पुत्रों को घात किया और उ दिबलः में यहूदाह के सारे अध्यक्षों को भी मार डाला उसने जेड़कियाह की आंखे निकाली और उसे पीतल की करों से जकड़ा और बाबुल का राजा बाबुल में ले गया अं उसके मरने लों उसे बन्दीगृह में रक्खा"। अब कहिये भविष्यवक्ताओं को फसादी और झूठे के सिवाय क्या कहें

यरमियाह को इन आपत्तियों में से कोई भी झेलनी पड़ी उसपर नबूकदनज़र की कृपादृष्टि हुई जिसने उसे प रुओं के कमान के सुपुर्द करके यों कहा (३९ वें पर्व १२ वीं आयत) कि "इसे अपने साथ ले जा और इस सत्कार कर इसे किसी प्रकार की हानि न हो परन्तु जो यह तुझे कहे उसे कर"। इसके उपरान्त यरमियाह नबूक नज़र के पक्ष में हो गया और उसके लिये तथान मिश्रा के विरुद्ध जो यरूसलम के घेरे जाने के समय नगर की ति को आये थे व्याख्यान करता फिरता था इतना तो इस सत्यवादी भविष्यवक्ता और उस ग्रन्थ का जो उसके न मे प्रसिद्ध है गुणकीर्तन हुआ ॥

हमने एसयिआह और यरमियाह के ग्रन्थों का विशेष वर्णन इस कारण किया है कि इन दोनों का नाम राजाओं की पुस्तक तथा काल के समाचार की पुस्तकों में पाया जाता है परन्तु दूसरों का हाल इन में नहीं मिलता, शेष की पुस्तकों के विषय में जो भविष्यवक्ताओं के नाम से कहलाती हैं हम अधिक परिश्रम न करेंगे किन्तु भविष्यवक्ताओं के उल्लेख में उन सभों की परीक्षा साथही कर देंगे ।

इस पुस्तक के प्रथम भाग में हम यह दिखला चुके हैं कि बाइबिल में (Prophet) शब्द का अर्थ कवि है परन्तु इन कवियों की कविता को मूर्खों ने भविष्यवाणी मान रक्खा है यह बात पूर्णतया निश्चित हुई, न कि केवल इसी लिये कि भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें पद्य में हैं परन्तु समग्र बाइबिल में कवि के लिये (Prophet) से अतिरिक्त कोई शब्दही नहीं मिलता। इस शब्द सें बाजों के बजाने का भी अभिप्राय है जैसे बाइबिल में लिखा है कि एक दल Prophet (अर्थात् गवैयों) का निकला और वे लोग वीणा सरंगी इत्यादि बजाने लगे अगले ज़माने में जो मनुष्य गुप्त होनहार बातों का मर्मज्ञ समझा जाता था उसे लोग दर्शी कहते थे सामुएल भी इसी दर्शी के नाम से प्रसिद्ध था ॥

परन्तु आधुनिक अर्थानुसार Prophet शब्द का अर्थ भविष्य विषयों के ज्ञाता का समझा जाता है सो इसी

लिये नये अहदनामे के रचयिताओं ने अपना मतलब सि करने के लिये पुराने अहदनामे के कवियों को भविष्यव बना लिया ॥

इसके अतिरिक्त यह भी पाया जाता है कि ये कवि लोग जिन्हें बाइबिल वाले भविष्यवक्ता कहते हैं किसी के पक्ष और किसी के विपक्ष में भविष्यवाणी करते थे भला इसका क्या अर्थ हो सकता है ! बस इस का यही अर्थ है कि कवियों की नाईं जिसके पक्ष या विपक्ष में हुये उसकी स्तुति या निन्दा कर डाली। यहूदियों के दो भाग अर्थात् यहूदाह और एसरायल में विभक्त हो जाने के उपरान्त प्रत्येक भागवालों के अलग २ भविष्यवक्ता (कवि) हुये जो परस्पर एक दूसरे को झूठा और फसादी का दोष लगाते थे इत्यादि—यहूदाह के भविष्यवक्ता (कवि) एसराएल के भविष्यवक्ताओं (कवियों) के विरुद्ध भविष्यवाणी (कविता) करते थे और इसी प्रकार एसरायल वाले यहूदाह के विरुद्ध थे इसका उदाहरण रेहोबोआम और जेरोबोआम के समय में भली प्रकार पाया जाता है । जिस भविष्यवक्ता ने जेरोबोआम की बनाई हुई बेतूल की बेदी के विरुद्ध भविष्यवाणी (कविता) की थी वह यहूदाह के पक्ष का था जिनका राजा रेहोबोआम था परन्तु घर लौटते समय इसे एसरायल की पक्ष का एक भविष्यवक्ता (कवि) मिला जिसने उसे कहा "क्या तू ईश्वर

या वह मनुष्य है जो यहूदाह की ओर से आया है वह बोला हां" तब एसराएल के दल के भविष्यवक्ता (कवि) ने उससे कहा कि मैं भी तेरे नाई भविष्यवक्ता * (कवि हूं) मुझे ईश्वर के वचन द्वारा एक दूत ने कहा है कि मैं तुझे अपने साथ अपने घर ले आऊँ जिसमें कि तू रोटी खाय और पानी पीये; परन्तु (१८ वीं आयत में लिखा है) यह उसने उससे झूठ कहा। अब आगे इस किस्से में लिखा है कि यह यहूदाह का भविष्यवक्ता (कवि) फिर लौटकर यरूसलम न पहुंचा क्योंकि वह इसराएल के भविष्यवक्ता के "हिकमत-अमली" की कारण सड़क पर मरा हुआ पाया गया--इस पर भी वह इसराएल का भविष्यवक्ता सच्चा और यहूदाह का झूठा कहलाता था; भई वाह !!!

राजाओं की दूसरी पुस्तक के तीसरे पर्व में एक किस्सा भविष्यवाणीओं का मानमती का दिया है जिस्से इन भविष्यवक्ताओं की प्रकृति भली प्रकार झलकती है। एक बेर यहूदाह के राजा यहूसफ़त् और इसराएल के राजा जोरम ने कुछ दिनों के लिये आपस का बैरभाव परित्याग करके मेल कर लिया था; और इन दोनों ने अदूम के राजा के साथ मिलकर मोआब के राजा पर चढ़ाई की थी। जब इनकी सेना मिल मिला कर चली तो उस किस्से में लिखा है कि इन्हें पानी की बड़ी

* अर्थात् यहूदाह के दल का हूं।

दिक्कत हुई जिस पर यहूसफ़त ने कहा कि "क्या यहां कोई परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता नहीं है जो हम उसके द्वारा परमेश्वर से पूछें" तब इसराएल के राजा के सेवकों में से एक बोल उठा कि हां इलीशा है (यह यहूदाह का भविष्यद्वक्ता था) तब यहूदाह के राजा यहूसफ़त ने कहा कि परमेश्वर का वचन उसके पास है तब, इस किस्से में लिखा है कि ये तीनों राजा इलीशा के पास गये, और तब (यहूदाहदल के पक्षपाती इलीशा ने इसराएल के राजा को देखा तो उसने कहा कि "मुझे तुम से क्या काम है तू अपने पिता के भविष्यद्वक्ताओं और माता के भविष्यद्वक्ताओं के पास जा। इसरायेल के राजा ने कहा नहीं क्योंकि परमेश्वर ने इन राजाओं को इस लिये एकत्र किया है कि यह हमें मोआब के राजा के हाथ में सौंपे* इस इलीशा को कहा कि "सेनाओं के परमेश्वर की सौं जिसके आगे मैं खड़ा हूं यदि यहूदाह के राजा यहूसफ़त के साक्षात् होने को न मानता तो निश्चय तेरी ओर न ताकता और न तुझे देखता। इससे एक दलवाले भविष्यवक्ता के हृदय की तुच्छता औ उस की कृपणता झलकती है—अब भविष्यवाणी का सामान और ढंग देखिये—

१५ वीं आयत—तब इलीशा ने कहा कि एक बीण बजवैया मेरे पास लाओ और ऐसा हुआ कि जब उसने बीणा

* अर्थात् पानी की कमी के कष्ट के कारण।

बनाई तो परमेश्वर का हाथ उस पर आया। यह भानमती का खेल चला जैसे आज कल कहीं २ मीरासी मियां डफला बना कर अपने साथियों के सिर गाजीमियां को बुलाते हैं, खैर—तब इलीशा ने कहा (सम्भव है कि बजवैये के ताल में अपनी लै मिलाई हो) कि परमेश्वर यों कहता है कि इस तराई को गढ़हों से भर देओ। भई वाह! यह तो वही मसल हुई कि "टांय टाय फिस" वीणा लाओ, सारंगी लाओ, तम्बूरा लाओ, ढोल लाओ पचास सामान जुहाओ और अन्त में यह निकला कि कूआं खोदो—यह तो साधारण मनुष्य भी जानता है कि पानी कूआ खोदने से मिलता है परन्तु इलीशा की तो वही मसल है कि "प्यास लगे पर कूआं खोदो" कहां तो सेना मारे प्यास के मरी जाती है कहां फरसा कुदाली ले खोदने चले—ऐसे भविष्यवक्ता से तो नोनिया अच्छे जो झट पट कूआं खोद देवे॥

परन्तु जैसे प्रत्येक मदारी या भानमतीवाले एकसां प्रसिद्ध नहीं होते वैसेही ये भविष्यवक्ता भी थे, क्योंकि यद्यपि ये सब, विशेषतः वे जिनके विषय में हम कह चुके हैं, झूठ बोलने के लिये तो प्रसिद्ध थे ही पर बाजे २ शाप देने में भी बड़े धुरन्धर थे इस विषय में इलीशा सब से प्रसिद्ध था यह वही इलीशा है जिसने ईश्वर के नाम पर ४२ लड़कों को शाप दिया था जिन्हें दो भालू फाड़ के खा गये। ये लड़के कदा-

यदि ये बाइबिल के अनेक टीकाकार और याजक लोग जिन्हों ने व्यर्थ अपना समय इस ग्रन्थ के पहेलियों के बूझने में लगाया है इजेकिएल और दानियल के साथही कैद हुये होते तो इस प्रकार के लेखों को समझने में उनकी बुद्धि निस्सन्देह तीव्र हो जाती और उन्हें व्यर्थही इस प्रकार अपने बुद्धि को कष्ट देना न पड़ता क्योंकि तब उन्हें यह ठीक जान पड़ता कि जैसे इजिकियेल और दानिएल ने कारागार में रह कर अपने मित्रों को संकेत से पत्र लिखा है वैसेही उन्हें भी करना पड़ता ॥

ये पुस्तकें और सभों से भिन्न हैं क्योंकि केवल यही स्वप्न इत्यादि की हालों से भरी हैं इस विभिन्नता का कारण यही है कि इस के लेखक लोग दूसरे देश में नजरबंद की नाईं कैद थे अतएव उन्हें छोटी बातें भी तथा अपने राज्यनैतिक अभिप्राय और विचार साङ्केतिक शब्दों और बचनों द्वारा अपने मित्रों के पास पहुँचाना पड़ता था ॥

वे लोग स्वप्न वा स्वप्नाभास * देखने का बहाना करते थे क्योंकि स्पष्ट भाषा में पत्र लिखना उनके प्राण को भय में डालना था जानना चाहिये कि जिन पुरुषों को वे पत्र लिखे गये थे वे उन्हें समझते थे और दूसरे तद्भिन्न लोगों के समझने के लिये वे न थे परन्तु ये परिश्रमी टीकाकार और याजक लोग

* स्वप्नाभास—Visions.

तब से अपने बुद्धि को उस बात के समझने के लिये परिश्रम दे रहे हैं जो उनके समझने के लिये नहीं लिखी गई और जिससे उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं। इज़किये़ल और दानियेल दोनों प्रथम बेर की चढ़ाई में कैद करके बेबिलन् को भेजे गये अर्थात् ज़िडीकियाह के समय की द्वितीय गिरफ्तारी के नौ वर्ष पूर्व। यहूदी लोग उस समय भी बहुत थे और उनका बल यरूसलम में अधिक था, यह स्वभाविक बात है कि जो मनुष्य इज़ीकियेल और दानियेल सरीखी अवस्था में पड़े होंगे वे अवश्य अपने बचन तथा अपने देश के छुटकारे के विषय में विचारते होंगे। अतएव यह पूर्णतया सङ्गत है कि जिन स्वप्न और स्वप्नाभासों के वृत्तान्तों से ये पुस्तकें भरी हैं वह सब उनके तत्समय के पत्र व्यवहार करने की गुप्त रीतें और गुप्त सांकेतिक चिन्ह हैं—यदि यह नहीं है तो फिर ये किस्से, कहानियां, क्या व्यर्थ बकवाद हैं? या कारागार का गाढ़ समय व्यतीत करने के लिये हवा के किले हैं?।

इज़िकियेल अपना ग्रन्थ विशेष जीवधारीयों * के स्वप्न तथा चक्र के भीतर चक्र के स्वप्नाभास से आरम्भ करता है, जिसको वह लिखता है कि उसने बँधुवाई के भूमि में किबार नदी के पास देखा था। क्या यह सङ्गत नहीं है कि इन जीवधारियों से उसका लक्ष यरूसलम के मन्दिर से था जहां इन

* जीवधारी=Cherubims.

जीवधारियों की मूर्तियां बनी थीं और चक्र के अन्दर चक्र में स्पष्ट राजनैतिक अभिप्राय है अर्थात् यरूसलम के छुटकारे की युक्ति का विचार; इस पुस्तक के अन्तिम भाग में वह अपने तईं यरूसलम तथा मन्दिर में पहुँचा हुआ समझा है तब वह पुनः किबार नदी का वृत्तान्त लिखकर यों कहता है (४३ वें पर्व की ३ री आयत) कि यह अन्तिम स्वप्नाभास वा दर्शन किबार नदी के स्वप्नाभास वा दर्शन की नाईं था जिससे यह अभिप्राय है कि ये सब बनों के स्वप्न और दर्शन यरूसलम के छुटकारे के विषय में हैं बस और कुछ नहीं ।

इन सब लेखों को घुमा फिराकर भविष्यवाणी का अर्थ निकालना वा सैकड़ों हज़ारों वर्ष के उपरान्त के हाल और समयों के बातों का लक्ष कहना बाइबिल के टीकाकारों और याजकों की बुद्धिमत्ता है ॥

इस से भारी कोई दूसरी मूर्खता नहीं हो सकती कि ये हिज़किएल और दानियेल नामक दोनों पुरुष अपने देश को गँवाय तथा अपने मित्रों और अपने आत्मीय सम्बन्धियों को शत्रुओं के हाथ में सौंप कर और स्वयं भी बंधुवाई और भय में होकर २।३ हज़ार वर्ष पूर्व अ[illegible]य के [illegible] के वृत्तान्तों को बैठ कर विचारें इस की [illegible] पड़ता है कि वे अपने [illegible] रते हों सो यही [illegible] न पड़ता है ॥

यदि लेखक का यह अभिप्राय था तो निस्सन्देह अत्यन्त कल्पना उसे ऐसे आलंकारिक भाषा और शब्दों में लिखनी पड़ी परन्तु यदि इन ग्रन्थों के लेख को कोई भविष्यवाणी कहे तो यह सरासर झूठ है। देखो हिज़क़िएल के २९ वें पर्व की ११ वीं आयत में मिस्र के बारे में यों लिखा है कि "किसी मनुष्य और किसी पशु का पांव उस में से न जायगा और चालीस बरस लौं उस में कोई न बसेगा" यह ऐसी बात है कि आज तक मिस्र के विषय में कभी नहीं हुई अतएव यह प्रत्यक्ष झूठ है और उन्हीं पुस्तकों की नाईं है जिन्की समालोचना पहले हम कर चुके हैं अब इस विषय को तो यहीं पर समाप्त करते हैं ॥

इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में हम यूनस तथा ह्वेल मछली के किस्से का हाल लिख चुके हैं यदि यह किस्सा वास्तव में लोगों को विश्वास दिलाने के लिये लिखा गया है तो अत्यन्त हास्यास्पद और मूर्खतामय है इस किस्से से तो बाइबिल के भविष्यवक्ताओं का द्वेष तथा ईर्षासम्पन्न हृदय का भाव प्रगट होता है।

प्रथम तो इस किस्से से यह झलकता है कि यूनस ऐसा भविष्यवक्ता था जिसने ईश्वर की आज्ञोलंघन की थी और जिस काम के लिये वह ईश्वर द्वारा नियत किया गया था उसे

छोड़ कर जेनिटाइल * लोगों के जहाज पर जो जोप्पा नगर से टार्सेस नगर को जाता था चढ़ कर भागा मानो वह इस तुच्छ उपाय से अपने तईं किसी ऐसे दृढ़ किले में समझता था जहां ईश्वर उसे नहीं पा सकता था। भई वाह यह तो इस भविष्यवक्ता के विलक्षण बुद्धि का नमूना है खैर जब वह जहाज पर चढ़ के भागा तो समुद्र में बड़ा भारी तूफान आया और जहाज डूबने लगा तब जहाज के कर्मचारी और खलासियों ने यह समझ कर कि हमारे जहाज में कोई पापी वा ईश्वर का अपराधी घुस आया है उसे चिट्ठी डाल कर पकड़ना विचारा; सो चिट्ठी यूनस के नाम निकली। परन्तु इस के पूर्व वे विचारे जहाज को हलका करने के लिये अपना माल असबाब कपड़ा लत्ता सब समुद्र में फेंक चुके थे परन्तु यूनस किसी महामूर्खाधिराज की नाईं जहाज के किसी कोने में घुर्राटें ले रहा था। जब चिट्ठी द्वारा यूनसही ईश्वर का अपराधी ठहरा तो उन्होंने उसे जगाकर पूछा कि तू कौन है और कहां जाना है उसने कहा कि मैं इब्रानी हूं; इससे उस किस्से ने यह अर्थ निकाल लिया कि उसने अपने तईं अपराधी स्वीकार किया। परन्तु उन जिनेटाइल लोगों ने उसे उसी क्षण निर्दय हो कर मार डालने की अपेक्षा (जैसे बाइबिल के भ-

---

* यहूदी लोग अपने से भिन्न जातियों को काफर मूर्तिपूजक और जेनिटाइल्स कहते थे।

विष्यवक्ताओं ने किसी जेनेटाइल के प्रति किया होता अथ
जैसे सामुयेल ने आग का राजा से किया वा जैसे मूसा ने अ
नेक स्त्री और बच्चों की जान ली थी) उन्होंने अपनी जान प
खेल कर उसको बचाने का उद्योग किया; क्योंकि उस
लिखा है कि तौ भी (अर्थात् यूनस के यहूदी ओ विदेशी और
उन के समग्र माल असबाब के हानि तथा आपत्ति के कारण
होने पर भी) इन लोगों ने जहाज को किनारे लाने का बहुत
हीं उद्योग किया परन्तु आंधी बड़ी तेज थी और समुद्र की
लहरैं ऊँची उठ रही थीं अतएव उन का परिश्रम व्यर्थ हुआ
इतने पर भी वे किसी प्रकार यूनस को बध करना वा कष्ट
देना नहीं चाहते थे क्योंकि उस में लिखा है कि उन्हों
चिल्ला कर प्रभु से यों कहा "ऐ प्रभु हम तेरी विनती करते हैं
कि तू हमें इस मनुष्य के लिये डूबने न दे और निरपराधी
का रुधिर हमारे गले न डाल क्योंकि हे प्रभु जैसा तुझे भाया
तैसा तू ने किया" अर्थात् उन का यह अभिप्राय था कि
यूनस के नाम की चिट्ठी निकलने पर भी वे उसे अपराधी
समझने में राजी न थे कि कदाचित् वह निरपराधी हो परन्तु
वे समझते थे कि उसके नाम की चिट्ठी जो निकली है सो
ईश्वर की इच्छा है या उसे ऐसाही भाया है। इस प्रार्थना के
ढंग से जान पड़ता है कि जिनेटाइल लोग एक ईश्वर को मा-
नते थे और वे लोग यहूदियों के कथनानुसार मूर्तिपूजक नहीं

जान पड़ते । अस्तु इतने पर भी आंधी शान्त न हुई और जहाज के डूबने का भय बढ़ता ही गया सो उन्होंने लाचार हो कर यूनस को समुद्र में डाल दिया और उसे एक मछली ने पकड़ा और जीवित ही निगल गई ।

अब यूनस ने मछली के पेट में जाकर आंधी से रक्षा पाई तब लिखा है कि उसने वहां ईश्वर से प्रार्थनाकी—और यह प्रार्थना सुफल हुई तब उस किस्से में लिखा है (हम यहां बाइबिलही के शब्द ज्यों के त्यों लिखते है) कि " तब ईश्वर ने मछली से कहा और उसने यूनसको सूखी पृथिवी पर उगल दिया" ।

अब यूनस को दूसरी आज्ञा निनवा में जाने की हुई सो वह गया और अब वह शिक्षकरूपेण वहां पहुंचा । पाठक लोग यह समझते होंगे कि इतने कष्ट उठाने पर और फिर इस प्रकार आश्चर्यमय बचाव पर यूनस ने दूसरों पर करुणा और दया करना सीख लिया होगा परन्तु यहां तो इसका विपरीत हो यह पुरुष निनवे नगर में यह डंका देता हुआ पहुंचा कि चालीस दिन के उपरान्त निनवे का नगर नाश हो जायगा ।

अब हम के आगे इस धर्मज्ञ और कृपासागर महर्षि के कर्तव्यता का स्वच्छ और दयासम्पन्न हृदय [illegible] है सो किसी प्रकार शैतानी योग्यता से कम नहीं है ।

जब यूनस इस प्रकार उस नगर में भविष्यवाणी का डंका बजाचुका तो उस किस्से में लिखा है कि इस पुरुष ने उस नगर के पूरब ओर कहीं जाके डेरा किया, क्यों ? क्या अपने आश्चर्यमय बचाव पर एकान्त में जाकर ईश्वर का धन्यवाद करने के लिये ? नहीं, नहीं वहतो वहां बैठ कर अत्यन्त उत्कंठा के साथ यह आसरा देख रहा था कि, कब ईश्वर उस नगर को नाश करता है । अस्तु तदुपरान्त लिखा है कि नीनवानिवासीयों ने पश्चात्ताप कर के अपनी चाल सुधारली सो ईश्वर ने बाइबिल के लेखानुसार इस बात का, अत्यन्त पश्चात्ताप किया और जो कुछ दण्ड उसने उन नगरनिवासियों के लिये बिचारा था न दिया, तब तो यूनस अत्यंतही अप्रसन्न हो कर परम क्रोधांध हुआ । उसका हठीला हृदय यही विचारता था कि नीनवा नगर जड़ मूल से नाश हो और उस के निवासी युवा वृद्ध स्त्री बाल बच्चे पर्य्यंत सभी विनष्ट हों जिस में उस की भविष्यवाणी व्यर्थ न जाय निम्नलिखित वृतान्त से इस भविष्यवक्ता का और भी द्वेष प्रगट होता है। बाइबिल में लिखा है कि उसी रात ईश्वर ने उस्के डेरे के पास एक वृक्ष ऊगाया जिससे यूनस को सूर्य की तीव्र किरणों से रक्षा प्राप्त हुई परन्तु उस के दूसरे ही दिन वह सूख गया।

तब तो इस भविष्यवक्ता के क्रोध की सीमा न रही यहां लों कि वह आत्महत्त्या करने पर प्रस्तुत हुआ और यह

बोला कि "इस जीने से तो मरना भला है"। तब एक प्रकार का वादविवाद ईश्वर और इस भविष्यवक्ता में हुआ। ईश्वर ने कहा "क्या इस वृक्ष के लिये तेरा क्रोध करना उचित है ? और यूनस ने कहा "कि हां मेरा तो मरना भी उचित है" तब ईश्वर ने कहा तुझे इस वृक्ष पर जिसके लिये तूने कुछ भी परिश्रम न किया और न उगाया तुझे दया हुई यह एकही रात में ऊगा और एक ही रात में सूख गया; तो क्या मै इस वृहत् नीनवे के नगर को जिस में साठ हज़ार ऐसे निवासियों से अधिक हैं जो अपने दहने और बायें हाथ तक नहीं जानते नाश कर डालूं, इस किस्से में कटाक्ष और शिक्षा दोनो हैं। कटाक्षरूपेण तो यह बात बाइबिल के समग्र भविष्यवक्ता ओं के चाल चलन तथा इस सत्य पुस्तक के उन समग्र आज्ञाओं पर जिन से स्त्री पुरुष लड़के बाले मारे गये आक्षेप है जिनसे बाइबिल की समग्र पुस्तकें भरी हैं जैसे नूह का प्रलय, सदूम और अमूरा नगरों का नाश, कनानियों का उत्पाटन तथा दूधपीते बच्चों और गर्भिणी स्त्रीयोंकी हत्या इत्यादि—क्योंकि जब ईश्वर एक बेर यह कहता है कि जहां साठ हजार से भी अधिक ऐसे निवासी हैं कि दहने और बाएं हाथ को नहीं पहचान सकते (अर्थात् बच्चे) उन्हें मै कैसे नाश करूं, तो यह कैसे सम्भव हो सकता है कि बाइबिल की लिखी हुई वे सब हत्यायें जिन्हें हम पहले कह चुके है ईश्वर की आज्ञा से हुई

हो; क्योंकि ऐसा करने से तो ईश्वर का किसी कार्य विशेष पर पश्चात्ताप करेगा ॥

शिक्षा इस में इस प्रकार निकलती है कि ज्यों २ मनुष्य बुराई की भविष्यवाणी करता है त्यों २ वह लोगों की बुराई अधिक चाहता है वह अपनी भविष्यवाणी की यथार्थता के घमंड में अपना दिल पत्थर सा कर लेता है और अत्यन्त सन्तोष वा अप्रसन्नता के साथ अपनी भविष्यवाणी की सत्यता वा असत्यता की राह देखता है इत्यादि—सो यह पुस्तक भी भविष्यवक्ताओं पर आक्षेप के साथ समाप्त होती है इतना तो यूनस के पुस्तक का वर्णन हो चुका ॥

बाइबिल के काव्यबद्ध भाग के लिये जो भविष्यवाणी कहलाती है हम प्रथम भाग में लिख चुके हैं, तथा हमने इस भाग में भी लिखा है कि बाइबिल में कवि के लिये भविष्यवक्ता शब्द है और इन कवियों की विलक्षण उपमा और उत्प्रेक्षा इत्यादि को क्रिश्चियन लोगों ने भविष्यवाणी मान ली है जो उन लेखक विचारों का स्वप्न में भी विचार न था। ये लोग भिन्न २ आयतों को अपनी इच्छानुसार अर्थ लगा कर अपने श्रोताओं को सुना देते थे और उतने पर भी यही कहते हैं कि हम बाइबिल समझते हैं ! धन्य इनकी बाइबिल और धन्य इन की बुद्धि ॥

अब कुछ वे पुस्तकें परीक्षा करने से रह गई हैं जो छोटे

भविष्यवक्ताओं की पुस्तक कहलाती है परन्तु जब हम बड़े भविष्यवक्ताओं का चरित्रोद्घाटन कर चुके हैं तो इन छोटे बिचारों को कष्ट देना कुछ आवश्यक नहीं है, अतएव इन बिचारे कीट पतङ्गों को चुपचाप घास में सोने दो।

अब हम समग्र बाइबिल रूपी जङ्गल का परिभ्रमण कर चुके और इस के सब वृक्षों को जड़ समेत काट कर युक्ति और प्रमाण रूपी कुल्हाड़ी से गिरा चुके। यह लो ये कटे कटाये वृक्ष क्रिस्तानों के सामने पड़े है यदि उनसे हो सके तो पुनः जमावें। जमाना तो क्या है कदाचित ये उन्हें धरती में खोस के खड़ा कर दें परन्तु अब ये ऊगनेवाले नहीं। इस भाग को तो हम यहीं समाप्त करते हैं और इस ग्रन्थ के तीसरे भाग में नये नियम की पुस्तकों की परीक्षा आरम्भ करते हैं।

इति॥

—※—

नवीन पुस्तकें।

रामरसायन बालकाण्ड (अर्थात पद्माकर कविकृत र

मीकि रामायण का भाषा छन्दोबद्ध अनुवाद

सुखशर्वरी उपन्यास

रुक्मिणी परिणय नाटक

कमलिनी उपन्यास

हम्मीर हठ

चेतचन्द्रिका (अलंकार का ग्रन्थ)

बलभद्र कृत नखसिख

बसन्तमंजरी

छन्दप्रभाकर

बिहारीसतसई (हरि कविकृत टीका सहित)

भाषाभूषण (अलंकार का ग्रन्थ)

ग्वाल कविकृत षट ऋतु वर्णन

ईसाईमतखंडन ।

तीसरा भाग ।

अर्थात्

जिस में खीष्टमतावलम्बियों के धर्म की यथार्थ दशा झलकाई गई है, और जिसे बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारत-जीवन ने उनलोगों के हित के लिये जो इस धर्म के पूर्णतया भेदू नहीं हैं प्रकाश किया है ।

यह पुस्तक बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारतजीवन के पास बनारस में मिलेगी ।

काशी ।

राजराजेश्वरी प्रेस में छापा गया ।

सन् १८८४ ई० ।

प्रथम बार

मूल्य ⁄)

ईसाईमतखण्डन।

—○*○—

तीसरा खण्ड।

नया निमम।

ईसाई लोग कहते हैं कि नये नियम की नेह पुराने नियम की भविष्यवाणीयों पर बनी है, यदि यह ठीक है तो जोहमारा पूर्व खंड में भविष्यवाणी की हो चुकी है सो इस खंड में इस की भी होगी इस में कोई आश्चर्य नहीं कि किसी स्त्री को विवाह होनेके पूर्व गर्भ होजाय और उसका पुत्र निरपराध मारा जाय अतएव हम यह विश्वास करते हैं कि मरियम नाम्नी कोई स्त्री अथवा यूसफ और मसीह नामक पुरुष संसार में हुये हों। यहां हमको इस पर विचार नहीं करना है कि ये लोग वस्तुतः थे या नहीं कदाचित् हों भी तो फिरक्या? सम्भव है कि ये लोग अथवा इनके जैसे लोग हुये हों परन्तु हमारा तो यहां तर्क ही दूसरा है हमारा झगड़ा तो नये नियम के लिखित मसीह के किस्से और तज्जनित ईसाइयों की शिक्षा पर है। यह किस्सा तो—अत्यन्तही लज्जास्पद है। इस में यह वृत्तान्त दिया है कि कोई युवती स्त्री विवाह होने के पूर्व अर्थात् जब उसकी मंगनी हो गई थी किसी पवित्र आत्मा द्वारा गर्भिणी की गई और इस पर यह विलक्षण बहाना (लूकाके प्रथम पर्व की

३९ वीं आयत में) लिखा है कि "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और अतिमहान परमेश्वर के सामर्थ्य की छाया तुझ पर होगी"। इतने पर भी अर्थात् इन सब घटनाओं पर विचार न कर के यूसफ ने पीछे से उसके साथ विवाह कर लिया और उसे पत्नी करके माना और उस पूर्व मूल पवित्र आत्मा का मानो प्रतिपक्षी हुआ। यहतो उस किस्सेका तात्पर्य स्पष्ट वचनों में हुआ सो जब इस की यह दशा है तो संसार भरमें विरला ही कोई पुरुष होगा जिसे इस वृत्तान्त पर लज्जा न आतीहो *।

विश्वसनीय वातों में निर्लज्ज वृत्तान्तों के आनेसे उसका झूठाहोना प्रतीत होता है क्योंकि इश्वर के गम्भीर विश्वास में ऐसी २ तुच्छ बातें न आना चाहियें जिस में हास्य और लज्जा उत्पन्न हो।

मसीहविषयक ऐतिहासिक वृत्तान्त जो नये नियम में दिया है बहुत कम है अर्थात् केवल दोही वर्ष का हाल दिया है और ये सब बातें एकही देश में हुई हैं अतएव जितनी विभिन्नता और समय स्थानादिक का विरोध पुराने नियम में मिलता है उतना नये नियम में संभव नहीं। पुराने नियम के सामने नया नियम मानो एकही अंक का प्रहसन है जिस में

* मसीहकी कुआरी माता मरियम के औरभी कई लड़की और लड़के थे मत्तीके १३ वें पर्व की ५५ वीं और ५६ वीं आयत देखो।

प्रहसन पात्र को ऐक्य के विरोध का विशेष भय नहीं रहता तो भी इस में कई एक ऐसे विरोधी वृत्तान्त है जिन से मसीह का यह किस्सा बिल्कुल झूठ प्रमाणित होता है ।

यह बात अत्यन्त निश्चित है कि किसी किस्से के किसी भाग का मिलान कई लेखकों के एकसां होने पर भी वह किस्सा सत्य नहीं हो सकता क्योंकि उस किस्से का कदाचित् वह भाग सत्य हो परन्तु इस से समग्र किस्से की सत्यता कैसे प्रमाणित हो सकती है परन्तु यदि इन्हीं वृत्तान्तों के वर्णन में भिन्न २ ग्रन्थकारों के लेखों में विरोध पाया जाय तब तो यह किस्सा निस्सन्देह असत्य ठहरा ।

मसीह का इतिहास ४ पुस्तकों में पाया जाता है जो-मत्ती, मर्कुस लूका और यूहन्ना की लिखी कहलाती हैं। मत्ती के प्रथम पर्वके आरम्भ में मसीह की एक वंशावली दी है; और लूका के ३ रे पर्व में भी मसीहकी वंशावली लिखी है । यदि इन दोनों का मिलान ठीक हो तो भी इस वंशावली के सत्यहोने का सन्देह निवृत्त नहीहोता कदाचित यह बनावटीहो —परन्तु इनके विरोधहोनेसे इसकी असत्यता पूर्णतया प्रमाणित होती है॥ यदि मत्ती का कहना सचहै तो लूकाका कहना असत्य है और जो यदि लूका का कहना सत्यहै तो मत्तीका कहना असत्य ठहरा परन्तु न तो लूकासे बढ़ कर मत्ती के वि श्वास का प्रमाण है और न मत्ती से बढ़कर लूका का प्रत्य

ता है अतएव इनदोनों के विश्वास करने का कोई प्रमाण नहीं है। सो जब पहलेही वृत्तान्त के वर्णन में इनदोनों की यह दशा है तो आगे चलकर इनके बचन पर क्या विश्वास हो सकता है यहांतो " प्रथमग्रासे मक्षिकापातः " हुआ।

सत्त्य सदा सत्त्यही है विशेषतः यदि इल्हाल्म का विश्वास किया जाय तब तो किसी प्रकार इसके वर्णन में विभिन्नता न होनी चाहिये। अतएव ये " प्रेरितलोग " यातो असत्त्यवादी थे या ये पुस्तकें दूसरों की लिखी हैं और उनके नामसे प्रसिद्ध कर दीगई हैं जैसे हम पुराने नियम के पुस्तकों का हाल देख चुके हैं। मत्ती की पुस्तक के पहले पर्वकी छठवीं आयत में दाऊद से वंशावली आरम्भ हुई और मसीहके पिता तथा मरीयम के पति से लेकर मसीह पर्यंत लिखी है इस प्रकार २८पीढ़ी दी है। लूका के पुस्तक में भी इसीप्रकार दाऊद से लेकर मसीह तक ४३ पीढ़ी में वंशावली है इसके अतिरिक्त केवल दाउद और यूसफ दोही नाम तो दोनों वंशावली में मिलान खाते हैं हम पाठकों के समझने और मिलान करने के लिये दोनों ग्रंथ के अनुसार वंशावली लिखते हैं।

मत्ती के लेखानुसार वंशावली	लूकाके लेखानुसार वंशावली
१ मसीह	१ मसीह
२ यूसफ (मरियमकापति)	२ यूसफ (मरियमकापति)
३ याकूब	३ हेली
४ मत्तान	४ मत्तात

मत्ती के अनुसार बंशावली	लूका के अनुसार बंशावली
५ इलीअसर	५ लावी
६ इलीहूद	६ मल्की
७ अकीम	७ यन्ना
८ सदुक	८ यूसफ
९ अमूर	९ मत्तियाह
१० इल्यिकीम	१० अमूस
११ अबिहूद	११ नहूम
१२ मरूबाबल	१२ इसली
१३ मियालतियेल	१३ नगाई
१४ यहूयकीन	१४ मात
१५ यूसियाह	१५ यत्तियाह
१६ अमून	१६ समई
१७ मनस्सी	१७ यूसफ
१८ हिसकियाह	१८ यहूदाह
१९ आहस	१९ यूहन्ना
२० यूनाम	२० रेसा
२१ युम्मियाह	२१ सरूबाबल
२२ यहूराम	२२ सियालतियेल
२३ यहूसफत	२३ नेरी
२४ असा	२४ मल्की
२५ अबियाह	२५ अद्दी
२६ रहबिआम	२६ कोसाम
२७ सुलैमान	२७ अल्मोदाम
२८ दाऊद	२८ ईर

लूका के अनुसार वंशावली.

२९ यूसी	३६ यूसफ
३० अलीअसर	३७ यूनान
३१ यूराम	३८ इलीयकीम
३२ मत्तात	३९ मलिया
३३ लावी	४० मैनान
३४ समऊन	४१ नातन
३५ यहूदाह	४२ दाऊद

अब यदि ये मत्ती और लूका नामक पुरुषों ने इस प्रकार आरम्भही से मसीह के इतिहास लिखने में इतना गड़ बड़ किया है तो हम यह पूछते हैं आगे चल कर उनके उन विचित्र लेखों पर विश्वास करने का क्या प्रमाण है ? यदि उन का विश्वास इस साधारण मानुषिक वंशावली पर नहीं होता तो हम लोग उनके इस लेख पर कैसे विश्वास करें कि वह ईश्वर का पुत्र था और पवित्र आत्मा से उत्पन्न हुआ था और यह वृत्तान्त कोई ईश्वरीय दूत उस की माता से एकान्त में कह गया था। जब उन्हों ने एक वंशावली में प्रत्यक्ष गड़बड़ लिखा है तो हम दूसरे वंशावली का कैसे विश्वास करें । जब उसकी मानुषिक और स्वाभाविक वंशावली कल्पित है तो हम क्योंकर यह न विचारें कि उसकी यह स्वर्गीय वंशावली भी कपोलकल्पित रचना है और सब का सब आद्यन्त सत्यतारहित है । क्या कोई बुद्धिमान पुरुष किसी अस्वाभाविक असम्भव कहानी का

धास करके अपनी भविष्य प्रसन्नता को जोखिम में डालेगा ?
। पर विशेषता यह कि इस के रचयिता लोगों की सत्यता
हीं प्रमाणित हो चुकी है क्या यह अतीवोत्तम और पूर्ण-
ा निष्कंटक नहीं है कि हम इस प्रकार असम्भव बुद्धि वि-
द्ध और निर्लज्ज कहानियों के पीछे न दौड़ कर एक सच्चे
विकार ईश्वर का विश्वास करें ?

प्रथम प्रश्न इस नये नियम की पुस्तकों पर यही होता है
कि क्या ये उन्हीं लोगों की लिखी है जिन के नाम से ये प्र-
सिद्ध हैं ? क्योंकि इसी जड़ पर न उन विचित्र बातों का
विश्वास किया जाता है जो इनमें लिखी हैं ?

इस विषय के पक्ष या विरोध में कोई साक्षात प्रमाण
नहीं मिलता अतएव ऐसी अवस्था में अनिश्चयता होती है; और
अनिश्चयता विश्वास का विरोधी है अतएव इन पुस्तकों के
विश्वास का कोई निश्चय नहीं ।

परन्तु इसे जाने दीजिये ये चारों पुस्तकें जो मत्ती, मर्कुस,
लूका और यूहन्ना की लिखी कहलाती हैं यथार्थ में इन की
लिखी नहीं हैं इन चारों पुस्तकों के इतिहास की गड़बड़ अ-
वस्था तथा एक पुस्तक के लिखित वृत्तान्त का दूसरे में न
पाया जाना और एकही विषय पर मत की विभिन्नता इत्यादि
देखने से जाना जाता है कि इन लोगों ने अपनी २ इच्छानु-
सार इस किस्से को इस की घटना के अनेक वर्ष उपरान्त

लिख लिया है यह लेख एकही समय में ऐक्य भाव से रहने वाले लोगों का जैसे कि मसीह के शिष्य कहलाते थे नहं पाया जाता तात्पर्य यह कि जिन लोगों के नाम से ये पुस्तकें प्रसिद्ध हैं उन की लिखी नहीं हैं और इन की भी वही अव स्था है जो हम पुराने नियम के पुस्तकों की अवस्था दिखल चुके हैं।

ईश्वरीय दूत के इस किस्से का जिसे ईसाई लोग कहते हैं कि पवित्र आत्मा से गर्भ हुआ था मर्कूस और यूहन्ना के पुस्तक में नामोल्लेख तक नहीं पाया जाता और मत्ती तथा लूका इसे भिन्न २ रीति से वर्णन करते हैं। मत्ती कहता है कि यह दूत यूसफ को दिखलाई पड़ा और लूका कहता है कि मरियम को दिखलाई पड़ा परन्तु चाहे वह मरियम को दिख-लाई पड़ा हो वा यूसफ को दोनों की गवाही इस विषय में नहीं ली जा सकती। क्योंकि यहां दूसरों की गवाही होनी चाहिये थी और न कि वे आपही अपने गवाह हो जावें यदि आज कल के दिनों में कोई कुमारी कन्या गर्भवती पाई जाने पर कसम खाकर भी यह कहे कि उसे पवित्र आत्मा से गर्भ हो गया है तो क्या कोई उसे विश्वास करेगा? कभी नहीं, तो हम किस प्रकार इसी बात को इस मरीयम नाम्नी कुमारी कन्या के विषय में विश्वास करें जिसे हम ने कभी नहीं देखा और यह भी नहीं जानते कि इस किस्से को कब कहां और

किस्से कहा। यह कैसी आश्चर्यमय और असंगत बात है कि जिस विषय को हम साधारण बात में भी नहीं मान सकते उसी को मुख्य जड़ मान कर इस विलक्षण ईसाई धर्म की रचना हुई है यह विश्वास तो पूर्णतया असंभव और असंगत है।

हेरोदेश राजा का यह किस्सा कि उसने दो वर्ष से छोटे सब लड़कों को अपने राज्य में मरवा डाला केवल मत्तीही के पुस्तक में लिखा है बाकी तीनों पुस्तकों में उस का नामोल्लेख तक नहीं है यदि यह बात सच होवी तो यह वृत्तान्त सब लेखकों को विदित होता और यह कोई ऐसी बात नहीं है कि तीन २ इतिहास लिखनेवाले इसे छोड़ जावें। इस ग्रन्थ का रचयिता लिखता है कि मसीह मारे जाने से बच गया क्योंकि कोई ईश्वरीय दूत यूसफ और मरियम को सावधान कर गया कि वे उसे लेकर मिस्र के देश को भाग जावें परन्तु यह ग्रन्थकार यूहन्ना के लिये जो दो वर्ष से छोटा था कोई उपाय लिखना क्यों भूल गया ! । यूहन्ना विचारा पीछेही छूट गया और मसीह भाग गया परन्तु इतने पर भी यह जीताही बच गया। अब पाठक लोग स्वयं विचारें कि इस किस्से में सत्यता का कितना लेश है ॥

इन चारों ग्रन्थकारों में से किसी दो का लेख इस विषय में शब्दानुसार ठीक नहीं मिलता जो वे कहते हैं कि मसीह के क्रूस पर चढ़ाने के समय लिखा गया था; इस के अनि-

रिफ मरकूस कहता है कि यह पहर दिन चढ़े अर्थात् ९ बजे क्रूस पर खींचा गया और यूहन्ना कहता है कि १२ बजे क्रूस पर चढ़ाया गया अस्तु—

वह लेख जो मसीह के क्रूस पर चढ़ने के समय लिखा गया था इन चारों पुस्तकों में यों है कि—

मत्ती.................यह मसीह यहूदियों का राजा है.

मर्कूस................यहूदियों का राजा.

लूका.................यही यहूदियों का राजा है.

यूहन्ना.................यसू नासरी यहूदियों का राजा.

यद्यपि यह बात अत्यन्त तुच्छ है तौ भी इस से यह स्पष्ट विदित होता है कि इन ग्रन्थों के लेखकलोग (चाहे जो हों) उस समय और उस जगह उपस्थित न थे इन प्रेरित नामक पुरुषों में से केवल १ पुरुष जान पडता है जो कि उपस्थित था। उसका पथरस नाम है, सो जब उसे लोगोंने घरा और कहा कि तु मसीह के साथियों में से है तो (मत्तीके २६ वें पर्वके ७४ वीं आयत में लिखा है) कि "उसने धुत्कार दिया और कसम खा कर कहा कि मैं इस मनुष्य को नहीं जानता" । इतने पर भी ये लोग चाहते हैं कि हम इसी पथरसका विश्वास करें जो उन्हींके लेखानुसार झूठ बोलने का दोषी ठहर चुका। भला हम क्यों और कैसे इस का विश्वास कर सकते हैं !

मसीहके क्रूस पर चढ़ाये जाने के साथही जो कुछ ये लो-

ग हुआ बतलाते हैं उसका भिन्न २ प्रकार से चारों पुस्तकों में वर्णन किया है

मत्ती की पुस्तक में लिखाहै कि दोपहर से तीसरे पहर लों उस समस्त देश में अंधकार छा गया—मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे लों फट्गया—और धरती कांपी—और पर्वत् तड़क गये—कबरें खुलगईं—और बहुत पवित्रलोग जो सोते थे तिनकी लोथें उठीं—और उसके जी उठनेके पीछे कबरों में से निकल के पवित्र नगर में गये और बहुतों को दिखाई दिये । इस प्रकार तो मत्तीने अपनी कलम धर घसीटा है परन्तु दूसरे ग्रन्थकार लोगोंने इतनी हिम्मत नहीं की है ।

मर्कुस के पुस्तक का ग्रन्थकार मृसका हाल लिखते समय भूडोल या पहाडों के फटने या कबरों के खुलने अथवा मुर्दों के जी उठने वा चलने फिरने का कुछ वृत्तान्त नहीं देता है । लूका का ग्रन्थकार भी इन विषयों पर मौन धारण किये हुये है । यूहन्ना के पुस्तक का ग्रन्थकार तो यद्यपि मसीह के क्रूस पर चढाये जाने से लेकर गाड़े जाने पर्यन्त लों छोटे २ हाल भी लिखता है तथापि अन्धकार, मन्दिर का पर्दा, भूकम्प, पर्वत, कब्र या मुर्दे जिन्दों के विषय में कुछ नहीं लिखता है ।

यदि ये बातें सच होतीं और यथार्थ में हुई होतीं और यदि इन के लेखक इन वृत्तान्तों के होने के समय हुये होते

और यदि यथार्थ में ये ४ शिष्य मत्ती, मर्कुस, लूका और यूहन्ना वहां होते तो मेरे इतिहासलेखक की नाईं यह कभी सम्भव न था (विशेषतः उनके इल्हाम पाने पर) कि वे ऐसी भारी बात को लिखने से छोड़ जाते माना हमने कि ये बातें यथार्थ में हुई थीं तो फिर यह कोई ऐसी तुच्छ बात न थी कि तीन २ ग्रन्थकार लोग ऐसी भारी बात को न लिखें। यदि ये कलिरा लोग यथार्थ में मसीह के शिष्य थे और भूकम्प भी हुआ था तो निस्सन्देह यह इस के साक्षी होते क्योंकि वे इस से अनुपस्थित तो होही नहीं सकते फिर कब्रों का खुल जाना और मुर्दों का भी उठना तथा नगर में घूमना तो भूकम्प से भी भारी बात है। भला भूकम्प का होना स्वाभाविक और सम्भव है और इस से कुछ प्रमाणित नहीं होता परन्तु इन कब्रों का खुल जाना तो परम आश्चर्यमय है जो विशेष कर उन के वचनों को प्रमाणित करता॥ यदि यह बात सत्य होती तो कई पर्व के पर्व इस विषय में रंगे गये होते और सभी ग्रन्थकारों ने अपना २ राग छेड़ा होता सो कहीं भी नहीं पाया जाता। विचारने की बात है कि जब उन्होंने अत्यन्त सारहीन और तुच्छ २ बातों का सविशेष वर्णन किया है कि मसीह ने यह कहा और मसीह ने यह कहा तो ऐसी भारी बात को सत्य होने पर लोग कैसे छोड़ देते ? जिसे केवल एक कहीं लेखक ने बड़ी बे परवाही से कलम की घसीट में लिख

मारा है और बाकी लेखकों ने जिसका नामोल्लेख तक भी नहीं किया है ।

झूठ बोल देना अत्यन्त सरल है, परन्तु कहे उपरान्त उस झूठ का निर्वाह करना अत्यन्तही कठिन हो जाता है । मत्ती के ग्रन्थकार ने यह तो हमे बतायाही नहीं कि वे पवित्र लोग जो जी उठे और नगर में गये कौन थे फिर उनका क्या हुआ और किसने २ उन्हें देखा ? ग्रन्थकार की इतनी हिम्मत न पड़ी कि वह लिखता कि हमने उन्हें देखा उसने यह भी न लिखा कि वे नर थे या मादे; नगे ही निकल आये या पांचो कपड़े पहिने थे ! और कपड़े कहां से पाये; या वे पुनः अपने पुराने घरों को गये या नहीं ! और वहां जाकर अपने स्त्री पति, माल असबाब पर दावा किया ? और उनमें कैसा बरताव हुआ ? या उन्होंने अपना माल पाने के लिये और अपने लोगों पर अमानत ख्यानत की अदालत किया या नहीं ? या उन्होंने पृथ्वी पर रह कर पुनः अपना पुराना रोजगार आरम्भ किया ! या वे पुनः मर गये, यां जैसे ही जी कब्रों मे जाकर अपने आप गड़ गये ! इन सब प्रश्नों का क्या उत्तर है !।

परम आश्चर्य की बात है कि इन पवित्र पुरुषों का झुंड का झुंडही जी उठे और किसी को न मालूम हो कि कौन थे और किसने उन्हें देखा तथा उन के विषय में फिर न किसी ने कुछ कहा और न उन्हों ने किसी से बात चीत

की ! यदि वे वेही भविष्यवक्ता लोग होते जो इन वे लेखानुसार भविष्यवाणी कर गये थे तो ये बहुत कुछ बकवाद करते अपनी भविष्यवाणी पर टीका कर गये होते जो कदाचित मूल से भी कठिन होती—यदि ये मूसा, या हारून, जोशुआ सामुयेल या दाऊद होते तो समग्र यरूसलम में एक भी यहूदी न बचता जो ईसाई न हो जाता । यदि वप्तिस्मा देनेवाला यूहन्ना होता या उसी समय के पवित्र लोग होते तो सब कोई उन्हें पहिचान सकता और वे उपदेश देने में इन प्रेरितों से कहीं चढ़ बढ़ गये होते ! परन्तु नहीं इन सब बातों के बदले ये पवित्र लोग यूनस के वृक्ष की नाईं रातही को पैदा हुये और सवेरेही सूख गये—यहां लों तो इस किस्से का गुण वर्णन हुआ ।

और इस के उपरान्त मसीह के पुनः जी उठने का किस्सा चला इस में भी इन लेखकोंका ऐसा परस्पर विरोध पाया जाता है कि जिस से स्पष्ट जान पड़ता है कि उन में से कोई भी उस समय उपस्थित न था ।

मत्ती की पुस्तक में लिखा है कि जब मसीह कब्र में गाड़ा गया तब यहूदियों ने जा कर पिलातूस राजा से प्रार्थना की कि वह कब्र पर पहरा बैठा दे कहीं ऐसा न हो कि उस के शिष्य रात को आकर उस्के लोथ को चुरा ले जायँ, सो पिलातूस राजा ने उन की इस प्रार्थना को स्वीकार करके पहरा

बैठा दिया और कब्र के मुँह पर जो पत्थर ढका था उसपर मोहर करवा दी—परन्तु दूसरे पुस्तकों में इस प्रार्थनापत्र या मोहर या पहरेदारों के विषय में कुछ भी नहीं लिखा है उन के हिसाब से ये सब बातें कुछ भी न थीं। मत्ती तो इस पहले किस्से को और भी बढ़ा ले गया है जैसे हम आगे चलकर लिखेंगे और जिस से इन पुस्तकों की कपोलकल्पना भली प्रकार विदित होगी।

मत्ती की पुस्तक के २८ वें पर्व की पहली आयत में लिखा है कि "विश्राम दिन के पीछे अठवारे के पहले दिन जब पौ फटने लगी मरियम मिगदाली और दूसरी मरियम कब्रको देखने आई"। मर्कुस कहता है कि यह सूर्य निकले की बात है और यूहन्ना लिखता है कि उस समय अँधेरा था। लूका लिखता है कि मरियम मिगदाली और यूहनह और याकूब की माता मरियम तथा और कई एक स्त्रीयां कब्र देखने गईं; और यूहन्ना कहता है कि केवल मरियम मगदाली ही गई थी। वाह ! क्या खूब गवाही मिलती है ! ये सब लेखक मरियम मगदाली को खूब जानते हैं यह बड़ी प्रसिद्ध जान पड़ती है जो सभोंने इसका नाम लिख मारा है।

आगे चलके दूसरी आयत में मत्ती लिखता है कि "देखो बड़ा भूँइडोल हुआ क्योंकि प्रभुका दूत स्वर्गसे उतरा और आके उस पत्थर को कब्रके मुँह पर से ढुलका के उस पर बैठ-

थी ! यदि ये वेही भविष्यवक्ता लोग होते जो इन लेखानुसार भविष्यवाणी कर गये थे तो ये बहुत कुछ बढ़कर करते अपनी भविष्यवाणी पर टीका कर गये होते जो कदाचि मूल से भी कठिन होती—यदि ये मूसा, या हारून, जोशुअ सामुयेल या दाऊद होते तो समग्र यरूसलम में एक भी यहू न बचता जो ईसाई न हो जाता । यदि बप्तिस्मा देनेवाल यूहन्ना होता या उसी समय के पवित्र लोग होते तो सब को उन्हें पहिचान सकता और वे उपदेश देने में इन प्रेरितों कहीं चढ़ बढ़ गये होते ! परन्तु नहीं इन सब बातों के बदले ये पवित्र लोग यूनस के वृक्ष की नाईं रातही को पैदा हुये और सबेरेही सूख गये—यहां लों तो इस किस्से का गुण वर्णन हुआ ।

और इस के उपरान्त मसीह के पुनः जी उठने का किस्सा चला इस में भी इन लेखकोंका ऐसा परस्पर विरोध पाया जाता है कि जिस से स्पष्ट जान पड़ता है कि उन में से कोई भी उस समय उपस्थित न थां ।

मत्ती की पुस्तक में लिखा है कि जब मसीह कब्र में गाड़ा गया तब यहूदियों ने जा कर पिलातूस राजा से प्रार्थना की कि वह कब्र पर पहरा बैठा दे कहीं ऐसा न हो कि उस के शिष्य रात को आकर उसके लोथ को चुरा ले जायँ, सो पिलातूस राजा ने उन की इस प्रार्थना को स्वीकार करके पहरा

बैठा दिया और कब्र के मुँह पर जो पत्थर ढका था उसपर मोहर करवा दी—परन्तु दूसरे पुस्तकों में इस प्रार्थनापत्र या मोहर या पहरेदारों के विषय में कुछ भी नहीं लिखा है उन के हिसाब से ये सब बातें कुछ भी न थीं। मत्ती तो इस पहले किस्से को और भी बढ़ा ले गया है जैसे हम आगे चलकर लिखेंगे और जिस से इन पुस्तकों की कपोलकल्पना भली प्रकार विदित होगी।

मत्ती की पुस्तक के २८ वें पर्व की पहली आयत में लिखा है कि "विश्राम दिन के पीछे अठवारे के पहले दिन जब पौ फटने लगी मरियम मिगदाली और दूसरी मरियम कब्रको देखने आई"। मर्कुस कहता है कि यह सूर्य निकले की बात है और यूहन्ना लिखता है कि उस समय अँधेरा था। लूका लिखता है कि मरियम मिगदाली और यूहनह और याकूब की माता मरियम तथा और कई एक स्त्रीयां कब्र देखने गई; और यूहन्ना कहता है कि केवल मरियम मगदाली ही गई थी। वाह ! क्या खूब गवाही मिलती है ! ये सब लेखक मरियम मगदाली को खूब जानते हैं यह स्त्री प्रसिद्ध जान पड़ती है जो सभोंने इसका नाम लिख मारा है।

आगे चलके दूसरी आयत में मत्ती लिखता है कि "देखो बड़ा भुँइडोल हुआ क्योंकि प्रभुका दूत स्वर्गसे उतरा और आके उस पत्थर को कब्रके मुँह पर से ढुलका के उस पर बैठ-

था" । परन्तु दूसरी पुस्तकों में भूडोल और ईश्वर के दूतका पत्थर ढुलकाने और उसके बैठनेके विषय में कहीं कुछ नहीं लिखा है; सो उनके हिसाब से कोई दूत बैठा न था । मर्कूस कहता है कि यह दूत दहने हाथ की ओर कब्र के भीतर बैठा था । लूका लिखता है कि दो दूत थे और दोनों खड़े थे, यूहन्ना कहता है कि दोनों बैठे थे एक सिहाने और एक पैर की तरफ ।

मत्ती कहता है कि कब्रके बाहर जो दूत पत्थर पर बैठा था उसने दोनों मरियम से कहा कि मसीह जी उठा सो वे झट पट लौट गईं । मर्कूस कहता है जब उन स्त्रीयों ने पत्थर लुड़का हुआ देखा तो आश्चर्य में हुईं और कब्र में गईं सो कब्र के अंदर दाहनी तर्फ जो दूत बैठा था उसने उन्हें यह हाल कहा । लूका कहता है कि दोनों खड़े दूतों ने कहा; और यूहन्ना कहता है कि स्वयं मसीह ने मरियम मगदाली से कहा और वे कब्र में नहीं गईं परन्तु झुक कर देखती थीं। यदि इन चारो पुस्तकों के ग्रन्थकर्ता लोगों ने किसी न्यायालय में जाकर इस प्रकार परस्पर विरोधमय साक्षी दी होती तो कदाचित् इस अपराध में उन का कान काट लिया गया होता और छः छः महीने के लिये जेलखाने भेज दिये गये होते और यह दण्ड उनके लिये कुछ अनुचित भी न था । खेद का विषय है कि इतने पर भी यह साक्षी मानीजाती है और येही

पुस्तकें संसार भर में यह कही जाती हैं कि ईश्वर के इलहाम और आज्ञा से लिखी गई हैं।

मत्ती की पुस्तक का लेखक इस वृत्तान्त के उपरान्त एक ऐसा हाल लिखता है जो किसी दूसरी पुस्तक में नहीं पाया जाता और जिस के विषय में हम पहले कह चुके हैं कि आगे लिखेंगे।

यह लिखता है कि तब (अर्थात् पत्थर पर बैठे हुये दूत और स्त्रीयों के वार्तालाप के अनन्तर) देखो उन दूतों में से (अर्थात् जो रक्षाके निमित्त कब्र पर नियत किये गये थे) कितनों ने नगर में आकर प्रधान याजकों को सब समाचार सुनाया तब उन्होंने प्राचीनों के संग इकट्ठे होके परामर्श किया और उन सिपाहियों को बहुत रुपये देके कहा कि "कहियो रात को जब हम सो गये थे तब उस के शिष्य आके उसे चुराले गये। और यदि यह अध्यक्ष के कानलों पहुँचे तो हम उसे समझा के तुम्हें बचालेंगे" सो उन्होंने रुपये लेकर जैसे सिखाये गये थे वैसाही किया और इस बात की चर्चा आजलों यहूदियों में है।

इस आजलों लेखसे यह सिद्ध होताहै कि यह मत्ती की पुस्तक मत्ती नामक पुरुष की लिखी नहीं है और जिस समय का जिनबातों का वृत्तान्त इस में दिया है उनकी घटना के बहुत दिन उपरान्त इस की रचना हुई है क्योंकि इस लेख से यह स्पष्ट सूचित होता है कि उक्त घटनाओं और लेखक

के समय में बहुत काल का अन्तर जान पड़ता है। अपने समय के घटित वृत्तान्तों का वर्णन इस प्रकार के शब्दों में करना असंगत होगा अतएव इस लेखका तात्पर्य तभी ठीक खुलता है जब हम कई पीढ़ियों का अन्तर बीच में विचारें क्योंकि इस प्रकार के बोलचाल या लेख से बहुत प्राचीन समय का चित्त में ज्ञान होता है।

इस किस्से की मूर्खता भी देखने ही योग्य है क्योंकि इस से प्रतीत होता है कि मत्ती की पुस्तक का लिखनेवाला कोई महा मूर्ख था। वह ऐसा वृत्तान्त लिखता है जिसकी संभावना में स्वतः विरोध पाया जाता है क्योंकि जिन पहरुओं का यह कथन है कि हमारी निद्राकी असावधानता में मसीह का शरीर चोरी गया और हम निद्रामुग्ध होने के कारण चोर को पकड़ न सके; पर साथ ही यह भी विचार मन में होता है कि उसी निद्रा और सोनेके कारण वे कदापि यह कह नहीं सकते कि कैसे और कौन उसे चुरा ले गया;—इतने पर भी लेखक ने इन पहरुओं से यह कहलवाया है कि मसीह के शिष्य उसे चुराले गये यदि कोई पुरुष किसी काम किये जाने की तथा कार्यकर्ता और कार्य किये जाने की रीति की साक्षी देवे और यह भी कहे कि मैं उस समय गाढ़ निद्रा में था तो क्या उस की साक्षी विश्वासयोग्य होगी; हां ऐसी साक्षी ईसाइयों के नये और पुराने नियम में हो सकती

है परन्तु जहां सत्यता की आवश्यकता है वहां ऐसी साक्षियों से काम नहीं चल सकता ॥

अब हम इन पुस्तकों के उस भाग की परीक्षा करते हैं जहां इस कल्पित जी उठने के उपरान्त मसीह के (कल्पित) दिखाई देने का वृत्तान्त दिया है ।

मत्ती की पुस्तक का लिखनेवाला २८ वें पर्व की ७ वीं आयत में कहता है कि उस दूतने जो कब्र के पत्थर पर बैठा था दोनों मरीयम से यह कहा "देखो मसीह तुम से आगे गलील को गया है वहां तुम उसे देखोगे; देखो मैं ने तुम से कहा है" और यही लेखक ८ वीं औ ९ वीं आयत में यही बात दूत के कहने के उपरान्त मसीह द्वारा उन स्त्रीयों को कहलाता है सो वे उसी क्षण यह सब हाल उस के शिष्यों से कहने के लिये उसी क्षण दौड़ गईं और १६ वीं आयत में लिखा है कि "तब वे ग्यारह शिष्य गलील में उस पहाड़ पर जो यसू ने उन्हें ठहराया था गये और उसे देख कर दण्डवत् की" ॥

परन्तु यूहन्ना की पुस्तक का लेखक कुछ दूसराही वृत्तान्त सुनाता है वह अपने २० वें पर्व की १९ वीं आयत में लिखता है "फिर उसी दिन (अर्थात् जिस दिन मसीह जी उठा) जो अठवारे का पहिला था सांझ के समय में जब उस स्थान के द्वार जहां शिष्य लोग इकट्ठे थे यहूदियों के डर से बंद थे

तब यमू आया और उन के बीच में खड़ा हो के उनसे कहा तुम को कल्याण"।

मत्ती के लेखानुसार ये ग्यारह शिष्य मसीह के नियत स्थान तथा पर्वत पर मिलने के लिये गलील को जाते थे और उसी समय यूहन्ना के लेखानुसार ये लोग यहूदियों के मारे कहीं एकान्त में एकत्रित हुये थे जो पहले से नि था।

लूका का ग्रन्थकार जो लेख लिखता है उस से और के लेख से विशेष विरोध पाया जाता है। लूका स्पष्ट लिख कि जिस दिन मसीह जी उठा उसी दिन संध्या समय कमेटी यरूसलम में हुई थी और ग्यारहो शिष्य वहां थे- के २४ वें पर्व की १३ वीं ३३ वीं आयत देखो ॥

अब यह कदापि सम्भव नहीं है कि इन पुस्तकों के खक इन ग्यारह शिष्यों में से हों; हां यदि हम यह मा कि वे जान बूझ कर झूठ बोले हैं तो सम्भव हो सकता क्योंकि यदि मत्ती के वृत्तान्तानुसार ये ग्यारह शिष्य म से भेंट करने के लिये तन्निर्दिष्ट पर्वत पर गलील प्रदेश में तो इन ग्यारहों में से दो तो लूका और यूहन्ना हुये पर लू का ग्रन्थकार स्पष्ट कहता है और यूहन्ना भी यही बतल है कि यह कमेटी उसी दिन यरूसलम में हुई; फिर यदि लू और यूहन्ना के अनुसार ये ग्यारहो शिष्य यरूसलम में एक

हुए थे तो मत्ती भी अवश्य यहां ठहरता तो फिर मत्ती का यह लिखना कैसे संगत हो सकता है कि ग्यारहों शिष्य गलील देश के पर्वत को गये; इस प्रकार के परस्पर विरोधी लेख से इन ग्रन्थकारों तथाच ग्रन्थों की असत्यता स्वयं प्रगट होती है॥

मर्कूस का ग्रन्थकार गलील की कमेटी का हाल कुछ नहीं लिखता परन्तु वह सोलहवें पर्व की बारहवीं आयत में यह लिखता है कि मसीह उन में से (अर्थात् ११ शिष्यों में से) दो को जो कि गांव को चले जाते थे दूसरे रूप में दिखाई दिया उन्हों ने जाकर औरों को कह दिया पर, उन्हों ने उन की भी प्रतीति न की"। लूका भी एक ऐसी कहानी कहता है कि जिस में इस कपोलकल्पित जी उठने वाले दिन मसीह संध्या तक फँसा रहा जिस से गलील के पर्वत के जाने का वृत्तान्त बिल्कुलही उड़ जाता है। वह लिखता है कि इन में से दो (परन्तु कौन दो कुछ नहीं मालूम) उसी दिन इम्माऊस नाम एक गांव को जो यरूसलम से साठ स्तादियुस (साढ़े सात कोस) पर था जाते थे और उन्हें मसीह भेष बदले हुआ दिखाई दिया जिसे उन लोगोंने न पहचाना वह उन लोगों के साथ संध्या तक रहा और उन के साथ रोटी खाई तब उन के आंखों के सामने गायब हो गया और उसी दिन संध्या समय यरूसलम में जहां वे ग्यारहों इकट्ठे थे फिर दिखाई दिया।

यह कैसा परस्पर विरोधी लेख है कि जिस ये लोग मसीह का कपोलकल्पित जी उठना कहते हैं; केवल एकही बात में तो इन लेखकों का मिलान पाया जाता है अर्थात् सब के सब उस का जी उठना छिपे २ बतलाते हैं क्योंकि चाहे गलील के पर्वतों की कन्दराओं में हो और चाहे यरूसलम के किसी ताले बन्द मकान में हो दोनोंही प्रकार से छिपाव ठहरा। अब विचारना चाहिये कि इस छिपाव का क्या कारण है प्रथम तो यह कि यदि छिपाव न रखते तो लोगों को मसीह के जी उठने का क्या प्रमाण देते दूसरे यह कि यदि प्रकाशरूप से उस का जी उठना कहते तो सब लोग उन्हें झूठा कहते अतएव उन विचारों को लाचार होकर इसे गुप्तही रखना पड़ा।

यह जो हाल लिखा है कि ५०० लोगों ने मसीह को देखा सो पौलूस कहता है और न कि वे ५०० मनुष्य जिन्हों ने स्वयं देखा था सो यह केवल एक मनुष्य की साक्षि है सो भी उस मनुष्य की जो उन्हीं के लेखानुसार इस बात के होने के समय रत्ती भर विश्वास नहीं करता था, माना हम ने कि कोरिन्तियों के १५ वें पर्व का लेखक पौलूस है जहां इन ५०० मनुष्यों का हाल दिया है तो यह साक्षि भी उस मनुष्य की साक्षि की नाईं है जो न्यायालय में क़सम खाकर उस विषय पर साक्षी देवे जिसे वह पहले कसम खाकर झूठ कह चुका है। प्रत्येक मनुष्य को अधिकार है कि ज्यों २ वह प्रमाण और

बुद्धि की बातें पावें त्यों २ वह अपनी राय बदल सकता है परन्तु यह अधिकार वास्तविक और प्रत्यक्ष बातों में नहीं हो सकता ॥

अब हम मसीह के स्वर्गारोहण के विषय में लिखते हैं इस में तो यहूदियों का भय किसी प्रकार नहीं हो सकता; यह ऐसी बात है कि यदि सत्य होती तो सब से अधिक प्रमाण योग्य ठहरती कि जिस से इन शिष्यों के बचन पर लोगों का अधिक विश्वास जमता । जो बातें एकान्त में हुई हैं चाहे पर्वत की कन्दरा में हुई हों चाहे यरूसलम के तालेबन्द मकानों में हुई हों यदि सत्य भी होतीं तथापि सर्व साधारण में विश्वासयोग्य न थीं अतएव अत्यन्त आवश्यक था कि इस अन्तिम वृत्तान्त की सत्यता में सन्देह का झगड़ा न लगा रहता अर्थात् जैसा हम प्रथम भाग में कह चुके हैं कि इस की सत्यता ऐसी होनी चाहिये थी जैसे दोपहर का सूर्य, भला और नहीं तो इतना तो सर्वसाधारण को विदित होता कि जैसे उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना प्रसिद्ध है; अस्तु जाने दीजिये—

पहिले तो मत्ती का ग्रन्थकार इस विषय में चूं भी नहीं करता और न यूहन्ना का लेखक इस का नाम लेता है । जब यह दशा है तो भला क्या कभी सम्भव है कि यदि यह बात सत्य होती तो क्या ये ग्रन्थकार लोग जो तुच्छ से भी तुच्छ बातों को लिखने आये हैं इस को लिखना छोड़ देते !

मर्कुस का समाचार इस पर साधारण रीति से यत्न लीन गया है मानो यह इस छुट्टे लिखने को लिखते २ थक गया हो या उसे निद्रा से ग्लानि हो गई हो। यही हाल लूका के समाचार का भी है, और इन दोनों में भी इस बात का पता मन नहीं आता कि यह अन्तिम वियोग किस स्थान पर हुआ।

मर्कुस की पुस्तक में लिखा है कि जब वे ग्यारहो शिष्य भोजन कर रहे थे तो मसीह उन्हें दिखाई दिया (इस से उस का अभिप्राय यरूसलम की सभा का है जहां कि ग्यारहो इकट्ठे हुये थे) सब जो जो बातें सभा में हुईथी उनका वृत्तान्त यह लिखता है और इसके उपरान्त हीं कहता है (जैसे कोई पाठशाला का छात्र कोई छोटी मोटी कहानी समाप्त करता हो) कि "सो तब प्रभू उन से बातचीत करने के उपरान्त स्वर्ग में चला गया और ईश्वर के दहने हाथ बैठगया" परन्तु लूका का लिखनेवाला कहता है कि वह बैतुनिया नगर में से स्वर्गको चढ़गया जैसा लिखा है कि "फिर वह (अर्थात मसीह) उन्हें वहां से बैतनिआं शहर से बाहर लेगया और उनसे वहां अलग हुआ और स्वर्गको चढ़ गया ऐसी २ व्यर्थ की बातों को विश्वास करना मानो ईश्वर पर अविश्वास करना है।

अब हम चारों पुस्तको की समालोचना कर चुके जो

मसी, मर्यम यूसफ और यूहन्ना की लिखी कहानी हैं और जब हम विचारते हैं कि सूली पर चढ़ाये जाने से स्वर्ग चढ़ जाने पर्यन्त केवल तीनही चार दिन का अन्तर है और ये सब बातें यरूशलम ही के आस पास हुई हैं तो हम देखते हैं कि कदाचित् ऐसी कोई दूसरी कहानी न मिलेगी जिस में इतनी अज्ञता विरोध और असत्यबातें पाई जाती हों जैसी कि इन पुस्तकों में लिखी हैं जब हमने इस ग्रन्थका प्रथम भाग लिखना प्रारम्भ किया था तो हमें यह आशा न थी और न यह ध्यान ही था कि इतनी ग़लतियां इन पुस्तकों में पाई जावेंगी उस समय मेरे * पास बाइबिल या नया नियम देखने को न था और न कहीं जल्दी में मिल सकता था इसका हेतु यह था कि मुझे अपनी बीमारी के कारण अपने जीवनका ही भय हो रहा था और मेरी यह इच्छा थी कि मै अपने पीछे कुछ न कुछ इस विषय में छोड़ जाऊं अतएव जो कुछ शीघ्रता में बनपड़ा था थोड़ही में लिख दिया था उस समय जो २ बातें लिखी गईं थीं केवल स्मरण से लिखी थीं परन्तु वे सब सही हैं और जो कुछ उन में लिखा है सब सत्त्य और चिरस्थापित सिद्ध बातें है अर्थात पुराना और नया नियम दोनों असत्त्य है तथा न मसीह को ईश्वर का पुत्र मानना उसकी क्रोधशान्ति के लिये मसीह का मरना और इस विचित्र विश्वास पर मुक्ति पाना सब ऐसी बातें है जो ईश्वर की ईश्वरता में बट्टा लगाती है।

* मेरे—Thomas Paine.

सत्य धर्म तो केवल एक ईश्वर का मानना और उस के अनुकरण में भलाई और दूसरों पर कृपा करना है यही मेरा विश्वास है ईश्वर मुझे इस विश्वास पर दृढ़ रक्खे।

हां इष्ट विषय तो रहाही जाता है। यद्यपि इतने दिन बीतने के उपरान्त यह निश्चय करना असम्भव सा हो रहा है कि इन चारों पुस्तकों के वास्तविक रचयिता कौन थे (केवल इसी से इनकी सत्यता पर सन्देह होना उपयुक्त है) तथापि इस बात को प्रमाणित करना कुछ भी कठिन नहीं है कि जिन लोगों के नाम से ये पुस्तकै प्रसिद्ध हैं वास्तव में इन्की लिखी नहीं हैं इन पुस्तकों के विरोध से ये दो बातै प्रगट होती है।

प्रथम तो यह कि जिन विषयों का उल्लेख ये ग्रन्थकार लोग करते है उन विषयों के ये लोग नेत्रसाक्षी वा कर्णसाक्षी नहीं हो सकते नहीं तो ऐसा विरोध न पाया जाता—इस से यह विदित होता है कि ये बातें मसीह के शिष्यों की लिखी नहीं हैं क्योंकि वे लोग तो सदा मसीह के साथ थे।

. दूसरे यह कि इन ग्रन्थकार लोगों ने (ईश्वर जाने जो हों) मिल कर ये बातें नहीं लिखी हैं परन्तु प्रत्येक लेखक ने अपना २ लेख स्वतंत्र लिखा है। यदि कोई कहे कि उन लोगों ने ईश्वरीय प्रेरणा से ये बातें लिखी हैं तो भला ईश्वरीय प्रेरणा में यह विरोध कैसे हो सकता है ? यदि ये चारो मनुष्य इन विषयों के नेत्रसाक्षी या कर्णसाक्षी हुए होते तो बिना

आपम की मिलावट के उन का लेख समय और स्थान के विषय में तो अवश्य मेल खाता यदि वे लोग इस विषय को स्वयं जानते होते तो ऐसा कभी नहीं होता कि एकही बात को एक मनुष्य तो पर्वत में हुआ बताता और दूसरा किसी नगर के मकान में, अथवा एक पुरुष कहता कि यह बात सूर्योदय पर हुई और दूसरा कहता कि रातही को हुई क्योंकि जहां कहीं हो जिस समय यह बात हुई होगी तो इन सभों को एकसां ज्ञान होना चाहिये ।

तो अब यह विचारना चाहिये कि यह ईसामसीह के जी उठने का किस्सा कैसे बन गया। प्रायः ऐसा होता है कि पहिले कोई मनुष्य किसी झूठी बात को साधारण रीति से प्रचार करता है और होते २ यह बात ऐसी पक्की हो जाती है कि उस पर लोग सचा सही विश्वास करने लगते हैं। मसीह के जी उठने और दिखाई देने का किस्सा ठीक वैसाही है जैसे प्रायः भोलेभाले लोग भूत पिशाच के विषय में कहा करते हैं अथवा जब कोई निरपराधी मनुष्य मारा जाता है या जब किसी की अपमृत्यु होती है । प्रथम किसी मनुष्य ने किसी भूत प्रेत का हाल कहा दूसरे ने उस पर कुछ और बांधा तीसरे ने कुछ और कहाया चौथे ने उस पर नया प्रपंच खड़ा किया योंही होते हवाते जितनी मुंह उतनी बातें हो जाती हैं बस ऐसेही मसीह का किस्सा भी है जो इन पुस्तकों में लिखा है ।

मसीह के पुनः दिखलाई देने के किस्से में कुछ तो स्वाभाविक और कुछ असम्भव बातों की खिचड़ी है। लिखा है कि जब द्वार बन्द था तो वह अचानचक अन्दर चला आया और फिर लोप हो गया और फिर दिखाई दिया; तब उसे भूख लगी, और उसने व्यालू किया। परन्तु जैसे इस प्रकार के किस्से कहनेवाले पूर्णतया साङ्गोपाङ्ग निर्वाह नहीं कर सकते वही दशा यहां भी है। ये ग्रन्थकार कहते हैं कि जब मसीह जी उठा तो वह अपने पुराने कपड़े कब्र में छोड़ गया परन्तु यह कहीं भी नहीं लिखते कि जब वह पुनः दिखलाई दिया तो कौन से कपड़े पहने था या नङ्गा घूमता था और यह भी नहीं लिखते कि जब वह स्वर्ग में चढ़ गया तो उन कपड़ों को उसनें क्या किया, उतार कर फेंक दिया या उन्हें पहनेहीं चला गया। इलियाह भविष्यवक्ता के समय उन लोगों ने चालाकी करके उसका कुर्ता फेंकवा दिया है भला वह आग के रथ में जिस पर इन के कथनानुसार इलियाह स्वर्ग पर चढ़ गया था क्यों न जल गया परन्तु ऐसी अवस्था में सदा मान लेनेहीं से काम चलता है सो हम लोग भी मान लें कि उसने कोई इन्द्रजाल का खेल किया होगा।

जो लोग क्रिस्तानों का इतिहास पूरा २ नहीं जानते वे कदाचित् समझते होंगे कि नये नियम की पुस्तकें मसीह के समय से अर्थात् ठीक उसकी मृत्यु के उपरान्त से चली आती

है परन्तु यहां तो बातही दूसरी है मसीह की मृत्यु के ३०० वर्ष उपरान्त लों नये नियम का तो नामोल्लेख तक भी न था।

ये पुस्तकें जो मत्ती, मर्कुस, लूका और यूहन्ना की लिखी कहलाती हैं किस समय दृष्टिगोचर हुईं वह ठीक पता नहीं लगता है उन पुस्तकों में कोई ऐसा लेख नहीं है जिन में उन के लिखे जाने का सन् या ग्रन्थकर्त्ता का नाम दिया हो। यही पुस्तकें यदि किसी दूसरे के नाम से प्रसिद्ध होतीं तो भी किसी प्रकार की दिक्कत न पड़ती क्योंकि जिन के नाम से वे प्रसिद्ध हैं उन का उन से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं पाया जाता जो वे उन्हीं के नाम से कहलावें। किसी गिरजे वा किसी बड़े भारी क्रिस्तानों के अधिष्ठाता के पास असली कापी नहीं है और यदि होती भी तो वे उस के असलीयत का क्या प्रमाण दे सकते हैं। जिस समय ये पुस्तकें लिखी गईं उस समय छापे की कल न थी अतएव इन की प्रसिद्धी का मार्ग केवल हाथ की लिखी हुई कापियोंही से था जिसे लेखक जहां चाहे वहां बदल सकता था और उसे असली कापी बतला सकता था भला क्या हम यह विचारलें कि यह बात उस परमबुद्धिमान् जगदीश्वर की बुद्धि के संगत हो सकती है कि वह अपनी इच्छा और आज्ञाको मनुष्यों पर ऐसी तुच्छरीति से विदित करे कि जिसे जो चाहे सो बदल डाले और जिसका कुछ पता न लगे। हम लोगतो ईश्वरके बनाये हुये एक साधरण

घास के टुकड़े को भी न बना सकते हैं न बदल सकते हैं न किसी प्रकार उस्की ठीक नकल उतार सकते हैं तो भला जिन वाक्यों को मनुष्य अपनी इच्छानुसार बदल सकता है वा बना सकता है यह कैसे उसका वचन कहलाने के योग्य है ?।

मसीह का जो समय वे लोग बतलाते हैं उसके साढ़े तीन सौ वर्ष उपरान्त ऐसे २ अनेक छोटे मोटे ग्रन्थकार जिन्का हाल हम कह रहे हैं उत्पन्न हुयेथे और उस समय गिरजा विभाग का एक प्रकार अधिकार जमने लगाथा सो उसके अधिकारियों ने एक संग्रह आरम्भ किया जो अब नये नियम के नाम से प्रसिद्ध किया इसेभी उन लोगोंने चुन २ कर आपस के मेल से यह ठहरा लिया कि किसे ईश्वर का वचन कहना चाहिये और किसे नहीं। बस इसी प्रकार इस नये नियम की जड़ हुई है।

इस गिर्जा सम्बन्धीय धर्म नियत करने का मुख्य अभिप्राय अपना अधिकार, आमदनी और रोब जमानेका था अतएव यह बात मन में आती है कि जिन २ लेखों को उन्होंने उस संग्रह में से अत्यन्त कौतुकसम्पन्न और विचित्र देखा उन्हें तो ईश्वर का वचन कह कर अपनी अनुमती दी—अतएव प्रमाण के स्थानापन्न उन लोगों की अनुमति ठहरी और सत्यता के स्थान में कपोलकल्पना हुई।

उस समय जो लोग अपनेतईं ईसाई कहते थे उन में भी

बड़ा झगड़ा उठा था न कि केवल शिक्षा के विषय पर परन्तु पुस्तकों की सत्यता और प्रमाणित होने पर भी। मसीह से ४०० वर्ष उपरान्त St. Augustine और नामकदो प्रसिद्ध पुरुषों में जो झगड़ा हुआ था उस में Fauste कहता था कि "जो पुस्तकें मत्ती, मर्कूस, लूका यूहन्ना के नाम से प्रसिद्ध हैं मसीह के शिष्यों के बहुत दिन उपरान्त लिखी गई हैं।

इन्के लेखक न जाने कौन हैं परन्तु यह जान पड़ता है कि इन ग्रन्थों के रचयिताओं ने इन्हें मसीह के शिष्यों के नाम से इसलिये प्रसिद्ध किया है कि वे भली प्रकार जानते थे कि सर्व साधारण लोग उनकी लिखी हुई बातोंका विश्वास कदापि न करेंगे; और इनग्रन्थों में ऐसे परस्पर विरोधी बातों का वर्णन भरा हुआ है कि किसी प्रकार न सम्भव होता है न मेल खाता है" आगे चलकर यही मनुष्य उन लोगोंको जो इञ्जील के पक्ष में हैं और उसे ईश्वर का वचन मानते हैं यों कहता है कि "इसप्रकार तुम्हारे पूर्वजों ने हमारे प्रभूके ग्रन्थ में बहुत सी बातें मिला दी है जो यद्यपि उनके नाम से प्रसिद्ध हैं तथापि उस्की शिक्षा से नहीं मिलते। इस में कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि हम पहिलेर प्रमाणित कर चुके है कि ये बातें न तो स्वयं उस्की लिखी हैं और न उसके शिष्यों की, परन्तु उसका अधिक भाग किस्से कहानी और सुनी सुनी बातों पर स्थापित है जिसे न जाने किसने इस प्रकार रचा है कि कुछ भी मेल नहीं

गाथा पर तौभी ये हमारे प्रभुके शिष्यों के नाम से छपी हैं सो उनमें इन झूठे लेखकों ने अपनी झूठ और झूठी बातें भरदी हैं।

इन दोनों लेखों से पाठकों को विदित होगा कि नये नियम की सत्यता और प्रामाणिकता पर तभी सन्देह होगया था जब इन्हें ईश्वर का वचन क्रिस्तानों ने ठहराया था। परन्तु इन्होंने अपने मतलब के आगे सब प्रकार आँखें बंद करली थीं। इन्होंने चमत्कारिक घटनाओं का ढेर जमा दिया और लोग चाहे चित्त से विश्वास न करें परन्तु औरों के दिखाने के लिये कहने लगे कि हम विश्वास करते हैं परन्तु अब वह समय आया है कि उनके एक भी चमत्कारिक घटना की दाल नहीं गलती और दिन पर दिन क्रिस्तानी धर्म का विश्वास उठताही जाता है।

जब हम यह विचारते हैं कि मसीह के होने और इस नये नियम के बनने में ३०० वर्ष से अधिक का अन्तर है तो बिना ऐतिहासिक प्रमाण के यह मन में आता है कि इन के लेखकी सत्यता सान्दिग्ध है।

अब हम यह विचारते है कि मत्ती, मर्कुस, लूका और यूहन्ना के लेखकों ने अपना नाम ग्रन्थकर्ताओं में क्यों नहीं लिखा, तो इसका कारण यही जान पड़ता है कि वे लोग अपनी मूर्खता से भली प्रकार अभिज्ञ थे और यह जानते थे कि यदि हम अपना नाम प्रकाश करेंगे तो सर्वधाधारण में ऐसी

सूर्वता की बातों से हमारा बड़ा उपहास होगा । फिर इन ग्रन्थों में कोई ऐसी बुद्धिमत्ता की बात नहीं है कि सर्वसाधारण लोग न बना सकें । महाकवि कालिदास की सी कविता करना कालिदासही का काम था अथवा यूकलिड सरीखा ग्रन्थ बनाना युकलिडही का काम था अतएव उन से छोटी बुद्धि का आदमी ऐसे भारी कामों में हाथ लगाकर पार नहीं पा सकता परन्तु नये नियम को तो विलक्षण दशा है जो साधारण बुद्धिक मनुष्य भी ऐसी हजारों बातें बना सकता है। बाइबिल के लिखकों की बुद्धि प्राय: उतनीही है कि जैसे दो दो चार अथवा तीन दूनी ६, बस इतनीही विद्या होने से चाहे जो मनुष्य नये नियम सरीखा ग्रन्थ बना सकता है ।

जिस किसी मनुष्य को जितना अधिक मौका जाल करने का मिलता है उतनीही अधिक उसकी इच्छा जाल करने की ओर झुकती है जैसे यदि कोई मनुष्य कालिदास सरीखी कविता कर सकता है तो उसे कालिदास के नाम से कोई ग्रन्थ बनाने में कोई लाभ नहीं है क्योंकि वह उसे अपने नाम से बना सकता है यदि उस में इतनी बुद्धि नहीं है तो वह कृतकार्य नहीं हो सकता परन्तु नये नियम सरीखे पुस्तक बनाने में जालसाजी की अधिक सम्भावना होती है क्योंकि यदि कोई भी लेखक अपने नाम से उन वृत्तान्तों को लिखता जिन्हें हुए अनेक सौ वर्ष बीत चुके हों तो कोई भी उसका विश्वास नहीं

करता अतएव उसने अपना नाम नहीं दिया, परन्तु उसकी खोज यहां कौन करता है, क्रिस्तानों को तो अपना मतलब साधने से काम ठहरा सच झूठ के निर्णय से क्या प्रयोजन।

हम पहिले कह चुके हैं कि उन दिनों में और प्रायः अब भी मूर्ख और भोलेभाले लोगों में यह किस्सा कहा जाता है कि ऊंचे से गिरे, पानी में डूबे, आग से जले या फांसी दिये हुये अथवा और किसी अपमृत्यु से मरे हुये लोग भूत हो कर घूमा फिरा करते हैं अतएव मसीह का इस प्रकार जी उठने का विश्वास अथवा भूत प्रेतों के दिखलाई देने और दूसरे के शरीरों में पैठने का विश्वास लोगों को सहज में हो गया हो तो क्या आश्चर्य है; इसी बे-सिर पैर की बात पर मत्ती मर्कूस, लूका और यूहन्ना नामक चारो ग्रन्थ की जड़ है। प्रत्येक लेखक ने इस किस्से को या इसके वृत्तान्त को जैसा सुना वैसा लिख दिया और मसीह के किसी शिष्य का नाम जिसे लोगों की ज़ुबानी सुना कि उस समय उपस्थित था ग्रन्थकर्ता नें रख दिया। बस इसी प्रकार तो इन परस्पर विरोधी बातों के लेख का पता लगता है क्योंकि यदि ऐसा नहीं है तो फिर इन चारों ग्रन्थों में झूठी और फ़रेब की बातों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

यह भी स्पष्ट झलकता है कि ये ग्रन्थ किसी अर्द्ध-यहूदी और अर्द्ध-क्रिस्तान के लिखे हैं यह बात इस से विदित होती

है कि उनमें प्रायः भविष्यवक्ताओं और उस प्रसिद्ध नरहत्याकारी मूसा का उल्लेख दिया है, क्रिस्तानों ने इन उल्लेख रूपी छिद्रों को यों रफू किया है कि पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पूर्ति नये नियम में होती है योंहीं जिन २ लेखों पर ज़रा भी गुंजाइश पाई कि उन्हें पूर्ति बतला दी जैसे कितने चोर सैकड़ों टूटी फूटी सड़ी पुरानी तालियों का गुच्छा इसलिये अपने पास रखते है कि लोगों के तालों में किसी प्रकार लगा कर खींच खाच खोल लेवें। हौवा औ सर्प का किस्सा जो मूर्खता से भरा है भविष्यवाणी मान लिया गया है। इस में यह लिखा है कि वह तेरे सिर को कुचलेगा और वह तेरी अँगुली काटेगा भला इसमें कौन सी नई बात है मनुष्य सर्प को सिर में मारताही है क्योंकि उसी भाग में चोट लगने से वह बेकाम हो जाता है और सर्प प्राय. एड़ी में काटताही है क्योंकि अधिक ऊंचे जल्दी नहीं पहुँच सकता। एसैयाह ने आहज़ राजा के प्रति जो झूठा वाक्य कहा था कि एक कुआरी गर्भवती होगी और बेटा जनेगी * वह मसीह के उत्पत्ति के विषय में खींच खाच कर मान लिया गया है। यूनस

* हम इस पुस्तक के दूसरे भाग में भली प्रकार दिखला चुके हैं कि एसैयाह ने ये बचन आहज़ के प्रति इसलिये कहे थे कि यह वृत्तान्त उस बात का चिन्ह होगा कि तू अपने शत्रुओं से लड़ाई में न हारेगा पर अन्त में वह बिचारा हार ही गया।

और होन्ज का क़िस्सा भी एक प्रकार का रूपक या चिन्ह माना गया है। यूनस तो मसीह हुआ और उस की कब्र हेल मछली; क्योंकि मत्ती के १२ वें पर्व की ४० वीं आयत में उन्होंने स्वयं मसीह के मुंह से यह बात उसी के विषय में कहलाई है कि "जैसे यूनस तीन रात और तीन दिन मछली के पेट में रहा वैसेही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के भीतर रहेगा" परन्तु उन्हीं के लेखानुसार मसीह केवल एक दिन और दो रात कब्र में रहा अर्थात् लगभग ३६ घंटे के और न कि ७२ घंटे; अर्थात् शुक्रवार की रात शनीचर का दिन और शनीचर के रात भर क्योंकि यह उन्हीं का लेख है कि अतवार को सूर्य निकलने के पूर्वही जी उठा परन्तु जैसे उत्पति की पुस्तक में सांप का काटना और लात खाने का वृत्तान्त है अथवा एशैयाह के पुस्तक में कुआरी और उसके पुत्र का लेख है वैसीही इसकी दशा भी है यहां तक तो नये नियम के ऐतिहासिक वृत्तान्त और साक्षी के विषय में हुआ अब आगे पौलूस की पत्रियों का हाल सुनिये।

नये नियम में १४ पत्रियां पौलूस की लिखी कहलाती हैं। हम यहां इस बात का विचार नहीं आरम्भ करते कि ये पत्रियां वस्तुतः पौलूस की लिखी हैं या नहीं क्योंकि चाहे जो ...क लेखक हो वह अपनी शिक्षा को प्रमाणों से पुष्ट करता ...। वह इस बात का बहाना नहीं करता कि मै भी मसीह के

केजी उठने और स्वर्ग पर चढ़जाने का साक्षी हूँ किन्तु वह प्रत्यक्ष कहता है कि मैं इन बातों का विश्वास नहीं करता था।

पौलूस के इस किस्से में कोई आश्चर्य और चमत्कारिक बात नहीं है कि डिमास्कस नगर को जाते समय मार्ग में उस पर बिजली गिरपड़ी; उसके प्राण बच गये इसमें भी कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि सैकड़ों मनुष्य इस प्रकार बचगये हैं और इस में भी कोई विचित्र बात नहीं है कि वह तीन दिनतक न कुछ देख सका और न खा पी सका क्योंकि जिनपर बिजली गिरती है उनकी प्रायः यह दशा हो जाती है। जो महचर उसके साथ थे उन्हें इतनी चोट नहीं आई क्योंकि लिखा है कि वेलोग उसे शेष की यात्रा में लेगये; वे लोग भी इस बात का बहाना नहीं करते कि उन्हें किसी का दर्शन हुआ था।

उनके वृत्तान्तानुसार जान पड़ता है कि इस पौलूस नामक पुरुषकी चालचलन में कुछ पागलपन और तीव्रता अधिक थी; जिस उद्दंडता के साथ वह मसीह के शिष्यों को मारने के लिये पीछे पड़ा था उसी उद्दंडता के साथ अन्त में उपदेश भी करता फिरता था। बिजुलीपात से उसके विचार में तो भेद पड़गया परन्तु उसका शरीर ज्योंका त्यों था और चाहे वह यहूदी हो चाहे क्रिश्चियन् परन्तु उसकी उद्दंडता दोनों अ-

वस्था में एक सी थी। ऐसे पुरुषों का शिक्षा के विषय में विशेष प्रमाण नहीं दिया जाता क्योंकि वे परम अवधि को प्राप्त होते हैं, जैसे कार्य में वैसे विश्वास में।

पौलूस लिखता है कि मसीह इसी शरीर से जी उठा; इससे वह मसीह की अमरता प्रतिपादन करता है। किन्तु हम कहते है कि सैकड़ों हजारों मनुष्य इसी कथन से दूसरा अर्थ समझेंगे और उनकी तथा हमारी समझ में यह वृत्तान्त मसीह की अमरता प्रतिपादन नहीं करता प्रत्युत उसकी अमरता के विरूद्ध साक्षी देता है। विचारने की बात है कि यदि कोई मनुष्य इस शरीर से मर गया और फिर उसी शरीर में जी उठा तो यह बात स्पष्ट है कि यह फिर मरेगा। उसी शरीर में जी उठना कुछ पुनः मृत्यु का अवरोधक नहीं हुआ; यदि किसी मनुष्य को किसी कारण बस कुछ देर के लिये मूर्छा आ गई और वह फिर सचेत हो गया, तो क्या इससे यह सिद्ध होता है कि उसे फिर कभी मूर्छा आवेगी ही नहीं, अतएव मसीह की अमरता प्रतिपादन करने के लिये उसके शिष्यों को पुनरुज्जीवन के अतिरिक्त कोई दूसरा बहाना जो ऐसा भद्दा न पड़ता खोजना चाहिये था। ·

इसके अतिरिक्त आशा और पसन्द क्या यही कहती है कि हमारा शरीर ऐसाही रहे? या इससे अधिक सुभीते का शरीर हमें न मिलना चाहिये? हम देखते हैं कि इस संसार में अनेक

जीव ऐसे हैं जिनके शरीर को वह वह शक्तियां प्राप्त है कि जिन्हें पाने को हम तरसते हैं। पक्षियों को देखिये कि जिस दूरी को वे दो चार मिनिट में आसानी से लांघ जाते हैं उतनी दूर चलने में हमें घण्टों लगजाते हैं। मछलियां किस फुर्ती और सुभीते के साथ जल में तैरा करती है। एक साधारण कीड़े ही को देखिये कि जिस कूपमें मनुष्य पड़ा पड़ा मर जावे उसी कूयें की दीवाल से चिपक कर यह कैसे सहज में ऊपर चढ़ आता है, मकड़ी मकान के कोठे पर से किस बहार के साथ कैसी कूदती कूद कर लटकती हुई नीचे उतर आती है। मनुष्य की शारीरिक शक्ति इतनी कम है और उसका यह शरीर ऐसा भारी है कि अनेक आनन्दों से वह बंचित रह जाता है तो भला हम क्योंकर पौलूस के कहने को सत्य मान लें कि मसीह इसी शरीर से जी उठा? जैसा विषय वह लिखता है उसके लिये यह शरीर उपयुक्त नहीं है।

और सब बिचार तो जाने दीजिये, अमरता का अर्थ क्या यही न कि हमको यह ज्ञान रहे कि हम जीवित है तो फिर इस ज्ञान के लिये इसी शरीर और इसी लहू माँस की क्या अवश्यकता है?

हम लोगों का आकार सदा एकसां नहीं रहता और न आज हमारे शरीर में वही लहू माँस है जो १० या २० वर्ष

पहिले था पर यह ज्ञान तो हममें बनाही है की हम हैं या हम जीवित हैं। यहां लों कि हाथ पैर जिनसे मनुष्य के शरीर का प्रायः आधा हिस्सा बना है इस ज्ञान के लिये आवश्यक नही हैं ये भलेही काट लिये जांय पर हमारे "हम हैं" इस ज्ञान में बाधा नही होती, और यदि इनके स्थान में पर इत्यादि लग जाँय तो हम नहीं समझते कि हमारा वह ज्ञान बदल जायगा। तात्पर्य्य कहने का यह कि हमारा यह शरीर, या इसका घटना बढ़ना हमारी आत्मा के "जीवित ज्ञान" से कोई सम्बन्ध नहीं रख सकता आत्मा के जीवित रहने का ज्ञान कुछ उसी शरीर पर निर्भर नहीं है यह बात इस संसार में भी देखी जाती है देखो तितली पहिले किस अवस्था में रहती है प्रथम यह एक प्रकार का कीड़ा रहता है पृथ्वी पर रेंगा करता है फिर कुछ दिनों तक बिना खाये पीये मृतवत् अवस्था में पड़ा रहता है इसके उपरान्त वह खासी सुन्दर बिचित्र तितली होकर उड़ने लगता है। प्रथम की अवस्था उसमें कहींभी कुछ नहीं रहती, सब बातें बदल जाती हैं, उसकी शक्तियां नवीन हो जाती हैं परन्तु यथार्थ में यह तितली वही कीड़ा है। तो जब इस अवस्था मे जीवात्मा के लिये उसी शरीर का रहना आवश्यक नहीं है तो मृत्यु के उपरान्त बिचारे मसीह को कोई उत्तम शरीर देना उचित था।

इस ग्रंथ के प्रथम भाग में हम कह चुके हैं कि ईश्वर

का सचा और यथार्थ वचन यह चराचर संसार है। देखिये अभागे कीड़े से सुन्दर तितली के दशा को प्राप्त होना हमे शिक्षा देता है कि हम शरीर को परित्याग करने के उपरान्त यदिचेत् हमारे काम इस संसार में उत्तम हों तो हम अवश्य कोई उत्तम शरीर पावेंगे।

प्रथम कोरन्थियों के १५ वें पर्व में जो पौलूस कुछ मंत्र सा कह गया है उसका कुछ भी अर्थ नहीं है, जैसे घंटे के टन् टन् का कुछ भी अर्थ नहीं होता उसी प्रकार पौलूस के इस लेख का भी कुछ अर्थ नहीं–पाठक गण स्वयं देखें कि इस का क्या अर्थ है,वह कहता है कि "सब मांस एकही जैसे मांस नही हैं। आदमीयों का मांस एक प्रकारका है, पशुओं का दूसरे प्रकार का और मछलियों का भिन्न प्रकार का तथाच चिड़ियों का भिन्न प्रकार का" फिर क्या ! कुछ नहीं।

इतना तो कोई भी मांस पकानेवाला बावर्ची भी बता सकता है! फिर वह कहता है "आकाशी देहें भी हैं और पार्थिव देहें भी हैं परन्तु आकाशियों का तेज और है और पार्थियों का और है" फिर क्या ! कुछ नहीं। फिर उस ने क्या भेद दिखलाया! फिर वह कहता है "सूर्य्य का तेज और है चन्द्रमा का तेज और है और तारों का तेज और है। फिर क्या ! कुछ नहीं, हां इतना आगे कहता है "क्योंकि तारों का तेज भिन्न भिन्न है".विचारे को यह ज्ञान कहां से होता कि दूरी के

कारण भी तेज में विभिन्नता होती है। वाह! और यह भी उसे कह देना था कि चन्द्रमा की अपेक्षा सूर्य अधिक तेज चमकता है। बस जैसे मदारियों के मंत्र होते है, उसमे विशेष इस में कुछ भी नहीं है, मदारियों का यह ढंग है कि बिचारे विश्वासियों को भुलावा देने के लिये दस बीस वाक्य बे मतलब के जोड़े रहते हैं और उन्हीं को तमाशा देखने वालों के साम्हने बकने लगते है, वे बिचारे घबड़ाते है कि इसका क्या अर्थ है। बस जैसे उन मदारियो का रंग वैसाही इन पांधे पुरोहितों का ढंग—

कहीं कहीं पर पौलूस ने मसीह का पुनरुज्जीवन प्रतिपादन करने के लिये बनस्पतियों का उदाहरण दिखलाया है। वह कहता है कि " अरे मूर्ख जो तू बोता है यदि वह मर न जाय तो कभी न जमे"। बस इसका उत्तर जैसे को तैसा यह हो सकता है कि "अरे मूर्ख पौलस! यदि बोया हुआ बीज मर जावे तो कभी न जमे, क्योंकि जीवित बीजही जमते है"। पर यहां इस रूपक से काम नहीं चल सकता। बीज का उगना कुछ पुनरुज्जीवन नही है किन्तु रूपान्तर में प्रत्यागमन है।

पौलूस तथा दूसरों के पत्रियों की बुनियाद केवल इन्हीं चार ... पर है, मत्ती, मर्कूस, लूका और यूहन्ना। तो जब उन्हीं चारों का विश्वास न रहा तो इनका कौन कहे—जब नेहही ...दी है तो मकान कैसे ठहर सकता है?

अब हम इस नये अहदनामे को भी समाप्त करते हैं; जो जो प्रमाण उन ग्रंथों के बनावटी सिद्ध करने के लिये उल्लेख किये गये हैं वे उन्हीं ग्रंथों से लिये गये हैं । सो ये प्रमाण दोहरी तलवार का काम देते हैं—यदि उन प्रमाणों का कोई विश्वास नहीं तो जिन पुस्तकों मे से वे प्रमाण लिये गये हैं उनका भी कोई विश्वास न ठहरा, और यदि उन प्रमाणों को यथार्थ मानिये तो अब बाइबिल की सत्यता क्यों कर पुष्ट करते हैं !

अब पाठकगण स्वयं इस बात पर विचार कर लेवें कि बाइबिल का लेख कहांतक विश्वास के योग्य है, और उस धर्म्म की क्या दशा है जिसकी जड़ यह बाइबिल है ।

इति

—○•○—

कारण भी तेज में भिन्नता होती है। वाह! और यह भी उसे कह देना था कि चन्द्रमा की अपेक्षा सूर्य अधिक तेज चमकता है। बस जैसे मदारियों के मंत्र होते हैं, उससे विशेष इस में कुछ भी नहीं है, मदारियों का यह ढंग है कि बिचारे विश्वासियों को भुलावा देने के लिये दस बीस वाक्य बे मतलब के जोड़े रहते हैं और उन्हीं को तमाशा देखने वालों के सामने बकने लगते है, वे बिचारे घबड़ाते हैं कि इसका क्या अर्थ है। बस जैसे उन मदारियो का रंग वैसाही इन पांधे पुरोहितों का ढंग—

कहीं कहीं पर पौलूस ने मसीह का पुनरुज्जीवन प्रतिपादन करने के लिये बनस्पतियों का उदाहरण दिखलाया है। वह कहता है कि " अरे मूर्ख जो तू बोता है यदि वह मर न जाय तो कभी न जमे" । बस इसका उत्तर जैसे को तैसा यह हो सकता है कि "अरे मूर्ख पौलस ! यदि बोया हुआ बीज मर जावे तो कभी न जमे, क्योंकि जीवित बीजही जमते है"। पर यहां इस रूपक से काम नहीं चल सकता। बीज का उगना कुछ पुनरुज्जीवन नहीं है किन्तु रूपान्तर में प्रत्यागमन है।

पौलूस तथा दूसरों के पत्रियों की बुनियाद केवल इन्हीं चार ग्रंथों पर है, मत्ती, मर्कूस, लूका और
चारों का विश्वास न रहा तो
बोदी है तो

सूचीपत्र ।